हाथ का अंगूठा भाग्य का दर्पण

आपका अंगूठा भविष्य जानने का प्रमुख साधन
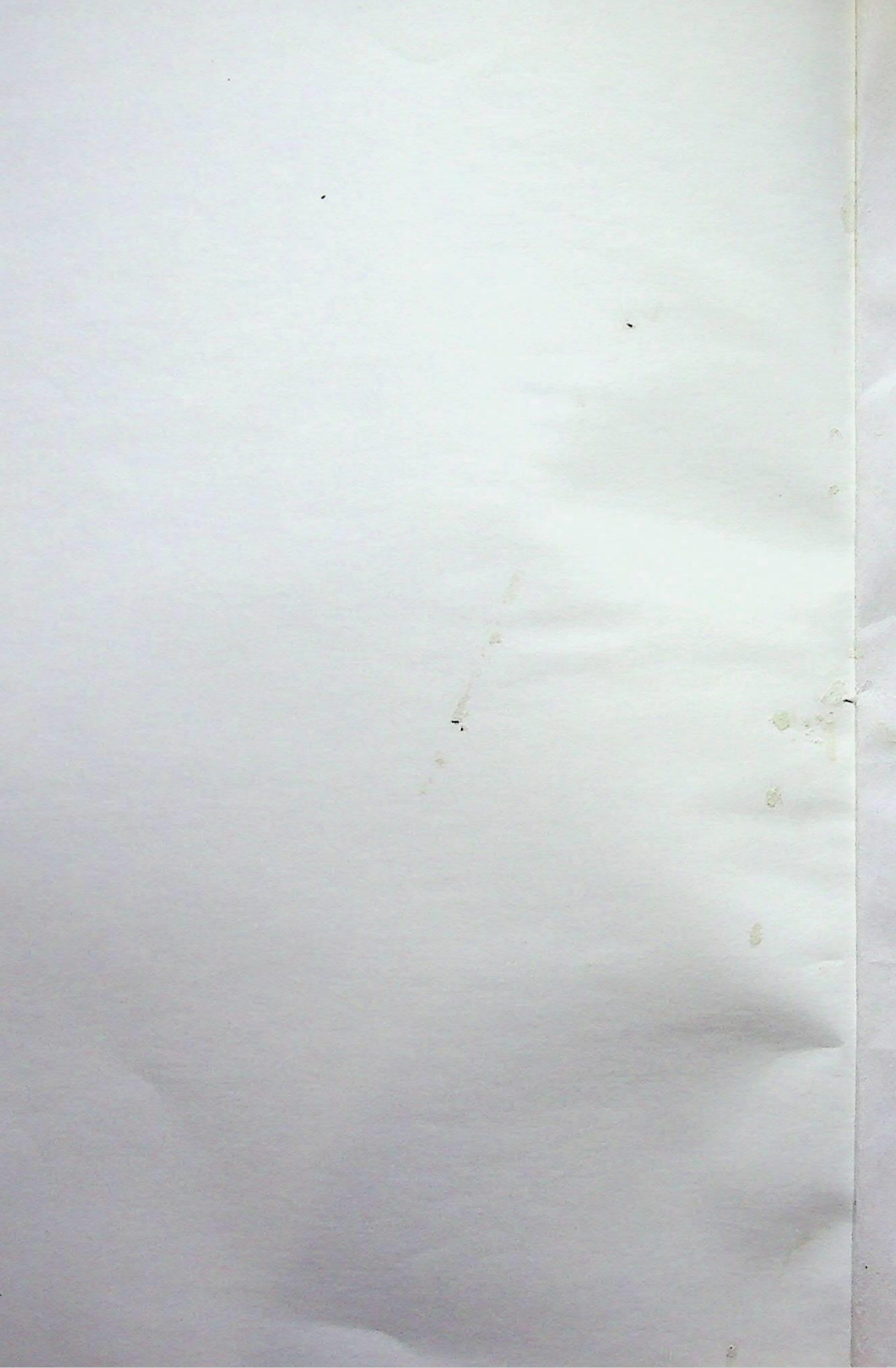
हाथ का अंगूठा : भाग्य का दर्पण
(FUTURE FROM THUMB)

लेखक :

श्रीमाली ब्राह्मण कुलगुरू, ज्योतिष शिरोमणि

दैवज्ञ शिरोमणि डॉ. भोजराज द्विवेदी
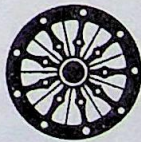
रंजन पब्लिकेशन्स

16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली- 110 002

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
16, अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली-110002
फोन : 23 27 88 35
email : ranjanpublications@rediffmail.com

ISBN No. 81-88230-30-8

संस्करण : 2004

मूल्य : 100/-

शब्द संयोजन : गोयल एन्टरप्राइज़िस

मुद्रक : नागरी प्रिन्टर्स, दिल्ली-32

विषय-सूची

भाग–1

भाग–2

प्रेक्टिल हैण्ड प्रिंट

विषय प्रवेश

अंगूठा चैतन्य शक्ति का प्रधान केन्द्र है। इसका सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। फलतः अंगूठा इच्छा शक्ति का केन्द्र माना जाता है और व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ की रेखाओं का जितना महत्त्व होता है; उससे भी ज्यादा महत्त्व अंगूठे का माना गया है।

वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि अंगूठे के नीचे स्थित नाडी-समूह से शरीर में प्राण-संचार होता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में ब्रह्मतत्व जिज्ञासु शिष्य अपने आचार्य से पूछते हैं कि जीवात्मा का स्वरूप कैसा है ? ब्रह्मवेत्ता आचार्य प्रस्तुत मन्त्र द्वारा आत्मा के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हैं।

'अंगुष्ठमात्रो रवितुल्यरूप, संकल्पाहंकारसमन्वितो यः।

बुद्धेर्गुणेनात्मगुणेन चैव, आराग्रमात्रो ह्यपरोऽपि दृष्टः।।'

श्वेताश्वतरोपनिषद 5/8

प्रस्तुत मन्त्र में 'अंगुष्ठमात्र' शब्द जीवात्मा का वाचक है। वेद मन्त्रों में शब्दार्थ से भावार्थ (गूढ़ार्थ) का महत्त्व ज्यादा है।

उपनिषद् ऋषि ने जीवात्मा को सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों से बंधा हुआ माना है। सामुद्रिक शास्त्र ने भी अंगूठे को तीन भागों में विभक्त किया है। पहला उपरि भाग ब्रह्मा, मध्य विष्णु तथा अंतिम (शुक्र स्थल) शिव से संचालित माना है जो कि क्रमशः सत्त्व, रज और तम के प्रतीकात्मक रूप हैं। ऋषि ने जीवात्मा को सूर्य के समान तथा संकल्प और अहंकार से युक्त कहा है। सूर्य प्राणशक्ति का द्योतक है।

कठोपनिषद् में नचिकेता को जीवन का रहस्य बताते हुए यम कहते हैं कि 'अंगुष्ठमात्र' परिमाण वाला वह परम पुरुष शरीर के मध्य भाग में रहता है तथा वह भूत, भविष्य एवं वर्तमान का शासक है। हम व्यावहारिक रूप में देखते हैं कि मनुष्य का अंगूठा शरीर के मध्य भाग में स्थित है तथा केवल अंगूठे के द्वारा मनुष्य के भूत, भविष्य व वर्तमान को जाना जा सकता है। ऋषि अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहते हैं।

ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य स उ श्वः।।''

'भूत, भविष्य वर्तमान पर शासन करने वाला वह परमतत्व जैसा आज है वैसा ही कल भी रहेगा'। अर्थात् इस सूक्ष्म तत्व की एकरूपता अक्षुण्ण है। यह तत्व न तो कभी घटता-बढ़ता है और न कभी मिटता है। अर्थात् अपरिवर्तनशील एवं अविनाशी है। यहां हम देखते हैं कि मनुष्य के हाथ में दिखाई देने वाली रेखाएं घटती-बढ़ती एवं बनती बिगड़ती रहती हैं। कभी कुछ रेखाएं नई उत्पन्न हो जाती हैं तो कभी पुरानी रेखाएं गायब हो जाती हैं। परन्तु अंगूठे पर बनी हुई सूक्ष्म रेखाएं न बनती हैं न बिगड़ती हैं, न घटती हैं, न बंढ़ती हैं। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त अंगूठे पर बनी सूक्ष्म रेखाएं अपरिवर्तनशील, अविनाशी एवं नित्य एक रस अक्षुण्ण बनी रहती है।

ऐलिजाबेथ पी. होफमैन के अनुसार 'Thumb up' means 'life' and 'thumb down' indicates 'death.' इसी प्रकार रूस के मेडिकल संस्थान के वैज्ञानिक हाथ के अंगूठे की परीक्षा करके बता सकते हैं कि अमुक व्यक्ति को भविष्य में लकवा होगा या नहीं ? और होगा तो कब ? उनका दावा है कि वर्षो बाद होने वाले लकवे रोग के चिह्न या लक्षण शरीर के अन्य किसी भाग में नहीं मिलते, परन्तु अगूंठे में मिल जाते हैं। तथा अंगूठे का ऑपरेशन करके वहाँ की शिराओं को ठीक कर देने से फिर लकवा होने की आशंका नहीं रहती।

प्रसिद्ध हस्तरेखा विशारद् नोबल जेक्विन 'ह्यूमन हैण्ड' में लिखते हैं– 'The human thumb is the living symbol of all the potentialities for good or evil

that exist in the individual and it gives accurate indications of all possibilities.'

वास्तव में व्यावहारिक जीवन में यदि किसी अशक्त रोगी का अंगूठा ढीला होकर हथेली पर गिर पड़े तो समझ लीजिए उसकी मृत्यु चौबीस घण्टों के अन्दर निश्चित है। यदि अंगूठे में कुछ जान हो तो कुछ बचने की आशा रहती है। इस प्रकार अंगूठा प्राण-शक्ति का द्योतक भी है।

अंगूठा अंगुलियों का राजा कहलाता है। किसी भी वस्तु की पकड़ अंगूठे के बिना सम्भव नहीं। हस्ताक्षर करने या लिखने के हेतु जब कलम पकड़ी जाती है तो कलम तर्जनी व अंगूठे के कम्पन से चलती है। तर्जनी जो बृहस्पति की अंगुली कहलाती है; 'सरस्वती' का प्रतिनिधित्व करती हुई कलम के ऊपर के हिस्से पर अंकुशवत् संलग्न रह, विद्या-प्रवाह को निरन्तर प्रवाहित करती रहती है। अंगूठा कलम को side से दबाव डाल कर उसके संचालन का कार्य करता है। मस्तिष्क का सीधा सम्बन्ध अंगूठे की कौशिकाओं तक होने से मस्तिष्क के भावों का स्पष्ट अंकन अंगूठे के द्वारा ही सम्भव है। यही कारण है कि पाश्चात्य देशों में कुछ मनोवैज्ञानिक हस्ताक्षर द्वारा मनुष्य की प्रकृति का अनुमान लगाते हैं।

हस्तरेखाविद् 'नेसी मेकेन्जी' अपने शोध ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही लिखते हैं—'The thumb is extremely important to any reading of the character since it reveals the intellect of the owner as well as strength of will and reserves of passion.' अंगूठा तर्क-ज्ञान एवं विवेक शक्ति का द्योतक है; यह कह दिया जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बालक के जन्म के समय अंगूठा मुट्ठी में दबा हुआ होता है। यह विवेक-शून्यता का द्योतक है। बालक के मानसिक विकास के साथ अंगूठा मुट्ठी के बाहर स्वतः ही आ जाता है।

अमेरिका के 'नेशनल स्कूल ऑफ पामिस्ट्री' के महान् हस्तरेखा शास्त्री सेन्ट जेरमेन कहते हैं—'The superior animal is signalized by his possession of a hand, the man is signalizead by his possessing a thumb.' वन मानुष व बिना

पूंछ के बन्दर व मनुष्य के तुलनात्मक अध्ययन में अंगूठा मुख्य भूमिका अदा करता है। मनुष्य के अंगूठे का महत्त्व इसलिए अधिक होता है कि वह सब प्राणियों से विशेष उन्नत और बुद्धिमान है। चिम्पांजी का शरीर बहुत कुछ मनुष्य के शरीर से मिलता है; किन्तु उसका अंगूठा तर्जनी अंगूली की जड़ तक भी नहीं पहुंच पाता। क्योंकि छोटे अंगूठे वाले प्राणी में आत्मशक्ति व बुद्धि दोनों की कमी पाई जाती है। हत्यारे का अंगूठा जरूरत से ज्यादा स्थूल, छोटा गोलाकार (Clubbed) पाया जाता है तथा जन्म से पागल, अर्ध विक्षिप्त या भोले लोगों के अंगूठे बहुत छोटे और कमजोर होते हैं।

रोमन लोग कटे हुए अंगुष्ठ वाले मनुष्य को डरपोक समझते हैं। इंगलिश व फ्रेंच भाषा में कटे हुए अंगूठे वाले के लिए 'नामर्द' शब्द का प्रयोग हुआ है। इसके विपरीत अंगूठे का सुदीर्घ व परिपुष्ट पाया जाना, सृदृढ़ व परिपुष्ट तर्क-ज्ञान, विवेकशीलता व सुसंस्कृत व्यक्ति की गरिमा को दर्शाता है।

भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित लोगों को ठीक करने के लिए प्रायः सबसे पहले उनकी कनिष्ठिका व अंगूठे को जोर से दबाया जाता है। इसका वैज्ञानिक रहस्य यह है कि कनिष्ठिका वास्तव में बुध की अंगुली होती है तथा चन्द्रमा के पर्वत को भी अधिकार में लिए हुए होती है। बुध तो बुद्धि का व चन्द्रमा मन तथा कल्पना का कारक ग्रह है। कनिष्ठिका दबाने से बुद्धि व कल्पना शक्ति को जागृत किया जाता है, तथा अंगूठे को दबाने से विवेक शक्ति व तार्किक शक्ति हरकत में आती है जिससे वह व्यक्ति विशेष सचेष्ट, सतर्क होकर अपने अनुभव व विचारों को वाणी के द्वारा शीघ्र पकट करने लिए बाध्य हो जाता है।

महाभारत के परम वीर अर्जुन की अलौकिक प्रतिष्ठा की सुरक्षा के लिए गुरू द्रोणाचार्य को अपने एकलव्य नामक शिष्य सें गुरु-दक्षिणा में मानसिक शक्ति का प्रेरक तथा इच्छा, विचार और प्रेम तीनों के आश्रयभाग 'अंगूठे' को माँगना पड़ा था, क्योकि

उन्होंने अर्जुन को अद्वितीय लक्ष्यभेदी होने का वचन दे रखा था। इस से सिद्ध है कि हाथ में अंगूठा कितना उपयोगी है।

अंगूठे पर बारीक रेखाओं के द्वारा कुछ चिह्न व आकृतियां बनी होती हैं। फ्रेड गेटिंग के अनुसार 'The lines on the thumb were regarded as being of great importance, since the thumb represented the activity of Mars and the selfhood.'

न्यूयार्क के प्रख्यात विद्वान् जार्ज विलियम बेन्हम अपनी 'दी लॉ ऑफ साइंटिफिक हैण्ड रीडिंग' नामक विशद् ग्रन्थ में लिखते हैं–'Each brain-cell is an electric dynamo and energy generated by thoughts has been recorded in graphitic language upon plam.' अर्थात् प्रत्येक मस्तिष्क कोष्ठक एक विद्युतीय तरंगों को उत्पन्न करने का संयन्त्र है। उस विद्युत शक्ति के द्वारा उत्पादित वैचारिक तरंगें हथेली के मध्य भाग पर ग्राफेटिकल स्थिति में अंकित हो जाती हैं। अंगूठे पर बने ये चिह्न अपरिवर्तनशील (un-changing finger-patterns) होते हैं।

पेरिस के महान हसतरेखा विशारद् श्री डेसबाररोल्लस् ने तो यहां तक कह दिया कि–'अखिल विश्व में जो व्यक्ति एक ही समान दो हथेलियों के प्रिंट्स मुझे दिखा देगा उसके चरणों में मैं अपने जीवन की सारी सम्पत्ति अर्पित कर दूंगा।'

हस्तरेखा विज्ञान की इस सत्यता को स्वीकार करने पर किसी को आपत्ति न होगी कि दुनियां में किन्हीं दो व्यक्तियों के फिंगर-प्रिंटस् किसी भी प्रकार से एक समान नहीं हो सकते और न ही दुनियां में कोई दो मस्तिष्क एक ही समय में एक ही प्रकार के विचार-समूह को संग्रहीत करने में सक्षम हो सकते हैं। यह एक ध्रुव सत्य है। इस सत्य का निरूपण यह सिद्ध करता है कि विश्व में प्रत्येक प्राणी की प्रवृत्तियां उसकी चेष्टाएं, उसकी विचार शक्ति एवं उसकी हस्त रेखाएं भिन्न-भिन्न होती हैं।

पुलिस, अपराध व अंगुलियों के निशान

चीन तथा पूर्व के देशों में काफी समय से अंगुलियों तथा अंगूठे की छाप का हस्ताक्षर के स्थान पर प्रयोग किया जाता रहा है। सरकारी दस्तावेजों, व्यापारिक और कानूनी मसविदों पर आज भी अंगूठे के निशान लगाए जाते हैं। यूरोप के मध्य युग में दस्तावेजों पर मोम की सहायता से अंगुलियों के निशान लिए जाने के प्रमाण मिलते हैं।

सत्रहवीं सदी में इटली में पारसेलो मालपीगी नामक एक विख्यात शरीर विज्ञानी हुआ। वह पहला यूरोपवासी था जिसने चमड़ी की रेखाओं के सम्बन्ध में पहली बार वैज्ञानिक अध्ययन किया।

1883 ईस्वी में जोहान परकिंजी ने ब्रेसलाव विश्वविद्यालय में इस सम्बन्ध में एक शोधपत्र पढ़ा था। शरीर रचना विज्ञान के इस प्रोफेसर ने पहली बार अंगुलियों के निशान को वर्गीकृत करने का उपाय खोज निकाला, तथा इस क्षेत्र में नो वर्गों का अनुसंधान किया।

सामान्य प्रयोग की दृष्टि से इस दिशा में गिलबर्ट थामसन का नाम उल्लेखनीय है। वह एक भूगर्भीय सर्वे का कार्य देख रहे थे। वहां अधिकारियों के आदेशों की जालसाजी रोकने के लिए अपने अंगूठे की छाप का प्रयोग प्रारम्भ किया। इससे वहां होने वाली जालसाजी रुक गई थी। खोज की कड़ी कुछ आगे बढ़ी और रेखा विशेषज्ञों ने पाया कि इन अंगूठों की धारियों (Curves) से मनुष्य की जन्मजात बीमारियों तथा अपराध प्रवृत्तियों का पता लगाया जा सकता है।

बंगाल के पुलिस कमिश्नर रिचर्ड हैनरी ने इस क्षेत्र (Criminology) में बहुत दिलचस्पी ली। जून 1897 में उन्होंने कलकत्ता में विश्व का पहला फिंगर प्रिंट ब्यूरो स्थापित किया। तब से फिंगर प्रिंट अपराधी को पकड़ने का महत्त्वपूर्ण सूत्र माना जाने लगा। इसकी स्थापना के दो वर्ष बाद ही अदालतों में प्रमाण के रूप में अंगुलियों के निशान को मान्यता दी जाने लगी। इसके साथ ही गवाही सम्बन्धी कानून में परिवर्तन किए गए।

विश्व के समस्त वैज्ञानिकों ने इस बात पर सहमति प्रकट की है कि दुनियां में किन्हीं दो व्यक्तियों के फिंगर प्रिंट किसी भी प्रकार से समान नहीं हो सकते। हस्तरेखा विज्ञान की इस सत्यता को स्वीकार करते हुए वर्तमान विश्व की सभी सरकारों के कानून विभागों ने अंगूठे की छाप को प्रत्यक्ष साक्ष्य में अन्तिम गवाह के रूप में स्वीकार किया है।

सौभाग्य की बात है कि विश्वभर में प्रचलित अंगुलियों की छाप पर आधारित वैज्ञानिक प्रक्रिया के सूत्रपात का श्रेय भारत को है। इस क्षेत्र में सर हैनरी के गुरु सब-इन्सपेक्टर श्री अजीजुल हक के योगदान को नगण्य नहीं किया जा सकता। हक ने अगुलियों की पोरों पर रेखाओं की गोलाइयों के आधार पर ऐसे सिद्धान्तों का आविष्कार किया जिससे अंगुलियों के निशानों का वर्गीकरण अत्यन्त सरल हो गया। इसी उपलब्धि के आधार पर उन्हें उस जमाने में पांच हजार रुपये का पुरस्कार देकर खान साहब की उपाधि दी गई थी। सन् 1905 में श्री हैनरी के प्रयासों से श्री अजीजुल हक को स्काटलैंड यार्ड के अध्यक्ष के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

आज स्काटलैंड यार्ड में 25,00,000 से भी अधिक अंगुलियों के निशान हैं तथा इतनी उत्तम व्यवस्था है कि यदि कोई अपराधी रात में अपराध करे तो सुबह तक कार्यालय में मौजूद उसकी अंगुलियों के निशानों से मिलान कर रिपोर्ट के साथ उसे अदालत में पेश किया जा सकता है।

पुलिस अपराध शाखा द्वारा प्रस्तुत अंगुलियों की रेखाओं का वर्गीकरण, त्वचा शास्त्रियों व ज्योतिषियों के वर्गीकरण से सर्वथा भिन्न होता है।

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि अंगुलियों की ये रेखायें जन्म से लेकर मृत्यु तक अपरिवर्तित रहती हैं। आज के चतुर अपराधी दाढ़ी रख कर, तेजाब से चेहरा

जला कर, अन्य तरीकों से मुखाकृति व आवाज तथा चाल में परिवर्तन ला सकते हैं, किन्तु अंगुलियों के निशान सदा एक जैसे रहते हैं।
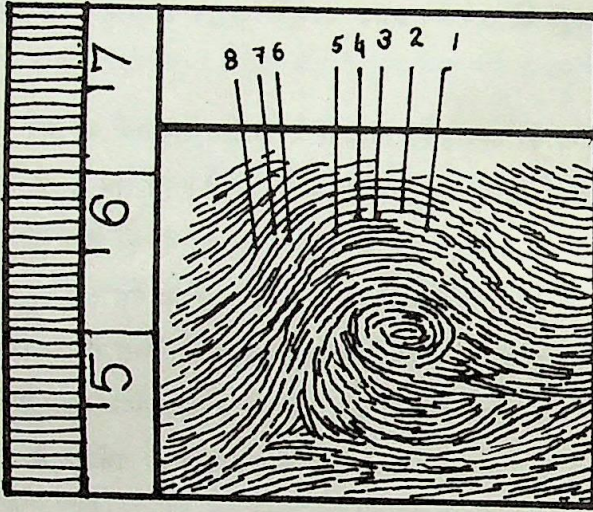
चित्र नं. – (1)

पुलिस अपराध शाखा द्वारा लिए गए अंगूठे के प्रिंट का एक नमूना

इस समय विश्व का उंगलियों के निशानों की छाप का सबसे बड़ा संग्रह अमरीका के F. B. I. (फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन) के कार्यालय में है। यहां प्रतिदिन दस हजार लोगों की अंगुलियों के निशान संग्रह हेतु आज भी लिए जाते हैं।

त्वचारेखा शास्त्रियों का मत

(Anthropological Survey)

शरीर रचना शास्त्रियों ने हथेली व अंगूठों पर पाई जाने वाली सूक्ष्म रेखाओं (Anthromical creases) को शारीरिक रचना प्रणाली का अंग माना है। इस विषय

में जेबरा तथा अमेरिका में पाए जाने वाले एक बन्दर विशेष (Howler-monkey) की चमड़ी की बनावट (Curves) का उदाहरण देते हैं।
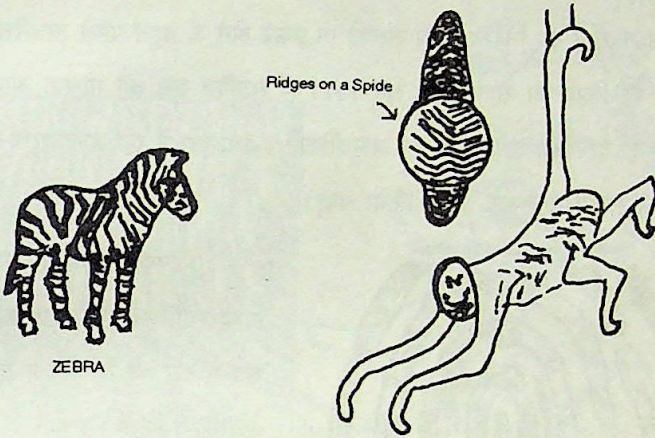
चित्र नं. – 2

जेबरा व हॉलर बन्दर की त्वचा पर बनी हुई सूक्ष्म रेखाओं की प्राकृतिक सलवटें।

त्वचा रचना विज्ञान (Dermatoglyphic) के अध्ययन हेतु पहले संस्थान की नींव सन् 1892 में सर फ्रेन्सिस गेल्टन के द्वारा रखी गई। उन्होंने पाया कि इन धारियों (Curves) के द्वारा मनुष्य की जातिगत, परम्परागत बीमारियों का पता लगाया जा सकता है। यह खोज कुछ आगे बढ़ी तथा पोलैण्ड एवं भारत के त्वचा रचना शास्त्रियों ने सन् 1930 में पता लगाया कि रंग का अन्धापन (Colour-blindness) व चमड़ी के वर्ण व गुणधर्मिता में प्राप्त कुछ चिह्नों का इन सूक्ष्म रेखाओं से गहरा सम्बन्ध है।

इस खोज की कड़ी को मूर्त रूप दिया सोवियत रूस ने। रूस में आनुवंशिकी में प्रगति का उपयोग त्वचारेखा विज्ञान से किया जा रहा है। सभी प्राणधारियों की कोशिकाओं के समस्त नाभिकों में अतिसूक्ष्म दंडाकार गुणसूत्र (Cromosom) होते हैं; जो आनुवंशिकता

के लक्षण प्रदान करने वाले जीनों के वाहक होते हैं। जीनों और क्रोमोसोमों की संख्या अथवा प्रकृति में सूक्ष्मतम परिवर्तनों के भी अप्रत्याशित परिणाम हो सकते हैं। कई प्रकार के दुःसाध्य रोगों का निदान अन्य लक्षणों के प्रकट होने के बहुत पहले त्वचारेखाओं के आधार पर किया जा सकता है। सन् 1977 में स्थापित रूस की मीन्स्क आयुर्विज्ञान संस्थान की वैरूपिकी तथा चिकित्सा आनुवंशिकी प्रयोगशाला में इस असाधारण नैदानिक विधि का सर्वप्रथम सफल प्रयोग किया गया।

चित्र नं.– 3
(माइक्रोस्कोपीया विश्लेषण)
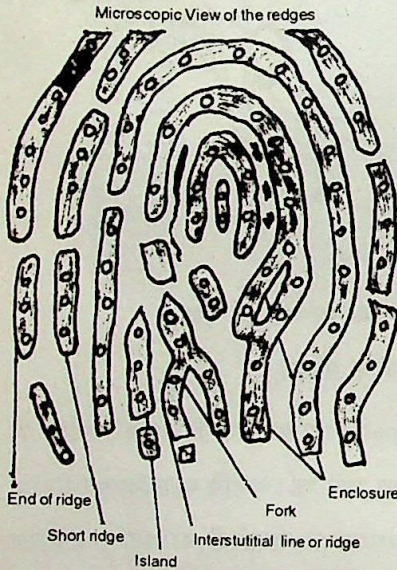
मीन्स्क आयुर्विज्ञान संस्थान के अध्यक्ष डॉक्टर सेर्गेई ऊसोव ने इस क्षेत्र में दस वर्ष से अधिक समय तक अनुसंधान किया। उन्होंने दो लाख से अधिक अंगुलियों के सिरों (Tips) की इन सूक्ष्म रेखाओं का अध्ययन किया व सभी रेखाओं को एक दूसरे से भिन्न पाया। इन रेखाओं की संख्या, रूप, दिशा और अनुपात तथा अन्य कारणों व तबदीली को ध्यान में रख कर, उसके आधार पर किसी आनुवंशिक रोग के मौजूद होने का अनुमान लगाया जा सकता है। डॉ. सेर्गेई ऊसोव ने अजन्मे शिशु के आनुवंशिक रोग से ग्रस्त होने के खतरे को स्पष्ट करने की एक विधि भी निकाली है। इनकी प्रयोगशाला में आनुवंशिक बीमारियों और जन्मजात बहुल दोषों का निदान करने की द्रुत और विश्वसनीय विधियों की खोज निरन्तर की जा रही है। इसके साथ ही रोकथाम के उपयों को भी खोजा जा

रहा है। आमतौर पर इक्के-दुक्के जन्मजात दोष जैसे– खण्ड ओष्ठ, खण्ड तालु, छः अंगुलियों का होना अथवा विभिन्न अंगों में दोषों का पता लगाना अब कठिन नहीं रहा।
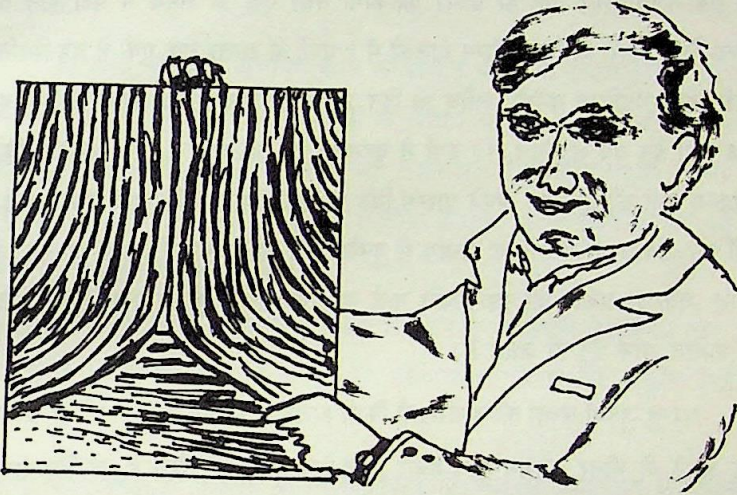
चित्र नं. – 4

डा. सेर्गेई तर्जनी अंगुलि के सिरों के आधार पर आनुवंशिक लक्षणों का विश्लेषण कर रहे हैं।

त्वचारेखा विशेषज्ञों ने प्रसूतिगृहों के चिकित्साकर्मियों के लिये, एक तालिका भी तैयार की है, जिसमें अनेक ऐसे चिह्न अंकित किए गए हैं जिनके माध्यम से होने वाले शिशु के कान, आँख, कण्ठ व तालु रोगों का तत्काल पता लगाया जा सकता है। यद्यपि यह विधि जटिल और श्रमसाध्य है, तथापि होने वाली संतान के पूर्वानुमान हेतु किए गए बेलोरूसी चिकित्सा आनुवंशिकी केन्द्र की उपलब्धियों से विश्व के वैज्ञानिक उऋण नहीं हो सकते।

जुड़वां बच्चे, ज्योतिष तथा रेखाएं

एक राशि वाले करोड़ों व्यक्ति संसार में होते हैं। उन पर लिखा फलित राश्यानुसार एकदम सटीक नहीं बैठता तथा एक ही प्रकार की जन्मकुण्डली से उत्पन्न ग्रह-स्थिति

वाले भी हजारों लोग होते हैं। ज्योतिष-जगत में 9 ग्रह व 12 राशियाँ होने से गणित की एक निश्चित सीमा आ जाती है। ज्योतिषशास्त्रानुसार जुड़वाँ बच्चों की जन्म-कुण्डली भी ग्रह नक्षत्रानुसार एक ही प्रकार की होगी तथा एक ही समय में पैदा होने वाले भिन्न-भिन्न नगरों के भिन्न-भिन्न बालकों में 2 घण्टे के अन्तर तक एक से ग्रह-स्थितियों वाली जन्मकुण्डलियां बनेंगीं। तथैव 28 दिन 7 घण्टे से चन्द्रमा, 12 महीने से सूर्य, बुध, शुक्र तथा डेढ़ वर्ष से मंगल, 12 वर्षो से बृहस्पति एवं 30 वर्षो से शनि अपने (सर्किल) परिक्रमा कक्ष को पूरा कर अपने प्रारम्भ बिंदु पर पुनः आ जाते हैं। इसी प्रकार से 129 वर्षो की अवधि के बाद प्रायः पंचांग में पुनरेव वही ग्रह गोचर में वापस आ जाते है। फलतः एक ही प्रकार की ग्रह-स्थिति वाले जन्म-कुण्डलियों के फलादेश हेतु ज्योतिषी का फलित ज्ञान पंगु हो जाता है।

परन्तु जुड़वाँ बच्चों की हस्तरेखाएँ किसी हालत में भी एक समान नहीं हो सकतीं। एक अंगूठे के भीतर लगभग तीन हजार सूक्ष्म रेखाएँ अंकित होती हैं, तो फिर सम्पूर्ण हथेली का तो कहना ही क्या ? यह प्रयोग हस्तरेखा विज्ञान की सूक्ष्मता को सिद्ध करता है। इतना ही क्यों ? अपने हाथों की हथेलियों को देखिए। एक ही समय और एक ही कुलोत्पन्न, एक ही वातावरण में पैदा होने वाले एक ही शरीर से चिपके इस माँसल पिण्ड के दोनों हथेलियों की रेखाएँ अलग-अलग क्यों ? कारण स्पष्ट है कि गुजरी जिन्दगी बायें हाथ पर चित्रित है तथा भविष्य के गर्भ में छिपी घटनाएँ आपके दायें हाथ में अंकित हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी 'सामुद्रिक-दीपिका' में अंगूठे के महत्व को समझाते हुए कहते हैं : **'अंगुष्ठ मानव स्वभाव और मानसिक भावनाओं को समझने में उतना ही उपयोगी है जितना मुंह के लिए नाक।'**

हस्तरेखा शास्त्र को नवीन प्रारूप प्रदान करने वाले युग-प्रवर्त्तक भविष्यवक्ता 'कीरो' ने अंगूठे के महत्त्व को समझाते हुए लिखा है – 'The truth of palmistry

could rest upon the solid foundation given by the study of the thumb alone in its relation to the most important characteristics of the subject.''

हस्तरेखा का गहन अध्ययन करने के पश्चात् यदि एक सुविज्ञ विद्वान् ज्योतिषी भिन्न-भिन्न ग्रहों के पर्वत व ग्रह-रेखाओं के आधार पर ग्रह व लग्न के अंशों सहित जन्म-कुण्डली बना ले तो कोई आश्चर्य नहीं ? हस्तरेखा द्वारा जन्मकुण्डली बनाना कोई नई बात नहीं। वास्तव में 'जन्म-कुण्डली निर्माण' पद्धत्ति 'हस्तसामुद्रिक शास्त्र' की एक छोटी-सी प्रशाखा मात्र ही तो है।

वर्षों अध्ययन करके हमने अंगुलियों की छाप से जन्म-पत्री बनाने का ज्ञान प्राप्त कर लिया। अंगुलियों की छाप में सात ग्रह और बारह राशियों की आकृति देखी गई है।

इसी प्रकार से श्रीलंका के प्रसिद्ध विद्वान् प्रो. साइरस अवायकून के अनुसार– ''A thumb is a snap judgment, a short cut to an opinion about a stranger.''

प्रस्तुत पुस्तक में सूक्ष्म रेखाओं को लेकर मोटे तौर पर अंगूठे की पृथक्-पृथक् बनावट और अलग-अलग राशियों में जन्मे जातकों के चिह्नों के आधार पर चारित्रिक विशेषताओं का वैज्ञानिक पद्धति से भविष्य कथन भी किया गया है।

ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री का रहस्य एवं उसका महत्त्व........

हस्तरेखाओं द्वारा भविष्य कथन की परिपाटी अत्यन्त प्राचीन है। इस पर शोध कुछ आगे बढ़ी तो सप्तवर्गीय, नववर्गीय गणित प्रक्रियाओं एवं 'ग्राफेटिक केलकुलेशन' के द्वारा भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाएं मय तारीख के बताई जाने लगीं। केवल हस्तरेखाओं द्वारा भविष्यवाणियां करने वाले निष्णात विद्वानों को 'पामिस्ट' कहा जाने लगा। सुविख्यात हस्तरेखा विशारद स्व. कीरो इस क्षेत्र में मार्गदर्शक विद्वान् के रूप में जाने जाते हैं। पाश्चात्य देशों में इस विषय पर कई शोधकर्त्ता एवं अधिकारी विद्वान् हुए हैं।

हस्तरेखा व सामुद्रिक अंग-लक्षण द्वारा जन्मकुण्डली बना देने वाले चमत्कारिक पुरुषों की किंवदन्तियां बहुत सुनीं। बम्बई से जोधपुर की यात्रा के मध्य 18 अगस्त 1976 को सूरत स्टेशन पर बसन्त होटल में ठहरा हुआ था कि एक अविस्मरणीय चमत्कारिक घटना घटी। हमारे पड़ौस के होटल में ही कोई शम्भुलिङ्गम् नामक दक्षिण भारतीय ज्योतिषी आए हुए थे। एक औपचारिक मुलाकात के रूप में उसने मुझे चाय पर आमन्त्रित किया। बात ही बात में ज्योतिष जगत की चर्चा करते हुए मैंने मेरी समस्या को उसके सामने दोहराया। उसने एक हल्की सी मुस्कराहट के साथ मेरी ओर देखा एवं दो क्षण के लिए मेरी हथेली देखी तथा मेरा सही जन्म लग्न मुझे बताया। मैंने उसकी बात को मात्र संयोग मान कर तिरस्कृत कर दिया। परन्तु महान् आश्चर्य तो मुझे उस वक्त हुआ जब उसने लगभग 15 मिनट के समय में मेरी पूरी जन्मकुण्डली मय अंशों के बना कर मेरे सामने प्रस्तुत की। उसके पश्चात् उसने मेरे भावी जीवन के बारे में 3 पृष्ठों में भविष्यवाणियां लिख कर दीं। केवल 10-15 मिनट में ही बिना किसी पंचांग की सहायता के अंशात्मक कुण्डली निकाल कर, उसने मुझे प्रभावित कर दिया। उसके पास कोई जादू या सिद्धि नहीं थी। मेरे आग्रह पर उसने मुझे हाथ से ग्रह निकालने की पद्धति व तर्कों को स्पष्ट किया। मेरे उस अज्ञात मित्र की प्रेरणा ने मुझे 'ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री' के लिए उत्साहित किया। तभी से सतत अनुसंधान करते हुए मैंने बीस हजार से अधिक हाथों के प्रिन्टों का अद्‌भुत संकलन कर, उसके सूक्ष्म अध्ययन के आधार पर कई महत्त्वपूर्ण सूत्रों का आविष्कार किया है। हमारे इस शोध ने ईश्वरीय सत्य के बिन्दु को खोज निकाला। किसी ने ठीक ही कहा है – 'Astrology is God's Language written in the form of shorthand which only a chosen few are blessed to read.'

यद्यपि प्रत्येक प्रकार की दिव्य विद्याओं में ईश्वरीय अनुकम्पा अनिवार्य है तथापि मेरा विश्वास है कि इन सूत्रों का सहारा लेकर, साधारण ज्ञान सम्पन्न कोई भी व्यक्ति,

हस्तरेखा, विशेषकर अंगुष्ठ के आधार पर जन्म-लग्न बनाने में सफल हो सकता है। आवश्यकता है परिश्रम, खोज, धैर्य एवं अध्ययन-गाम्भीर्य की। इस पुस्तक को जल्दी में प्रकाशित करने के कारण कई कमियां व त्रुटियां रह जाना स्वाभाविक है। परन्तु मुझे विश्वास है कि इसका अगला प्रकाशन अधिक सुबोध, सुस्पष्ट, सुपाच्य एवं परिष्कृत शोधों से परिपुष्टित होगा तथा ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के जिज्ञासुओं के लिए निश्चय ही ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी होगा। अंत में भारतीय ऋषि-मुनियों के उस निःस्वार्थ त्याग परम्परा के प्रति, मैं आभार प्रदर्शित करता हूँ जिन्होंने अपने आपको तिल-तिल जला कर, भारत की इस दिव्य आध्यात्मिक ज्योतिष-ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा है। इन शब्दों के साथ, मैं यह द्वितीय पुष्प माँ सरस्वती के श्रीचरणों में सादर समर्पित करता हूं।

स्खलनं गच्छतः क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधन्ति सज्जनाः।।

डॉ0 भोजराजः द्विवेदी

1

अंगुष्ठ से जानने योग्य विषय

'The greatest truth may lie in smallest thing.'

— **CHEIRO**

अंगूठे के महत्व को अनेक भविष्य वक्ताओं ने जाना और माना है, किन्तु अंगूठे पर कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ अद्यतन दृष्टिगोचर नहीं हुआ। इस दिशा में यह सर्वप्रथम प्रयास है। अब आइए, केवल अंगुष्ठ के द्वारा जानी जा सकने वाली कुछ मुख्य बातों पर ध्यान देंगे।

प्रेम, तर्क, शक्ति विवेक, विद्या घमण्ड, क्रोध, वासना, बल, वीर्य के गुण-दोष, चरित्र के मुख्य गुण-दोष, बीमारी, आयु, जीवन का विस्तार, मर्द-नामर्द की परीक्षा, पिता की सम्पत्ति, दादा की सम्पत्ति, भाइयों की संख्या, भाइयों से प्रेम या शत्रुता की जानकारी, मित्र व शत्रुओं की संख्या, देवताओं की अनुकम्पा या प्रकोप का ज्ञान, शिल्पकला, हुनर, शिकारी के लक्षण, असफल व सफल वकील, वक्ता, प्रवक्ता व नेता का ज्ञान, भाग्योदय, भाग्यास्त, बचपन, जवानी व वृद्धावस्था का भविष्य, जन्म समय में नाल के वेष्टन का ज्ञान, पागलपन व लकवे के कारण, खून का रंग, चर्म रोग, असल-नकल की पहचान, राजा व निर्धन की पहचान तथा आत्मबल साधु व ठग की परीक्षा, दयालु व कठोर व्यक्ति की परीक्षा, गुप्तेन्द्रिय का आकार-प्रकार, आनुवंशिक रोग, गुप्तेन्द्रिय पर तिलादि चिन्ह, प्राणशक्ति, इच्छाशक्ति, शारीरिक बल, प्राणवायु की गति, जन्मपक्ष, बारह राशियों के चिन्ह, जन्म लग्न, लग्न के अंश, जन्म समय, इत्यादि सभी विषयों का विशद वर्णन पुस्तक के अगले भागों में पहली बार स्पष्ट किया जा रहा है।

2

कौनसा हाथ देखें और क्यों ?

गर्गादि भारतीय ऋषियों ने सामुद्रिक लक्षणों में पुरुष के दायें अंग को प्रमुखता दी हैं तथा स्त्रियों के बायें अंग को। कुछ प्राचीन आचार्यों ने पुरुष के बायें हाथ को पूर्वजन्म का प्रतीक बताया है तो कुछ विद्वानों ने पुरुष के बायें हाथ को उसकी पत्नी का हाथ माना है। वास्तव में समस्या यह खड़ी होती है कि हमें अध्ययन हेतु हैण्ड-प्रिंट जिज्ञासु जातक के दायें हाथ का लेना चाहिए या बायें हाथ का।

यह सत्य है कि पुरुष का बायां हाथ जातक के पूर्वजन्म को बताता है। मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मिलने का अवसर मिला जो कि अपने पिछले दो जन्म के वृत्तान्त को जानता है। उस व्यक्ति के बायें हाथ में उसके द्वारा बताई गई घटनाओं की सत्यता के आभास भी स्पष्टतः मिले। परन्तु व्यावहारिक तौर पर हम बायें हाथ को देख कर किसी व्यक्ति का पूर्वजन्म स्पष्ट नहीं बता सकते तथा न ही किसी व्यक्ति को अपना पूर्वजन्म याद होता है। हमारे शोध के अनुसार हाथ देखने के लिए हमें निम्नलिखित नियमों का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

(1) –**'सामुद्रिक संग्रह'** में निर्देश दिया गया है :

विशेषाद्दक्षिणः पुंसां वामः स्त्रीणां तथा स्मृतः।

अर्थात् विशेष रूप से पुरुष का दक्षिण हस्त और स्त्री के बायें हस्त को प्रधान मानना चाहिए।

वैदिक साहित्य में स्त्री को 'वामाङ्गी' कहा है। हमारे ऋषियों का यह सम्बोधन कितना वैज्ञानिक व तर्कपूर्ण है। क्योंकि वैज्ञानिक शोधों से यह प्रमाणित हो गया है कि दक्षिण हस्त द्वारा किए गए कार्यों के प्रतिरूप वाम हस्त में स्वतः ही कुछ चिन्ह बन जाते हैं। फलतः वामहस्त क्रिया रहित है। व्यावहारिक जीवन में भी हम देखते हैं कि

पति राजा हो तो स्त्री को स्वतः ही रानी, सेठ हो तो सेठानी का दर्जा बिना प्रयत्न किए ही प्राप्त हो जाता है। उसी तरह पति पर दरिद्रता आते ही स्त्री को भी बिना कारण दारिद्र्य भी प्राप्त हो जाता है। अतः पुरुष के दक्षिण हस्त एवं स्त्री के वाम हस्त का प्रिंट अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए। इस विषय में ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाईबिल में लिखा है– 'Length of days in her right hand, riches and honour are in her left. (Bible, Prov. iii-16)

(2) - चौदह वर्ष से कम की वय के बालक को भी परतन्त्रता के कारण उसके वाम हस्त को प्रधान मान कर दक्षिण हस्त को गौण मान कर परीक्षा करनी चाहिए।

(3) - यदि कोई पुरुष डरपोक, परावलम्बी, स्त्री प्रवृत्ति का हो तो उसके वाम हस्त को प्रधान समझ कर दाहिने हाथ को गौण समझना चाहिए। इसी प्रकार जो स्त्री पूर्णतया स्वतन्त्र हो उसका दायां हाथ देखना चाहिए।

(4) - अपने अनुभव में हमने यह स्पष्ट पाया है कि जातक के दायें हाथ में उसका वर्तमान एवं भविष्य अंकित होता है तथा बायें हाथ में बीती हुई घटनाओं का स्पष्ट संकेत मिलता है।

वंश परम्परागत गुण, प्रवृत्ति, व्याधि, संकट, अकस्मात् भय, यश, प्रतिष्ठा आदि भूतकाल को बताने के लिए हमें बायें हाथ तथा वर्तमान व भविष्य को स्पष्ट करने के लिए दायें हाथ का प्रिंट लेना होगा। जन्मकुण्डली शोधन प्रकरण में हमें जातक के दोनों हाथों का स्पष्ट प्रिंट लेना चाहिए।

(5) - पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार भी जिस हाथ के माध्यम से व्यक्ति अपनी विचार शक्ति, लेखन प्रक्रिया एवं अन्य व्यावहारिक कार्य करता है उस हाथ विशेष को भविष्य कथन में प्रधानता देनी होगी। हमारी शोध के अनुसार कार्य करने पर आपको भी अनुभव होगा कि जो चिन्ह आपको जातक के दायें हाथ के अंगूठे, अंगुलियों पर मिलेंगे वे ही चिन्ह उल्टे होकर 90% हाथों में आपको बायें हाथ के अंगूठे व अंगुलियों पर दिखलाई देंगे। केवल 10% मामलों में विशेष सतर्क व सावधान रहना होगा।

(6) - प्रसंगवश यहां यह भी स्पष्ट कर देना उचित समझता हूँ कि संतान से सम्बन्धित भविष्यवाणियां करने हेतु आपको पति व पत्नी दोनों के हाथ की विवाह व संतान रेखाओं का स्पष्ट प्रिंट लेकर ही फलादेश करना चाहिए। क्योंकि संतान का योग पति-पत्नी के संयोग से बनता है। अतः केवल पति के हाथ को देख कर संतान के

सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणी कभी-कभी गलत भी हो सकती है। हमारी वर्तमान शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि पुरुष जातक (पति) के हाथ में केवल वे ही संतान रेखा स्पष्ट दिखलाई देती हैं जिनसे उसका लगाव विशेष है। कुल कितनी संतानें हुईं ? कितनी गुजर गईं ? यह सब पत्नी के हाथ में स्पष्ट दिखाई देता है। अतः 'संतान प्रकरण' में पति-पत्नी दोनों के हाथों का निरीक्षण करना अनिवार्य समझें।

(7) - इसी प्रकार यह भी अनुभव में आया है कि जिस जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् हुआ है अथवा जिसकी जन्मकुण्डली में बलवान् धनेश ने सप्तमेश से युति करके **'कलत्रमूल धनयोग'** बनाया है उस जातक विशेष के भाग्योदय व जीवन की प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डालते समय उसकी पत्नी के दायें हाथ में प्रस्फुटित भाग्यरेखा के आरोह-अवरोह को साथ-साथ देखना जरूरी समझें।

(8) - समुद्र ऋषि के कथनानुसार—

उत्पत्तिः स्त्रीमूला तस्या अपि ततः प्रधानमेषापि।

क्रियते लक्षणमनयोर्यदि तदिह स्याज्जनोपकृतिः।।

- (सामुद्रिकशास्त्रम् 1/7)

अर्थात् स्त्रीमूल (उत्पत्ति जड़) होने से स्त्री भी प्रधान है। जो सज्जन इन दोनों के लक्षणों का मिलान करके फलादेश करे तो निश्चय ही वह इस लोक में सब का अधिक उपकारक होवे।

दक्षिण और वाम हस्त का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण हस्तपरीक्षा में दोनों हाथों को देखना चाहिए। दोनों हाथों पर एक सरीखे लक्षण की रेखादि चिन्ह होते हैं, तो उसका परिणाम मनुष्य पर हुए बिना नहीं रहता। इसके विपरीत एक हाथ पर चिन्ह हो और दूसरे पर न हो तो परिणाम संशयात्मक समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ किसी मनुष्य के हाथ में आयुष्य रेखा पर अशुभ काला बिन्दु हो तो उसकी मृत्यु विष प्रयोग या आकस्मिक भय से होती है। परन्तु वैसा ही चिन्ह यदि दूसरे हाथ पर न हो तो उसको वैसा अरिष्ट मात्र होगा, किन्तु मृत्यु नहीं होगी। इस प्रकार से दोनों हाथों के महत्व को समझना चाहिए।

3

अंगुष्ठ पर पाये जाने वाले अमिट चिन्ह

अंगूठे व अंगुलियों पर पाये जाने वाले ये अमिट चिन्ह जन्म से लेकर मनुष्य की मृत्यु पर्यन्त नहीं बदलते। संसार में किसी भी व्यक्ति के हाथ में ये चिन्ह समान रूप से प्राप्त नहीं हुए है। यहां तक कि जुड़वां बच्चों के भी अंगूठे-अंगुलियों में ये भिन्न रूप में पाये जाते हैं।

स्काटलैण्ड यार्ड अपराधियों को पकड़ने के लिए इन चिन्हों को महत्वपूर्ण मानती है। मेडिकल विभाग व त्वचा-शास्त्री आनुवांशिक रोगों की शोध के लिए इसे जरूरी समझते हैं। परन्तु सामुद्रिक शास्त्रज्ञों के लिए ये चिन्ह जातक के वंश परम्परागत गुण, धर्म, प्रवृत्ति, चारित्रिक विशेषताओं एवं व्यक्तित्व को जानने की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। यद्यपि एक दूसरे से भिन्न होने के कारण ये चिन्ह अनन्त गुणित हैं तथापि भारतीय ऋषियों ने ईसा से भी हजारों वर्ष पूर्व आकृति के अनुसार इन्हें तीन श्रेणियों में विभक्त किया है। ये हैं –

शंख, चक्र व शुक्ति

पौर्वात्य पद्धति–

शंख - अंगुलियों के अग्रभाग पर शंख के समान आकृति के जो चिन्ह होते हैं उनको शंख कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं : एक वामावर्त और दूसरे दक्षिणावर्त। देखें चित्र नं. 5 में D व C।

चक्र - गोल चक्र के समान कुण्डलाकृति चक्राकार चिन्ह जो अंगुष्ठ व अंगुलियों पर प्राप्त होते हैं उनको चक्र कहते हैं देखें चित्र नं. 5 में A.

शुक्ति - शंख व चक्र इन दोनों लक्षणों से भिन्न जो आकृति चिन्ह प्राप्त होता है उसको शुक्ति (सीप) कहते हैं। देखे चित्र नं. 5 में F.

दक्षिणावर्त चिन्ह शुभद व बलवान् माने गए हैं। हमारे प्राचीन शास्त्रों में अंगुलियों व अंगूठों पर पाये जाने वाले प्रत्येक चिन्ह का अलग-अलग वर्णन किया गया है।

शंख, चक्र व शुक्ति विचार –

यस्याथ चक्रमंगुष्ठे यवः पूर्णश्च दृश्यते।

तदा पितामहादीनामर्जितं धनमाप्नुयात्।।

तेनैव विपरीतं तु धनलाभं भवेन्न हि।। 1।।

तर्जन्यामय चक्रं च मित्रद्वारा धनं भवेत्।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम्।। 2।।

मध्यमायां स्थिते चक्राद्देवद्वारा धनं लभेत्।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम्।। 3।।

अनामिका भवेच्चक्रं सर्व्वद्वारा लभेद्धनं।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम्।। 4।।

कनिष्टिकायां भवेच्चक्रं वाणिज्येन धनं लभेत्।

तेनैव विपरीतं तु व्ययो भवति निश्चितम्।। 5।।

(1) यदि अंगुष्ठ के अग्रभाग पर चक्र का चिन्ह हो और यव का चिन्ह भी सम्पूर्ण बना हुआ दिखाई पड़ता हो तो उसको अपने पिता और पितामह के संचित कियें हुए सुरक्षित धन की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत यदि अंगुष्ठाग्र भाग पर शंख या अन्य आकृति का चिन्ह हो तो उसको अपने बाप-दादा द्वारा प्रतिपादित धन का लाभ नहीं होता।

(2) यदि तर्जनी अंगुली के अग्रभाग पर चक्र का निशान हो तो उसको मित्र द्वारा धनलाभ होता है। इसके विपरीत चिन्ह हो तो मित्रों के सम्बन्ध में धन की हानि किंवा व्यय होता है।

(3) यदि मध्यमा अंगुली के अग्रभाग पर चक्र का चिन्ह हो तो देव द्वारा धनलाभ (देवपूजा, यज्ञ, याग, देवालय पर अधिकार, मठाधीश, कर्मकाण्ड, ज्योतिष इत्यादि विद्या के माध्यम से देवकृपा द्वारा धन का लाभ) होता है। यदि इस मध्यमा पर शंख हो तो उपर्युक्त देव सम्बन्ध द्वारा धन का नाश व व्यय होता है।

(4) यदि अनामिका के अग्रभाग पर चक्र का चिन्ह हो तो सार्वजनिक कार्यों द्वारा धन लाभ होता रहता है। इस अंगुली पर यदि शंख हो तो जनकार्य में धन व्यय होता रहेगा।

(5) यदि कनिष्ठिका अंगुली के अग्रभाग पर चक्र हो तो वाणिज्य द्वारा धन लाभ होता है। इसके विपरीत यदि इस अंगुली पर शंख का निशान हो तो धन हानि होती है।

ग्रंथकारों द्वारा निर्दिष्ट दसों अंगुलियों के तुलनात्मक फल प्रस्तुत सारिणी द्वारा प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

कुल संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
शंख	सुखी	व्यापारी	मध्यम	गुणी	अल्पविद्या	राजलक्षणी	प्रतापी	राज-लक्षणी	राजयोग	नास्तिक व हृदयरोगी
चक्र	राजा	राजपूज्य	योगी व धनवान	दरिद्री	ऐश्वर्यशाली विलासी	विषयी	पुण्यशील दानी	रोगी	राजा या योगी	ईश्वर साक्षात्कारी किंवा स्वल्पायु
शुक्ति	गुणवान	वक्ता	धनाढ्य	सद्गुणी	पण्डित	वेदान्ती	ऐश्वर्य-शाली	साहसी	निरुद्यमी	महाभाग्यवान व पराक्रमी

चिन्हात्मक वर्गीकरण–

अनन्त गुणित अंगुष्ठ चिन्हों को छः भागों में विभाजित करके हम निम्नलिखित चिन्तन बिन्दु प्रस्तुत करते हैं।
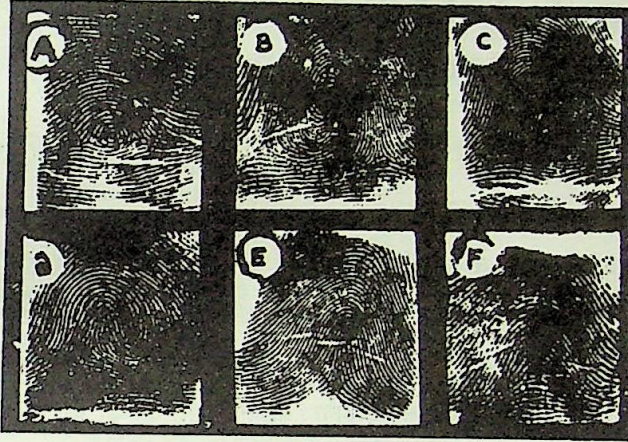
चित्र नं. – 5

(1) चक्र (Whorl) — (चित्र 5 A)

यह चिन्ह चक्राकार रेखाओं का घेरा है जो त्रिभुज आकृतियों पर अवलम्बित होता हुआ, अंगुलियों के प्रथम खण्ड में विद्यमान रहता है। इस चिन्ह को पहचानना बिल्कुल आसान है।

1 यह बहुत कम हाथों में पाया जाता है, परन्तु इसका पाया जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

2 यह सकारात्मक शुभ चिन्ह है।

3 यह चिन्ह जिस अंगुली के ऊपर पाया जाता है उस अंगुली के मूल में निवास करने वाले ग्रह की शक्ति को बढ़ा देता है।

4 चक्र महत्वाकांक्षा एवं कुशाग्रता का प्रतीक चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति साहसी, धैर्यशाली एवं परम पराक्रमी होते हैं। इनको जीवन में आराम कम मिलता है तथा इनकी

महत्वाकांक्षा बढ़ चढ़ कर होती है। सुदर्शन-चक्र की भांति इस निशान वाले जातक भी रिपुमर्दन में सक्षम होते हैं।

5 ऐसे व्यक्ति भावुक व मिजाजी (Man of mood) होते हैं। पूर्णिमा के चन्द्र के दिन इनकी भावात्मक प्रक्रियाएँ बढ़ जाती हैं। यदि चन्द्र पर्वत पर भी चक्र हो तो उस व्यक्ति को पानी में डूबने का पूरा भय रहता है।

6 अंगुलियों की तरह हथेली में भी चक्र के निशान बनते हैं। यदि हथेली में पूर्ण चक्र हो तो यह अखण्ड, प्रभुत्व व साम्राज्य सूचक हो जाता है।

महाभारत की कथा के अनुसार महाराजा दुष्यन्त कण्व महर्षि के आश्रम में शेर के दांत गिनते हुए एक तेजस्वी अज्ञात बालक को देखकर हतप्रभ रह गये। परन्तु उस साहसी बालक की हथेली व सम्पूर्ण अंगुलियों पर चक्र के निशानों को देखकर, उन्होंने तत्काल ही पहचान लिया कि यह मेरा ही पुत्र हो सकता है। क्योंकि ज्योतिषियों की भविष्यवाणी के अनुसार महाराजा दुष्यन्त के केवल एक ही पुत्र होगा और वह अनेक शुभ चक्र चिन्हों से युक्त चक्रवर्ती सम्राट होगा। फलतः भरत नाम का यह बालक आगे चलकर सप्तद्वीप वसुन्धरा का अकेला शासक बना। उसके पराक्रम व शौर्य को स्मरण कर आज भी 'हिन्दुस्तान' को 'भारत' के नाम से पुकारा जाता है।

7 यदि अनामिका अंगुली तर्जनी से लम्बी हो तथा उस पर पूर्ण चक्र हो, तो जातक निश्चित रूप से बड़ा जुआरी, सट्टेबाज या स्मगलर होता है; इसमें सन्देह नहीं, यह अनुभूत है। इसके साथ ही जिनकी सूर्य-रेखा बलवान हो वे लोग इन कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, दूसरे नहीं।

(2) अर्धचक्र (Semi-whorl)— (चित्र 5 B)

यह भी चक्र की तरह ही होता है। परन्तु चित्र 5 A को पूर्ण चक्र कहा जायेगा जबकि B को अर्धचक्र। पूर्ण चक्र सम्पूर्ण गोल होता है तथा पूरा स्वतन्त्र गोल-गोल छल्लों से घिरा होता है। जबकि अर्धचक्र ऐसा प्रतीत होता है जैसे एक रेखा को गोल-गोल जलेबी की तरह घुमाकर रख दिया गया हो (देखें चित्र 5 B)। कई बार लोग इस अर्धचक्र को पूर्ण समझ कर भ्रान्ति में पड़ जाते हैं। बनावट के साथ-साथ इनके फलादेश में भी पर्याप्त अन्तर देखे गये हैं।

1 इसके सभी फलादेश पूर्णचक्र की तरह होते हुए भी इसका प्रभाव उससे आधा होता है।

2 पूर्ण चक्र जलतत्व प्रधान किन्तु स्थिर होता है ; जबकि अर्धचक्र कुछ लहरदार होते हुए चलायमान (चर संज्ञक) सा प्रतीत होता है। फ़लतः ऐसे जातक के विचारों में स्थिरता नहीं रहती, किन्तु बुद्धि तेज होती है।

3 इसके वामावर्त एवं दक्षिणावर्त नामक दो भेद होते हैं। जिसमें वाम अशुभ व दक्षिण शुभ होता है।

(3) शंख (Loop)— (चित्र 5 C)

यदि लम्ब वृत्ताकार रेखाएँ शंखाकृति बनाती हुई केवल एक त्रिभुजाकृति पर निर्भर होती हुई अंगुली के प्रथम पेरुएं पर समाप्त होती हों तो उसे शंख का चिन्ह कहते हैं। यह बहु प्रचलित चिन्ह है। जो लगभग सभी हाथों में प्राप्त होता है इसके भी दक्षिणावर्त एवं वामावर्त दो भेद होते हैं।

1 यह प्रधानतः एक नकारात्मक चिन्ह है।

2 यह चिन्ह जिस अंगुली के ऊपर पाया जाता है उस अंगुली के मूल में निवास करने वाले ग्रह की शक्ति भी कम हो जाती है।

3 यह प्रबलतः चर संज्ञक है। ऐसे जातक के विचारों में अस्थिरता, वाणी में चञ्चलता, ज्ञान में चपलता का समन्वय अधिक होता है।

4 शंख चिन्ह की प्रधानता वाले जातकों में प्रत्येक कार्य के निर्णय के प्रति उत्सुकता व उतावलापन अधिक रहता है। ये अत्यधिक भावुक व कुछ कायर प्रवृत्ति के होते हैं। बदलती हुई परिस्थिति के साथ बदल जाने में ये दक्ष होते हैं। 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' वाली उक्ति को चरितार्थ करते हुए ऐसे जातक परिवर्तनशील जीवन व विचारों को ज्यादा पसन्द करते हैं। अतः ये लोग दृढ़ संकल्प वाले नहीं होते।

5 ऐसे लोग विद्वान् या विद्यावान् होते हुए भी आर्थिक दृष्टि से विशेष सम्पन्न नहीं होते। प्रायः ऐसे जातक हृदय रोग से पीड़ित रहते हैं।

(4) सीप (Arch) (**चित्र 5 E व F**) -

शंख व चक्र के अलावा अन्य जो निशान पाया जाता है उसे सीप या शुक्ति कहते हैं। इसमें सूक्ष्म रेखाओं द्वारा कोई त्रिकोणाकृति नहीं बनती है। सीप वाले जातक सरल हृदय, साहसी, कठोर व चतुर होते हैं। आकृति के अनुसार इसके भी दो भेद हैं। ये निशान बहुत कम हाथों में पाए जाते हैं।

अल्पशुक्ति (Low Arch)—यह एक सरल रेखा के समान होती है जो कि बीच में से उठान लिए हुए होती है। (देखें चित्र 5 F)।

1 यह भी सकारात्मक अति शुभ चिन्ह है।

2 यह वायुतत्व व भूमितत्व प्रधान चिन्ह है। ऐसे जातक निष्काम प्रेमी व परोपकारी होते हैं। ये गुप्त विद्याओं व हुनर के सही जानकार होते हैं। बड़े-बड़े इंजीनियर, मैकेनिक, शोधकर्त्ता, ज्योतिषी, तांत्रिक, मांत्रिक के हाथ में यह चिन्ह विशेष रूप से पाया जाता है।

3 ऐसे व्यक्ति अत्यन्त चालाक होते हैं तथा दूसरों पर आसानी से विश्वास नहीं करते।

(5) लम्ब शुक्ति

यह शुक्ति बहुत कम हाथों में उपलब्ध होती है। इसके बीच की रेखाएँ एकदम सीधी खड़ी होकर तम्बू की आकृति को धारण कर लेती है। (देखें चित्र 5 E)।

1 इस प्रकार के चिन्ह वाले व्यक्तियों का मनोबल बहुत बढ़ा-चढ़ा होता है। तोड़-फोड़ व लड़ाई-झगड़े में इन्हें विशेष आनन्द प्राप्त होता है।

2 ये जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तेज गति से आगे बढ़ना चाहते हैं। ऐसे जातक संगीत व कला के क्षेत्र में प्रतिभावान् होते देखे गए हैं।

3 प्रायः यह चिन्ह स्थिर तथा अग्निसंज्ञक होता है। ऐसे लोग जासूसी या रहस्यमय कार्यों में ज्यादा सफलता प्राप्त करते हैं।

4 यदि यह चिन्ह तर्जनी अंगुली पर होता है तो ऐसे जातक स्वस्थ शरीर व उच्च व्यक्तित्व वाले होते हैं तथा उच्चस्तरीय ऐश्वर्य को भोगते हुए राजनीति में सक्रिय हिस्सा लेते हैं।

(6) द्विस्वभाव किंवा मिश्रित चिन्ह

यदि अंगुलियों पर शंख, चक्र, सीप के अलावा या इनसे मिल कर, कोई अन्य निशान बनें तो वे सभी निशान मिश्रित चिन्ह कहलाते हैं। (देखें प्लेट 5 D)।

1 इसका फलादेश मिश्रित होते हुए भी सबसे अलग है।

2 यह चिन्ह प्रायः द्विस्वभाव राशियों का प्रतीक है ; परन्तु मीन व वृश्चिक राशियों का विशेष रूप से प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे जातक तार्किक बुद्धि वाले व न्यायप्रिय होते हैं।

3 तर्जनी अंगुली पर यदि यह चिन्ह पाया जाय तो वे व्यक्ति अर्धनास्तिक होते हैं तथा जल-सम्बन्धी विभागों, कार्यों में रुचि बढ़-चढ़ कर लेते देखे गये हैं।

4 मध्यमा अंगुली पर यदि यह चिन्ह हो तो वह व्यक्ति घी, तेल का व्यापार व अन्य तरल पदार्थों के क्रय-विक्रय में दक्ष होता है।

5 अनामिका पर ऐसे चिन्ह वाले जातक सफल व्यापारी होते हैं तथा अनेक शाखाओं के द्वारा द्रव्य उपार्जन करते हैं।

6 कनिष्ठिका पर ऐसे चिन्ह वाले जातक सफल व्यापारी होते हैं तथा अनेक शाखाओं के द्वारा द्रव्य उपार्जन करते हैं।

7 अंगुष्ठ पर ऐसे चिन्ह वाले जातक चहुँमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं तथा कला व विज्ञान में रुचि लेने वाले होते हैं। इनको दो विपरीत कार्यों में एक साथ श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करते देख, लोग आश्चर्य चकित हो सकते हैं।

4

चिन्हों के परिवेक्ष्य में–

द्वादश राशियां, राशियों का निवास स्थान एवं उनका वैज्ञानिक विभाजन

हमारे ऋषियों ने समस्त भचक्र को मोटे तौर पर 12 भागों में विभाजित किया। आकाश में स्थित भचक्र 360° का होता है। समस्त भचक्र 12 राशियों में विभक्त होने से 30 अंशों की एक राशि होती है।

आकाश में जितने ज्योतिर्मय बिम्ब देखने में आते हैं, उनमें कुछ तो नक्षत्र और कुछ ग्रह है। भचक्र में स्थित इस राश्यावलि को ठीक से पहचानने के लिए समस्त आकाश-मण्डल की दूरी को 27 भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग का नाम एक-एक नक्षत्र रखा। आकाश में जो तारे लुप-लुप कर चमकते हैं वे नक्षत्र हैं। परन्तु जिनकी चमक शांत व स्थिर है तथा जो ज्योतिर्बिम्ब आकाश में पूर्वाभिमुख चलते हुए प्रत्येक नक्षत्रों को भोगते हैं, वे ग्रह कहलाते हैं।

अंगुलियों के अग्रभाग में ये बारह राशियां तथा करतल में ये 27 नक्षत्र सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहते हैं।

बारह राशियों के नाम

संख्या	नाम	अंश से अंश तक	अन्तरकाल घं. मि.
1	मेष	0° से 30° „	1-21
2	वृष	31° से 60° „	1-36

3	मिथुन	61° से 90°	,,	1-59
4	कर्क	91° से 120°	,,	2-19
5	सिंह	121° से 150°	,,	2-34
6	कन्या	151° से 180°	,,	2-21
7	तुला	181° से 210°	,,	2-21
8	वृश्चिक	211° से 240°	,,	2-34
9	धनु	241° से 270°	,,	2-19
10	मकर	271° स 300°	,,	1-59
11	कुम्भ	301° से 330°	,,	1-36
12	मीन	331° से 360°	,,	1-21

द्वादश राशियों के निवास स्थान :–

'जातक पारिजात' के अनुसार मेष राशि का निवास स्थान धातुकर और रत्नभूमि है। वृष का पर्वत की चोटी व जंगल है। मिथुन के निवास स्थान जूआ, रतिगृह और विहारभूमि हैं। कर्क के स्थान बावड़ी, कुआं, पोखरा आदि के किनारे हैं। सिंह का निवास सघन गुफा एवं वन-स्थली में है। कन्या का स्थान तृणों से हरी-भरी भूमि बगीचा स्त्री-पुरुषों की क्रीड़ाभूमि और शिल्पभूमि है।

तुला का सम्पूर्ण धन सार के निरूपण भूमि में, बाजार में और वृश्चिक का पत्थर, जहर तथा कृमियों के बिल में निवास है। धनु का घोड़ा (सवार चढ़ा हुआ) रथ (चक्र) स्थान में, मकर का नदियों के जल में तथा वन में (मकर का पूर्वार्द्ध वन में और अपरार्द्ध जल में) कुम्भ का घड़ा और जलपात्र रखने की भूमि में वास है, और मीन राशि का निवास मछलियों के रहने की जगह में नदी, समुद्र और विस्तृत जल की राशि में है।"

5

अंगुष्ठ के प्रिंट में लग्न रूपी राशियां

निम्नांकित चित्र को ध्यान पूर्वक देखें व मनन करें। इसमें वृक्ष, घास तथा पर्वत हैं। दूर पर्वत से कोई नदी बहती हुई आ रही है; तथा डेल्टा से टकराती हुई झील में प्रवेश कर रही है।
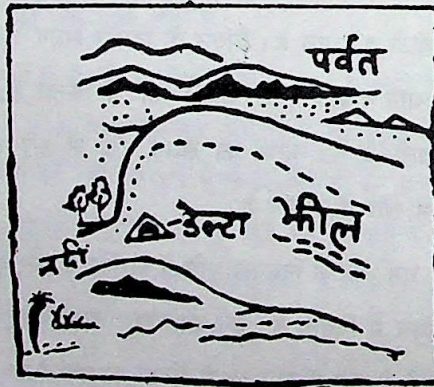
चित्र नं.– 6

यह डेल्टा झील व नदी के मिलन बिन्दु पर स्थित है। अंगुष्ठ के प्रत्येक प्रिंट (विशेषकर शंख व मिश्रित चिन्ह) को देखते समय इस चित्र को ध्यान म रखना जरूरी है। इस चित्र के आधार पर चित्र नं. 5 C व 5 D को गौर से देखें।

6

अंगुष्ठ चिन्हों का (तत्वानुसार) राशियों से सम्बन्ध

'पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशमिति भूतानि' न्यायदर्शन 1/1 सू. 13

न्याय और वैशेषिक दर्शनानुसार पृथिवी. जल, तेज, वायु तथा आकाश नामक पांच महाभूत नाम के द्रव्य पदार्थ हैं जो क्रम से घ्राण, जिह्वा, चक्षु, त्वक् व श्रोत्र आदि पांच ज्ञानेन्द्रियों के कारण हैं तथा क्रमशः गन्ध, रस, रूप, स्पर्श एवं शब्द आदि गुणों के ग्राहक हैं। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि प्राणी मात्र की उत्पत्ति इन पांच तत्वों के सामंजस्य से सिद्ध हुई है।

परंतु ज्योतिष शास्त्र में प्राणी मात्र की उत्पत्ति का हेतु पृथिवी, जल, तेज और वायु इन चार तत्वों को ही माना है तथा वायु के अन्दर आकाश (space) होने के कारण आकाश-तत्व को अलग से न मानकर उसे वायु-तत्व में ही अन्तर्भाव कर दिया है। सृष्टि में प्रत्येक जीव की उत्पत्ति इन चारों तत्वों के न्यूनाधिक सम्मिश्रण से होती है। किसी एक तत्त्व की अधिकता एवं अन्य तत्त्वों की कमी अनुपातिक न्यूनता से विशेष प्रकार की मनोवृत्ति एवं चारित्रिक विशेषताओं वाले जातक उत्पन्न होते हैं। सौरमण्डल की भू-कक्ष्या में परिभ्रमित पृथ्वी के आकाश मार्ग में चारों ओर चक्कर काटता हुआ चन्द्र-मण्डल जब किसी नक्षत्र विशेष, स्थान विशेष पर, काल विशेष में आता है तो एक विशेष तत्त्वयुक्त जातकों की उत्पत्ति का हेतु बनता है। ज्योतिष-शास्त्र में इस प्रकार से उत्पन्न

जातकों को बारह श्रेणियों में विभक्त कर अलग-अलग ज्योतिस्वरूप राश्यावली की आकृति के नामों से सम्बोधित किया गया है।

उपर्युक्त बारह राशियां जीवन के विभिन्न तत्त्वों व गुणों को प्रकट करती हैं।

तत्त्व	राशि		
अग्नि	मेष,	सिंह,	धनु
पृथिवी	वृष,	कन्या,	मकर
वायु	मिथुन,	तुला,	कुम्भ
जल	कर्क,	वृश्चिक,	मीन

चित्र नं.– 7

ब्रह्माण्ड में व्याप्त अग्नि, पृथिवी, वायु और जल इन चार तत्त्वों के आनुपातिक मिश्रण से ये सभी राशियां बनी हैं।

धातु संज्ञक	मूल संज्ञक	जीव संज्ञक
चर	स्थिर	द्विस्वाभाव
मेष कर्क तुला मकर	वृष सिंह वृश्चिक कुम्भ	मिथुन कन्या धन मीन

चित्र नं. – 8

ये राशियां धातु, मूल व जीव संज्ञा के भेद से इस प्रकार होती है।

शास्त्रकारों ने धातु संज्ञक राशियों को चर, मूल संज्ञक को स्थिर एवं जीव संज्ञक को द्विस्व-भाव राशियां मानी हैं।

तत्त्वात्मक वर्गीकरण

अंगूठे पर पाया जाने वाला राशि का चिन्ह जातक के जन्म-लग्न को बताता है।

अग्नि तत्व प्रधान राशियों के चिन्ह

अग्नि तत्व : मेष सिंह एवं धनु
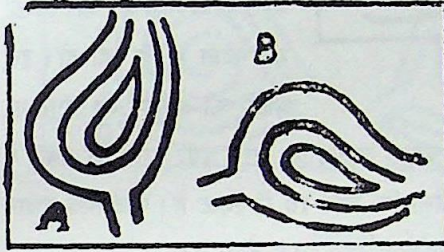
जिन चिन्हों में अग्नि व ज्वाला की लपटें उठती हुई दिखाई देती हैं वे अग्नि संज्ञक चिन्ह कहे जायेंगे। चित्र नं. 9 A में डंडे पर जलती हुई मशाल की तरह लपटें स्पष्ट प्रतिविम्बित हैं। परन्तु अंगूठे व अंगुलियों पर यह चिन्ह चित्र नं. 9 B की तरह शंखाकृति में दिखलाई देगा। अतः तब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि जातक अग्नि तत्व प्रधान है तथा प्रस्तुत प्रकरण में जातक का जन्म मेष, सिंह या धनु में से किसी एक लग्न में अवश्य हुआ है। अग्नि तत्व प्रधान व्यक्ति की अंगुलियां छोटी तथा हथेली लम्बी होती है।

चित्र नं. — 9

फलित :— अग्नि तत्व क्रियात्मक शक्ति का प्रतिरूप है। ऐसे व्यक्तियों की निर्णयात्मक शक्ति बहुत तेज होती है। ये जातक कुछ क्रोधी, हठी व असावधान प्रकृति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति उत्साही कार्यकर्त्ता होते हैं। अनुशासनात्मक प्रवृत्ति के साथ इनका व्यक्तित्व आकर्षक व रौबीला होता है। आध्यात्मिक एवं भौतिक क्षेत्र में अनुसंधान प्रक्रिया में रुचि लेने वाले ऐसे जातक किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम होते हैं। अग्नितत्व तमोगुण का जनक है। फलतः ऐसे जातक ध्वंसात्मक तथा विनाशक प्रक्रिया व साहसपूर्ण कार्यों में बढ़-चढ़ कर रुचि लेते देखे गये हैं। प्रतिक्रिया के बदले में प्रतिक्रिया करना भी इनकी एक निजी विशेषत्ता कही जा सकती है।

पृथ्वी तत्व प्रधान राशियां व चिन्ह

पृथ्वी तत्व : वृष, कन्या, एवं मकर
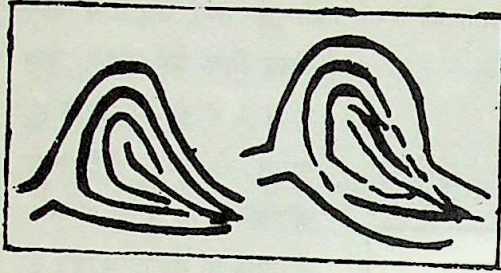
चित्र नं. – 10

पृथ्वी तत्व प्रधान चिन्हों में एक पर्वत या टेकरी जैसी दिखाई पड़ेगी, ऐसा प्रतीत होगा जैसे किसी नदी की धारा पर्वत के ऊपर से नीचे की ओर गिरती हुई मैदान में जा रही हो। इस प्रकार की आकृति को अंगूठे पर देखकर आप यह निश्चित कर लें कि प्रस्तुत जातक का जन्म वृष, कन्या या मकर में से किसी एक जन्मलग्न में हुआ है, जैसा कि चित्र 10 में स्पष्ट है। पृथ्वीतत्व प्रधान व्यक्ति की हथेली चौकोर तथा अंगुलियां मोटी किंतु छोटी होती हैं।

फलित :– यह भौतिक पदार्थों का अन्तिम ठोस रूप है। सांसारिक क्रिया-कलापों में रुचि लेने वाले ऐसे व्यक्ति यथार्थवादी होते हैं। ऐसे जातक धीमी गति से आगे बढ़ने वाले, संतुलित एवं कुशाग्र तर्क सम्पन्न प्राणी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः सत्यवादी, ईमानदार मेहनत-मजदूरी पसंद करने वाले समाज-सेवी व्यक्ति होते हैं। ये राशियां आस्तिक, बुद्धि सम्पन्न, अहिंसक एवं श्रमजीवी जातकों का प्रतिनिधित्व करती हैं। साधु, सरल व सज्जन स्वभाव के ऐसे जातक प्रायः जीवन की अंतिम अवस्था में भौतिकवाद को त्याग कर अध्यात्म क्षेत्र (वैराग्य) की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं।

नोट– (1) अग्नि तत्व प्रधान राशि एवं पृथ्वी तत्व प्रधान राशि की आकृति में मुख्य अन्तर यह है कि अग्नि तत्व राशि की आकृति हंसिये की तरह गोल होगी जबकि पृथ्वी तत्व प्रधान राशि के चिन्हों में रेखाओं की आकृति पर्वत शिखर व शृंग के समान तीखी या चपटी होगी।

(2) अग्नि-तत्व चिन्हों में मशाल की लपटें नीचे से ऊपर की ओर जाती हुई दिखाई देंगीं। इसके विपरीत पृथ्वी-तत्व प्रधान चिन्हों में रेखाओं की धारियें ऊपर से नीचे की ओर आती हुई दिखाई देंगीं।

वायु तत्त्व प्रधान राशियां व चिन्ह

वायु तत्व : मिथुन, तुला एवं कुम्भ
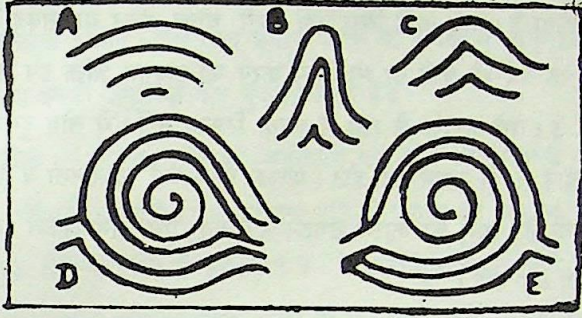
चित्र नं.–11

चित्र 11 में A, B, C चिह्नों को गौर से देखें तो ऐसा प्रतीत होगा कि किसी तम्बू के नीचे हवा भर जाने से वायु वेग के कारण तम्बू मध्य में से कुछ ऊपर उठ गया है। इन चिह्नों में वायु प्रवेश करने के लिए जगह खुली रहती है और ऐसे चिह्न वायु तत्व प्रधान राशि मिथुन, तुला व कुम्भ को इंगित करेंगे।

चित्र नं. 11 में दिखाई देने वाली दो चक्राकार आकृत्तियों D, E को भी ध्यान से देखें तो पायेंगे कि इन आकृतियों में वायु प्रवेश करने के लिए एक द्वार बना हुआ है और उसमें हवा भर गई है तथा हवा अन्दर जाकर बाहर न निकलने के कारण ये आकृतियां गुब्बारे व बवण्डर की तरह कुछ फूल सी गई है। वायु तत्व प्रधान व्यक्ति की हथेली चौकोर व छोटी होती है किन्तु अगुलियां लम्बी होती हैं व रेखाओं की बाहुल्यता होती है।

फलित :- वायु तत्व बौद्धिकता एवं मानसिक शक्ति के विकास का प्रतीकात्मक चिह्न है। ऐसे व्यक्ति सावधान, सतर्क व शीघ्रगामी होते हैं। परिवर्तनशील प्रवृत्ति के होते हुए भी ये लोग विश्वास योग्य होते हैं। वायु तत्व वाले जातक सत्य खोजी व सफल

पत्रकार होते देखे गए हैं। सही तथ्यों को प्रकट करना इनकी मौलिकता होती है। ऐसे व्यक्ति श्रेष्ठ वक्ता, अच्छे संगठनकर्त्ता एवं वाचाल होते हुए भी कुशल व्यापारी होते देखे गए हैं। सभी वायु तत्व प्रधान राशि वाले लोगों को स्वतन्त्रता व स्वच्छन्द विचरण से अत्यधिक लगाव होता है। वायु कभी स्थिर नहीं रहती, चंचल होकर यह सर्वत्र व्याप्त रहती है। अदृश्य रह कर भी कहीं पर भी वेधन करने की अद्‌भुत शक्ति इन जातकों में विद्यमान रहती है। ऐसे जातक के हाथ में रुपया टिकता नहीं। ये लोग दूसरों की गुप्त बातों को पचाने में भी सक्षम नहीं होते। फलतः इनमें धैर्य, शालीनता व गम्भीर्य की कमी पाई जाती है। वायु का कारण संगठन है। अतः ऐसे लोग अकेले रह कर अपना विकास नहीं कर पाते।

जल तत्त्व प्रधान राशियां व चिन्ह

जल तत्व : कर्क, वृश्चिक एवं मीन
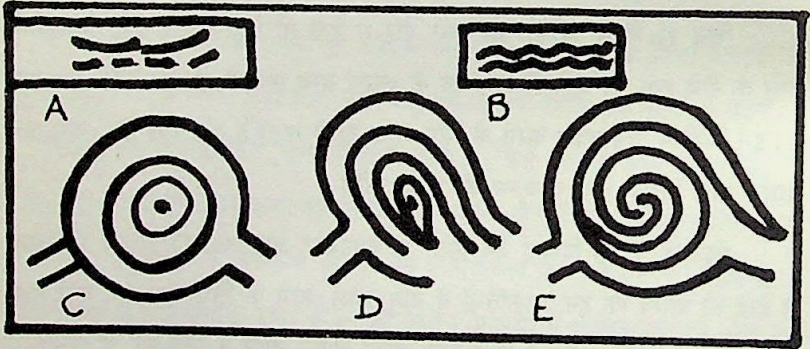
चित्र नं.– 12

जल तत्व प्रधान राशि चिह्नों को देखते ही पानी का आभास होता है। छोटी-छोटी किन्तु गोल लहरदार रेखाएँ जल लहरों का संकेत देती हैं। (चित्र नं. 12 A, 12 b)

तालाब या कुएं के पानी में पत्थर फेंकने से जिस प्रकार के गोल-गोल जल-वलय बनते हैं, ठीक उस प्रकार की चिह्नाकृति जलचर राशियों को इंगित करती हैं। चित्र 12

में C जल का एक बन्द घेरा है ; D पानी का तालाब है तथा E एक विस्तृत झील है। इस प्रकार की जलाकृतियां कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियों को प्रतिबिम्बित करती हैं।

रेखाओं के कट जाने तथा गायब हो जाने से जो छोटे-छोटे बिन्दु बनते हैं उन्हें जीवाणु समझना चाहिए। जल तत्त्व प्रधान व्यक्ति की हथेली व अंगुलियां दोनों लम्बी होती हैं तथा इनकी अंगुलियां कुछ नुकीली होती हैं।

फलित :– जल तत्व विशेषतः व्यक्तिगत भावनाओं और स्वभाव के संवदेनशील भागों पर अधिकार रखता है। जल का गुण गति और धारा को प्रवाहित करना है। ऐसे जातक प्रायः शैक्षणिक क्षेत्र में आगे होते हैं। ये अत्यधिक भावुक होते हैं तथा इनकी महत्वाकांक्षा के साथ-साथ मानसिक शक्ति भी विकसित होती है। बुद्धि की कुशाग्रता के साथ इनमें शीघ्र निर्णय करने की शक्ति बड़ी विलक्षण होती है। दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण भावना से ओत-प्रोत ऐसे व्यक्ति अत्यधिक भावुक किन्तु सच्चे प्रेमी होते हैं। कलात्मक गुणों के साथ इनकी कल्पना शक्ति अति प्रखर होती है ; परन्तु कभी-कभी इतने भावुक हो जाते हैं कि इनकी बातें यथार्थता से परे होती हैं। ऐसे जातक प्रायः ईर्ष्यालु, द्वेषपूर्ण व हीन भावना से ग्रसित होकर स्वजाति के शत्रु किन्तु अपर जाति के मित्र होते हैं। जल तत्व वाले जातक प्रायः उच्च श्रेणी के कलाकार, संगीतज्ञ, कवि लेखक, उद्योगपति या नेता होते देखे गए हैं।

7

संज्ञात्मक वर्गीकरण–

राशि चिन्हों का स्वभाव एवं स्वरूप

पिछले अध्यायों में हमने चार प्रकार के राशि तत्वों का अध्ययन किया। अब इन राशियों के स्वभाव व स्वरूप के बारे में विचार करेंगे।

विद्वान् शास्त्रकारों ने कहा है–

'धातुर्मूलजीवमित्याहुरार्या मेषादीनामोजयुग्मे तथैव।

स्वर्णाद्धातुर्मृत्तिकान्तं तृणान्तं वृक्षान्मूलं जीवकूटः स जीवः।।''

जातक पारिजात 1/19

अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर ये धातु संज्ञक; वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ ये मूल संज्ञक और मिथुन, कन्या, धनु, मीन ये जीव संज्ञक राशियां कही गई हैं। सोना से मिट्टी तक सभी भौतिक पदार्थ धातु हैं। वृक्ष से तृण तक प्राकृतिक वस्तुएँ मूल हैं एवं प्राणी मात्र जीव हैं।

'होरारत्न' में लिखा है कि धातु संज्ञक सभी राशियां चर स्वभाव की होती हैं। चर का अर्थ है शीघ्र। चर संज्ञक राशि वाले जातक जल्दी कार्य करने में समर्थ व चञ्चल स्वभाव के होते हैं।

मूल संज्ञक सभी राशियाँ स्थिर स्वभाव की होती हैं। फलतः स्थिर राशि में कार्य की स्थिरता होती है। इसलिए स्थिर कार्य इन (लग्नों) में किया जाता है।

जीव संज्ञक सभी राशियाँ द्विस्वभाव की होती हैं। द्विस्वभाव से तात्पर्य है मिला-जुला स्वभाव। इसी से द्विस्वभाव इनकी संज्ञा की गई है।

धातु संज्ञक राशियां व चिन्ह

धातु संज्ञक : मेष, कर्क, तुला एवं मकर
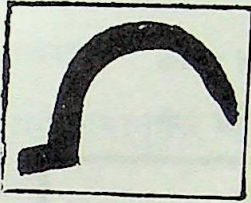
चित्र नं.– 13

धातु संज्ञक राशियों में घास काटने वाले हंसिये के आकार की तरह अर्ध-गोलाई होती है। (चित्र नं. 13)। धातु संज्ञक राशि का यह चिन्ह अन्य किसी प्रकार की गोलाई न लेकर केवल एक दिशा में ही जाती है तथा इसका हत्था सीधा होता है। हंसिया (Sickle) लोहे का होता है तथा लोहा धातु के अन्तर्गत आने के कारण इस प्रकार के सभी निशान मेष, कर्क, तुला व मकर धातु संज्ञक राशि को ही उद्‍बोधित करेंगे।

मूल संज्ञक राशियां व चिन्ह

मूल संज्ञक : वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ

चित्र नं.– 14

चित्र नं. 14 A में वृक्ष की जड़ के समान दिखाई देने वाले इस चिह्न को देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो यह जड़ जमीन के अन्दर जा रही हो।

कई बार यह आकृति कुछ गोलाई लेकर पेड़ व पेड़ के पत्ते के समान दिखाई देती है। (चित्र नं. 14 B)।

कई बार यह आकृति बिल्कुल मोरपंख के समान स्पष्ट दिखलाई देती है। (चित्र नं. 14 C)।

ये तीनों प्रकार के चिह्न मूल संज्ञक राशियां वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ को इंगित करते हैं।

जीव संज्ञक राशियां व चिन्ह

जीव संज्ञक : मिथुन, कन्या, धनु एवं मीन

चित्र नं.– 15

चित्र नं. 15 को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जीव संज्ञक राशियों में एक से अधिक जीवों का समूह होता है। सूक्ष्मदर्शी कांच से देखने पर अंगूठे पर पाए जाने वाले इन चिह्नों में सर्प, केंचुए, मछली व छोटे-छोटे कीड़ों की आकृति सी दिखलाई पड़ती हैं। जीवधारी प्राणियों की आकृतियों का प्रतिबिम्ब होने के कारण मिथुन, कन्या, धनु और मीन जीव संज्ञक राशियां प्रस्तुत चिह्नों द्वारा प्रतिभासित होती हैं।

इन सभी चिन्हों को जातक की अंगुलियों पर तथा अंगुष्ठ पर सावधानी से खोजते हुए इन चिन्हों को राशि तत्व एवं राशि संज्ञा के अनुसार अलग-अलग श्रेणी में विभाजित करें।

8

राश्यात्मक वर्गीकरण–

राशिक्रमानुसार अंगुष्ठ पर चिन्हों के निशान

अब तक हम राशियों को उनके तत्त्वों, संज्ञाओं व स्वभावानुसार विभाजित करते रहे। अब प्रस्तुत प्रकरण में यह स्पष्ट करेंगे कि कौन-सी आकृति से कौन सा राशि चिह्न स्पष्ट स्फुटित होता है ? और क्यों होता है ? यह बात टैक्नीकल डाटा देखने से स्पष्ट हो जायेगी तथा उसका जातक के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है यह समझना भी अभिप्रेत है।

मेष (Aries)—

प्रतिबिम्वित चिह्न- अर्द्ध चक्राकार स्थिति में जलती हुई मशाल की लपटें

तत्त्व—अग्नि	**गुण**—तमोगुण	**निवास**—धातु भूमि
स्वभाव—चर	**स्वामी**—मंगल	प्रभावित अंग—मस्तक

चित्र नं.–16, 17, 18

मेष राशि का निवास धातु में है। चित्र नं. 17 में रेखाओं की अर्ध चक्राकार हंसिया जैसी स्थिति होने से यह चिह्न धातु संज्ञक राशि को उद्बोधित करता है ; परन्तु मशाल जैसी दिखाई देने वाली लपटें अग्नि तत्त्व को प्रकट करती हैं। अब मशाल की लपटें चलायमान होने से यह चर स्वभाव को भी प्रकट करती हैं। फलतः द्वादश राशियों में धातु संज्ञक, चर स्वभाव व अग्नि तत्त्व वाली यदि कोई राशि है तो वह केवल मात्र मेष राशि ही है। अतः प्रस्तुत चिह्न में सभी लक्षण (मशाल व चक्राकार हंसिया) घटित होने के कारण यह मेष राशि का ही चिह्न सिद्ध होता है। (देखें चित्र नं. 18)।

फलित-पक्ष

यह काल चक्र की प्रथम राशि का चिह्न है। यह **संघर्षात्मक प्रवृत्ति** का संकेत देता है। नित नये-नये विचार और नई गतिविधियों की ओर दौड़ने की इनको एक ललक सी रहती है। ऐसे लोग अधीर रहते हैं और इनकी गतिविधियां या कार्यकलाप उतावलेपन के होते हैं।

मेष में जंगी घोड़ों जैसा बल और ताकत है जिसने युद्ध की दौड़ अभी शुरू की है। **चर स्वभाव** के कारण यह जल्दबाज है। **तमोगुण** के कारण यह अविवेकी है। **मंगल** का प्रभाव होने के कारण मेष लग्न में जन्मे जातक वीर व हिम्मती होते हैं। मेष की भावना बेदर्द और कठोर है।

मेष राशि वाले चिह्नों का प्राकृतिक स्वभाव साहसी, अभिमानी व पौरुषशाली पुरुषों का होता है। कोई जरा सी भी विपरीत बात कह दे तो इनको सहन नहीं होती है। अग्नि तत्त्व होने के कारण क्रोध करना, टक्कर मारना, आक्रमण करना, चुनौतियों का सामना करना इनकी सहज प्रवृत्ति होती है। इसी आन्तरिक **तमोगुण** के कारण इन्हें जीवन में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

ऐसे जातक साहसिक कार्यों में रुचि रखते हैं। संगठनकर्त्ता, नेतृत्वकर्त्ता, जासूस, इन्सपेक्टर, शिकारी, ज्वलनशील पदार्थ, तांबा धातु, फोटोग्राफर, व टैक्नीकल कार्यों में ऐसे व्यक्ति सफल देखे गए हैं।

वृष (Taurus) —

प्रतिबिम्बित चिह्न–पर्वत, बहती नदी और भूमि में जाते हुए मूल, मोरपंख या पेड़।

तत्त्व–पृथ्वी	**गुण**–रजोगुण	**निवास**–पर्वत की चोटी
स्वभाव–स्थिर	**स्वामी**–शुक्र	**प्रभावित अंग**–मुख

चित्र नं.– 19, 20, 21

इस राशि के चिह्न में चित्र नं. 20 में प्रदर्शित वृषभ की थुम्बी के समान या पर्वत सा चिह्न दिखलाई पड़ता है तथा ऐसा लगता है मानो उस पर से बहती हुई नदी मैदान में जा रही हो (देखें चित्र नं. 21 एवं 19) अथवा जमीन में जाती हुई वृक्ष की जड़ें, मोर पंख या वृक्षाकृति इत्यादि।

यह राशि पृथ्वीतत्व प्रधान, स्थिर स्वभाव वाली एवं पर्वत की चोटी पर निवास करती है। परन्तु पर्वत से मैदान में जाती हुई नदी या वृक्ष की ऐसी जड़ जो जमीन में जाती हुई दिखाई देती है, मूल संज्ञक राशि को बताती है। फलतः पृथ्वी तत्व के अन्दर मूल संज्ञक स्थिर स्वभाव वाली यदि कोई राशि है तो मात्र वृष राशि। अतः प्रस्तुत चिन्ह यदि अंगूठे पर दिखलाई दे तो वह जातक 'वृष लग्न' में पैदा हुआ है ऐसा जानें।

फलित :– इस राशि का चिन्ह **'वृषभ'** (बिना जोता हुआ बैल) होने से पुष्ट शरीर, मस्त चाल, मजबूत जंघाएं बैल के समान नेत्र, अभिमानी एवं स्वच्छंद विचरण तथा शीतल स्वभाव इनकी प्रमुख विशेषता कही जा सकती है।

शरीर सुख, आनन्द और विषयासक्ति इस राशि के मूल भाव हैं। यह राशि भूमितत्त्व प्रधान है। फलतः इसका प्राकृतिक स्वभाव आवास, भोजन और भोग है। ऐसे जातक भौतिकवादी होते हैं तथा पृथ्वी से सम्बन्धित कार्य कलापों में रुचि लेते हैं। पृथ्वीतत्व व रजसूगुण के कारण कृषि और दुग्ध के द्वारा प्रायः मानवीय जीवन का भरण-पोषण करते हुए देखे जाते हैं।

वृष राशि का स्थिर-स्वभाव है। फलतः ऐसे जातक अपनी रुचि की बढोत्तरी के लिए क्रियाकलापों में किसी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर नहीं चाहते। चरित्र, नियम ईमानदारी, आज्ञापालन व सेवाभाव द्वारा प्रभावित करना इनकी निजी विशेषता है।

ऐसे जातक को यौवन काल में ही भविष्य संवारने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। सैक्स के मामले में बहुत ही लचीले स्वभाव के होने के कारण मन पर इनका नियन्त्रण सम्भव नहीं। ऐसे जातक शृंगारप्रिय तथा कला में रुचि लेने वाले व्यक्ति होते है। उत्तम व मिष्ठान्न भोजन के शौकीन होते हुए भी खुशबूदार वस्तुओं के बड़े रसिक होते हैं।

समाज सेवक, बैंकर, खजाञ्ची, मुनीम, किसान, माली, सजावटकर्त्ता, श्रमजीवी, गायक, अभिनेता, औषध-निर्माणकर्त्ता, वस्त्र विशेषज्ञ, वैद्य, नृत्य व राजनीति इत्यादि इनके रुचिकर कार्यकलाप है।

मिथुन (Gemini)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह– हवा, बवडंर और सूक्ष्म जीव।

तत्व—वायु **गुण**—सतोगुण **निवास**—रति स्थान, विहारभूमि

स्वभाव—द्विस्वभाव, **स्वामी**—बुध **प्रभावित अंग**—वक्षः स्थल

चित्र नं.—22, 23, 24

मिथुन राशि के चिन्ह में वायु से फूला हुआ गुब्बारा या कोई वस्तु, हवा से भरा हुआ तम्बू या बवंडर दिखलाई पड़ता है। सूक्ष्मदर्शी कांच से देखने पर इन चिन्हों में सांप, केंचुए, मछली व अन्य कीड़े जैसे छोटे-छोटे जीव दिखलाई पड़ेंगे।

वायुतत्व प्रधान राशियों में जीव संज्ञक यदि कोई राशि है तो केवल मिथुन। मिथुन राशि द्विस्वभाव की होती है तथा रतिस्थान में रहती हैं। अतः एक से अधिक प्राणियों की संख्या होने की भी अन्तर्गर्भित सूचना देती है।

फलित :– मानवीय प्रतीक की यह पहली राशि है। मिथुन राशि में मन और रुचि का सुन्दर समन्वय है। इसका प्राकृतिक स्वभाव आनन्द, सुख की प्रवृत्ति एवं उत्सुकता की भावना है।

मिथुन राशि में वायुतत्व है ; वायु कभी स्थिर नहीं रहती। विचारों च भावों को पकड़ने की अद्‌भुत शक्ति इस राशि में है। जिस प्रकार से वायु किसी भी संकीर्ण क्षेत्र में प्रविष्ट हो सकती है उसी प्रकार मिथुन राशि में अपने बुद्धि-बल के द्वारा तह तक पहुंचने की विलक्षण क्षमता होती है।

मिथुन राशि जोड़ने वाली है। इस राशि वाले जातक दूसरों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए लालायित रहते हैं। इसका स्वामी बुध है। अतः ये व्यापार वृत्ति वाले जातक होते हैं। इस चिन्ह में यदि वक्रता दिखाई दे तो बेईमानी, झूठ की वृत्ति, ठगी व जालसाजी आदि अवगुण उस जातक में सहज ही आ जायेंगे।

मिथुन **द्विस्वभाव राशि** होने के कारण ऐसे जातक के विचारों में अस्थिरता तथा संगति का असर ज्यादा होता देखा गया है। दूसरे लोगों के प्रभाव व आकर्षण क्षेत्र में शीघ्र ही आ जाना इनकी सबसे बड़ी कमजोरी कही जा सकती है। यह राशि दिवाबली, मध्यम सन्तति और शिथिल शरीर का प्रतिनिधित्व करती है। इस राशि वाले जातक वाक्‌पटु, शान्त व गम्भीर स्वभाव वाले होते हैं। अध्ययनशीलता के साथ व्यापारिक बुद्धि एवं अन्तर्मुखी प्रतिभा वाले ये जातक सरल स्वभाव के होते हैं।

शिक्षक, रिसर्च स्कालर, कुशल व्यापारी, दक्ष वक्ता, सम्पादक रिपोर्टर, डाक्टर ज्योतिषी, वकील, डाकिया, गुप्तचर, प्रेमी, मनोवैज्ञानिक होना इनके रुचिकर व्यवसाय हैं।

कर्क (Cancer)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह—चन्द्राकार स्थिति और जल वलय

तत्व—जल **गुण**—तमोगुण **निवास**—बावड़ी, कुंआ, पोखर

स्वभाव—चर **स्वामी**—चन्द्र **प्रभावित अंग**—हृदय

चित्र नं.— 25, 26, 27

यह जल तत्व प्रधान राशि पानी के घुमावदार घेरे द्वारा प्रकट होती है। जल-वलय की यह आकृति चक्राकार (हंसिया जैसी) स्थिति में दिखलाई देती है। यह चर स्वभाव की होने की वजह से चञ्चल व चलायमान जल-तरंगों को भी प्रतिबिम्बित करती है। (देखें चित्र नं. 26, 27)। जलतत्व प्रधान राशियों में चर स्वभाव वाली धातु संज्ञक राशि यदि कोई है तो कर्क। इस राशि के निवास स्थान (कुंआ, बावडी, पोखर आदि) भी कई बार इन अमिट चिन्हों में स्पष्ट दिखलाई देते हैं।

फलित :— यह जलतत्व की प्रथम और कालचक्र की चतुर्थ राशि है। जल की तरह जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने की लालसा इनकी निजी विशेषता है। फैलने में, गति बढाने में, विकसित होने में अपनी अनुभूतियों और भावनाओं को क्रियात्मक एवं रचनात्मक **रूप** देने में कर्क लग्न वाले सबसे तेज होते हैं।

तमोगुण होने के कारण, हठीपन, जिद्द तथा अहं प्रदर्शन करने की भावना इनमें प्रतिपल कायम रहती है। इस राशि का स्वामी मन का कारक ग्रह चन्द्रमा है। फलतः ये संवेदनशील होते हैं। चर राशि होने के कारण इनमें कल्पना शक्ति सतत सक्रिय रहती है।

किनारे-किनारे चलना, समझ-बूझकर आगे बढ़ना, बार-बार चक्कर लगाना, चारों ओर आच्छादित होना इनका प्राकृतिक स्वभाव है। केकड़ा स्वजाति का शत्रु होता है तथा इसकी पकड़ बहुत मजबूत होती है। शत्रु यदि इसकी पकड़ में आ जाय तो उसका बचना मुश्किल है। यह स्त्री संज्ञक राशि है, अतः जरा सा भी विपरीत कार्य हो जाय या कुछ संकट आ जाय तो इस राशि वाले व्यक्ति चंचल हो उठेंगे। इस राशि वाले व्यक्ति को खाने में नमकीन स्वाद ज्यादा पसंद होता है। ऐसे व्यक्ति चञ्चल व जलप्रिय होते हैं।

इन लोगों की कल्पनाशक्ति तीव्र होने के कारण ये लोग अच्छे लेखक, सुन्दर कवि, महान् दार्शनिक, उच्च कोटि के साहित्यकार, श्रेष्ठ भविष्यवक्ता, अभिनेता, नाविक, अनुसंधानकर्त्ता, भावुक, राजनेता, नमक व रत्नों के व्यापारी, खेती, मशीनरी कार्यों में रुचि लेते हुए जल सम्बन्धी कार्यों में प्रवीण पाये जाते हैं।

सिंह (Leo)—

प्रतिबिम्वित चिह्न– मशाल और भूमि में जाते हुए मूल, मयूर पुच्छ या वृक्ष

तत्व–अग्नि	**गुण**–रजोगुण	**निवास**–सघन वनस्थली
स्वभाव–स्थिर	**स्वामी**–सूर्य	**प्रभावित अंग**–उदर

चित्र नं.– 28, 29, 30
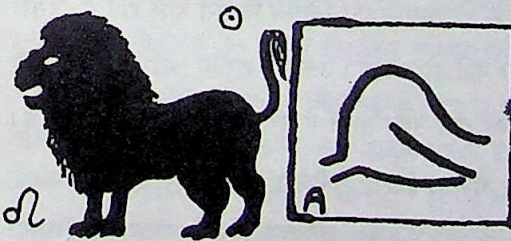
यह अग्नितत्व प्रधान तेजस्वी राशि है। जलती हुई मशाल जिसकी लपटें स्थिर हों और वृक्ष की ऐसी जड़ जो कि जमीन में जा रही हो, सिंह राशि के चिन्ह को स्पष्ट बोधित करती हैं। मोर पंख या वृक्ष भी इनमें दिखाई पड़ते हैं।

मेष राशि में अग्नि की लपटें गोलाकार (धातु तत्व युक्त हँसियां जैसी) स्थिति में रहती हैं, परन्तु इसमें लपटें मुड़ी हुई होंगीं। (देखें चित्र 9 B) स्थिर स्वभाव वाली सिंह राशि सघन वनस्थली में निवास करने वाली एवं मूल संज्ञक है। अग्नितत्व में मूल संज्ञक राशि यदि कोई है तो मात्र 'सिंह'।

फलित शक्ति व न्याय से आसक्त अग्नितत्व वाली इस राशि का प्रतीक चिन्ह 'सिंह' है। 'सिंह' जंगल का राजा होता है तथा शक्ति से युक्त है। अतः यह श्रेष्ठता, उत्कर्ष, वैभव, राज्याधिकार व जन्मजात शूरवीरता की प्रतीक राशि है।

निर्भीक, उदार, अभिमानी, व ओजयुक्त पौरुष इसका प्राकृतिक स्वभाव है। यह राशि स्थिर स्वभाव वाली है। फलतः ऐसे लोग सैद्धान्तिक होते हैं। हिम्मत हारना या घबरा जाना इन्होंने सीखा ही नहीं।

इस राशि का अधिपति आत्माकारक ग्रहराज सूर्य है। अतः सिंह लग्न प्राप्त जातक में आत्मशक्ति गजब की होती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी विचलित नहीं होते।

शासन व प्रभुत्व प्रदर्शन में रुचि रखने वाले ये लोग भक्ष्याभक्ष्य का विचार नहीं रखते। सिंह राशि चतुष्पद, शीर्षोदय व दिवाबली है। रात्रि के कार्य-कलाप इनके अनुकूल नहीं कहे जा सकते हैं। ऐसे जातक स्वेच्छाचारी एवं स्वतन्त्र विचारों वाले होते हैं। दूसरों के अधीनस्थ रहकर इनकी प्रगति नहीं हो सकती। उत्साही, शूरवीर, क्रोधी व हठी होने के साथ-साथ ऐसे लोग शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्णतः सक्षम व समर्थ होते हैं।

पुलिस विभाग, गुप्तचर व अपराध शाखा, रौबीले व परिश्रम पूर्ण साहसिक कार्य, डकैती, शिकार, खेल, सेना, जज, वकालत, ठेकेदारी, जंगलात, भू-सर्वेक्षण एवं वन-विभागों के कार्य इस राशि वाले जातकों के लिए अनुकूल व सफल क्रिया-कलाप हैं।

कन्या (Virgo)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह – पर्वत और नदी में जीव।

तत्त्व – पृथ्वी **गुण** – सतोगुण **निवास** – हरे पर्वत

स्वभाव – द्विस्वभाव, **स्वामी** – बुध **प्रभावित अंग** – कटि

चित्र नं. – 31, 32, 33

इस राशि चिन्ह में पर्वताकृति दिखाई देती है। पर्वत पर से जल की धारा नीचे की ओर जाती हुई सी प्रतीत होगी। सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखने पर नीचे की ओर जाती हुई इन धाराओं (रेखाओं) में सांप या छोटे-छोटे जीवाणु तैरते हुए दिखाई देंगे।

इन राशि चिन्हों में छोटे-छोटे जीवाणु होने से यह जीवसंज्ञक एवं द्विस्वभाव है। तथा जीवसंज्ञक राशियों में पृथ्वीतत्व वाली केवल 'कन्या राशि' ही है। अतः इस प्रकार की आकृति चिन्ह का होना कन्या लग्न की स्थिति को बताता है।

फलित – कन्या शारीरिक संवर्धन, स्वास्थ्य, विज्ञान की राशि है। **पृथ्वीतत्त्व** होने के कारण सांसारिक वस्तुएं, आनन्द व भोग की प्रवृत्ति के साथ यथार्थता का समन्वय इनकी निजी विशेषता है। इसका **प्राकृतिक स्वभाव** विद्याध्ययन व शिल्प कला है।

यह राशि **पिंगल वर्ण** व **स्त्रीसंज्ञक** है। इसका चिन्ह सौन्दर्य, कला, प्रेम व सेवा भाव का प्रतीक है। इस राशि में जन्मे जातक सुन्दर व चतुर होते हैं। प्रायः कन्या लग्न वाले व्यक्ति उच्च कोटि के विद्वान् होते हैं। इनकी लेखनी में शक्ति होती है तथा ये चहुँमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं। अनुभव में यह देखा गया है इन लोगों की दाढ़ी भरपूर नहीं आती तथा इनमें शुक्राणुओं की कमी भी होती है।

द्विस्वभाव राशि होने के कारण इनका स्वभाव चंचल होता है। स्त्रीयोचित सुन्दरता, कोमलता, लज्जा एवं वाणीमाधुर्य इनकी निजी विशेषताएँ हैं। यह राशि **सतोगुण** प्रधान होने के कारण कभी-कभी इनकी आध्यात्मिक प्रवृत्तियां बलवान होने पर ये उच्च कोटि के संत महात्मा व साधु भी बन जाते हैं। एक पुरानी किंवदन्ती है कि **जिस स्त्री में पुरुषोचित गुण पाये जाते हैं** वह **व्यभिचारिणी** होती है तथा **जिस पुरुष में स्त्रीयोचित गुण पाये जाते हैं** वह **देवता हो जाता है**। भगवान् महावीर, चैतन्य महाप्रभु, ईसामसीह, रामतीर्थ, बुद्ध इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इनकी हर क्षेत्र में सर्वांगीण उन्नति होते हुए भी यह राशि सांसारिक दृष्टि से भाग्यशाली नहीं है। प्रायः अपनी शंकालु प्रवृत्ति व भरोसे की कमी के कारण ये मुसीबत झेलते हैं। प्रेम, शांति, धैर्य व सौहार्द से किसी वस्तु को सुलझाना इनकी निजी विशेषताएं हैं।

इस राशि वाले जातक प्रायः सेवक, साधु, अध्यापक, दलाल, मनोवैज्ञानिक, साहित्यकर्त्ता, एजेन्ट, औषधज्ञाता, मंत्री, निर्माणकर्त्ता मनोविनोदी, संवेदनशील, सज्जन एवं कार्य की सूक्ष्मता को परखने वाले होते हैं।

तुला (Libra)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह - तम्बू में वायु या आंधी और चक्राकार हंसिया।

तत्त्व – वायु	**गुण** – तमोगुण	**निवास** – बाजार
स्वभाव – चर	**स्वामी** – शुक्र	**प्रभावित अंग** – बस्ति

चित्र नं. – 34, 35, 36

हंसिये (sickle) का हत्था तथा हंसिये की तरह गोलाकार घेरा तथा उस घेरे में वायु का प्रवेश होकर बवंडर की तरह फैलाव करने वाली चिन्हाकृति, तुला राशि के चिन्ह को उद्‌बोधित करती है।

यह चर संज्ञक राशि होने से इसमें वायु की गति दिखाई देती है। शरीर से अपान वायु निकालने वाले अंग पर भी इसका अधिकार है। चर स्वभाव, धातु संज्ञक व वायुतत्त्व वाली एक मात्र 'तुला राशि' ही इस प्रकार के फिंगर प्रिंट को प्रभावित करती है।

फलित– इस राशि का चिन्ह तुला (तराजू) है। तराजू दो वस्तुओं के संतुलन का परीक्षण करते हुए हल्की व भारी वस्तु का बोध कराती है। अतः इस राशि वाले व्यक्ति की संतुलन शक्ति भी गजब की होती है। सन्तुलित भाव, न्याय, समानता, आज्ञा, तुलनात्मक परीक्षण व समीक्षात्मक भावों की अभिव्यक्ति तुला राशि द्वारा होती है। 'तराजू' वैसे व्यापार का परिचायक है। इस राशि वाले कुशल व्यापारी होते हैं तथा लोक व्यवहार में चतुर होने के कारण इनको व्यापारिक सफलता शीघ्र मिलती है।

तुला वायुतत्त्व प्रधान चर संज्ञक एवं पश्चिम दिशा की स्वामिनी होती है। चूंकि वायु कभी स्थिर नहीं रहती, अतः इसका स्वभाव भी लचकदार व चंचल होता है। इनका मस्तिष्क क्रियाशील व बुद्धि संतुलित होती रहती है। तुला राशि बुद्धितत्त्व में पूर्ण सजग है। अतः ऐसे जातक ज्ञान प्रिय, कुशाग्र बुद्धि, सम्पादक व दक्ष राजनीतिज्ञ होते हैं।

इनमें दूर की सोचने की क्षमता विद्यमान रहती है। ऐसे व्यक्तियों की दिमागी उपज बहुत तेज होती है तथा कला, विज्ञान व मशीनरी के कार्य में रुचि रखते हैं। इसका मालिक शुक्र होने से ऐसे व्यक्ति सैक्स के मामले में बहुत ही रंगीले होते हैं तथा लड़कियां अकारण ही इनके प्रति आकर्षित होती रहती हैं।

ऐसे व्यक्ति प्रायः सफल न्यायाधीश, निदेशक, राजनीतिज्ञ, साहित्यप्रेमी, सेक्रेटरी, स्मगलर, अभिनेता, सर्कस-मास्टर, पंच, सरपंच व प्रधान होते देखे गये हैं।

वृश्चिक (Scorpio)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह– जल की चक्री या तालाब और भूमि में जाते हुए मूल, मयूर पिच्छ, वृक्ष या बिच्छू।

तत्त्व–जल **गुण**–रजोगुण **निवास**–वृक्ष, कृमियों के बिल

स्वभाव–स्थिर **स्वामी**–मंगल **प्रभावित अंग**–लिङ्ग

चित्र नं. – 37, 38, 39

चित्र नं.– 40

जल वलय अथवा तालाब, जिसमें पानी स्थिर हो। जमीन में प्रवेश करती हुई जड़, वृक्ष, मोरपंख अथवा स्वयं बिच्छू की आकृति का प्रतिबिम्ब इस चिन्ह की विशेषता है।

मूलसंज्ञक, स्थिर स्वभाव वाली, जल-तत्व युक्त एक मात्र राशि 'वृश्चिक' ही है। यह बिच्छू जैसी आकृति में भी कभी-कभी दिखलाई पड़ती है।

फलित–वृश्चिक राशि का चिन्ह **'डंकदार बिच्छू'** है। ऐसे जातक सहस्त्र चक्षुओं से किसी वस्तु का अवलोकन करते हैं तथा वस्तु की बारीकी को सहज ही पकड़ कर अपने काम की वस्तु उसमें से शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। बिच्छू के आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली है। विष की तीक्ष्णता उत्तरार्द्ध में है। अतः इस

राशि वाले व्यक्तियों के जीवन का पूर्वार्द्ध साधारण होता है, किन्तु जीवन के अंतिम दिनों में ये भरे-पूरे व सर्व प्रभुत्व सम्पन्न बन जाते है। डंक मारना, डंसना, जलन पैदा करना, दुःख पहुंचाना, विच्छेद, विभाजन कराना तथा राग-द्वेष व ईर्ष्या में लिप्त रहना इनका प्राकृतिक स्वभाव है।

वृश्चिक राशि स्थिर स्वभाव है तथा डंक मारने की प्रवृत्ति इनमें मूल रूप से है। वृश्चिक दुःखान्तता का प्रतीक है। यह कुकर्मों का परिणाम है। फिर भी इनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय शक्ति विद्यमान रहती है। न्याय, विश्लेषण और विभेदकारी बुद्धि तीक्ष्ण होती है। वृश्चिक में घमण्ड की अभिव्यक्ति विशेष रहती है। यद्यपि लक्ष्य की पूर्ति के लिए इनमें धैर्य-शक्ति है तथापि घमण्ड, जलन, डाह व ईर्ष्या की भावना भीतर ही भीतर धधकती रहती है।

इस राशि वाले सज्जन रात्रि में अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं ; परन्तु घटनाचक्र के मोड़ से ये शीघ्र ही काबू में आ जाते हैं। इनको प्रायः तिक्त (खट्टा) स्वाद पसंद होता है तथा खाना खाते वक्त नीबू का प्रयोग ज्यादा पसन्द करते हैं।

ऐसे जातक क्रान्तिकारी, आलोचक, लेखक, गणितज्ञ, साहसी अनुसंधानज्ञ, इंजीनियरिंग, एलोपैथी, ठग, जादूगर, पुलिस अधिकारी दार्शनिक रूप में अधिक सफल पाये जाते है।

धनु (Sagittarius)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह– मशाल की लपटें और अन्य जीवाणु।

तत्व—अग्नि | **गुण**—सतोगुण | **निवास**—घोड़ा, रथ

स्वभाव—द्विस्वभाव | **स्वामी**—गुरु | **प्रभावित अंग**—जंघा

चित्र नं.– 41, 42, 43

जलती हुई मशाल की लपटों के भीतर, सर्प या केंचुए का जोड़ा, मछलियां या अन्य प्राणधारी जीवों की उपस्थिति वाला चित्र नं. 42 में प्रदर्शित चिन्ह धनु राशि को उद्‌बोधित करता है।

यह चिन्ह जीवसंज्ञक, द्विस्वभाव एवं अग्नि तत्व प्रधान होने से मात्र 'धनुराशि' को ही प्रकट करता है।

फलित– इस राशि का चिन्ह 'प्रत्यंचा चढ़ा हुआ धनुष है। ऐसे व्यक्ति लक्ष्य वेधन में पटु होते हैं। इनके जीवन का एक निश्चित लक्ष्य होता है तथा बड़े दत्तचित्त होकर एकाग्रता से अपने कार्य को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं।

धनुराशि अग्नितत्व और सतोगुण की प्रतीक राशि है। इसका ऊपरी हिस्सा मनुष्याकृति और बाकी घोड़े की आकृति है। मुखाकृति मनुष्य के मस्तिष्क एवं बौद्धिक क्षमता की प्रतीक है। अश्व शक्ति, तीव्रता एवं क्रियाशीलता व दोहरे व्यक्तित्व के कारण द्विस्वभाव का प्रतीक है। धनुराशि का प्राकृतिक स्वभाव विधाध्ययन व धार्मिक मनोवृत्ति है। बृहस्पति के कारण इनके लक्ष्य ऊंचे एवं स्पष्ट होते हैं। सत्य की प्राप्ति, अनन्त ज्ञान की खोज, जीवन का रहस्य ढूंढना इनकी सहज प्रवृत्ति होती है।

ऐसे जातक महत्वाकांक्षी होते हैं तथा इनमें बड़े गजब की नेतृत्व शक्ति होती है। सभा-सम्मेलन में ये बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। मित्रों के हिसाब से ये श्रेष्ठतर मित्र साबित हो सकते हैं। ये स्पष्ट वक्ता होने से यथार्थता पर जोर देते हैं।

इस राशि वाले व्यक्ति घुड़सवार, फौजी, तीरन्दाज, निशाने बाज, अध्यापक, शिक्षा के कार्य, मन्त्रित्व, कानून-शिक्षा, धर्माध्यक्ष, खिलाड़ी, उपदेशक, दार्शनिक, बैंकर, खगोल-ज्ञाता, जलपोत वाहक, एवं उद्‌घोषक होते हैं।

मकर (Capricorn)—

प्रतिबिम्बित चिह्न– पर्वत तथा मैदान की ओर बढती हुई नदी तथा चक्राकार हंसिया।

तत्त्व–पृथ्वी **गुण**–तमोगुण **निवास**–जल-थल में

स्वभाव–चर **स्वामी**–शनि **प्रभावित अंग**–घुटना
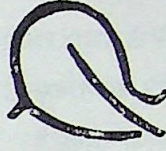
चित्र नं.–44, 45, 46

पर्वत से जमीन की ओर बहती हुई जल धारा, हंसिये का हत्था एवं गोलाई युक्त रेखाकृति मकर राशि में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। पर्वत होने के कारण पृथ्वी तत्त्व युक्त, चर स्वभाव वाली किन्तु हंसिया से सामंजस्य होने के कारण धातु संज्ञक लक्षणों से युक्त यह चिन्ह एक मात्र 'मकर राशि' को ही प्रकट करता है।

फलित– इस राशि का चिन्ह मगरमच्छ है। **'मगरमच्छ'** के आंसू वाली कहावत लोक प्रसिद्ध है। मगरमच्छ के आंसू अन्दर से कुछ और बाहर से कुछ और। ऐसे व्यक्ति दीन स्वरूप व दयनीय स्थिति का बोध कराते हुए अन्तः कपटी होते हैं।

पृथ्वी तत्त्व प्रधान होने से ऐसे जातक बहुभोगी व विषय वासना में आसक्त रहने वाले होते हैं। तमोगुण होने के कारण भोजन के बाद शीघ्र आराम करने की प्रबल इच्छा रहती है।

इतना होने के पश्चात भी ऐसे लोग जिम्मेदारी से पीछे नहीं हटते। मकर में श्रम व सेवा का भाव ठोस रूप से विद्यमान रहता है। यह चर संज्ञक होने के साथ अर्धजल राशि मानी गई है तथा इसका प्रभावित अंग घुटना है। फलतः इसका निम्न मत्स्याकार अङ्ग जल के अन्दर पाया जाता है। इसका प्राकृतिक स्वभाव उच्चाभिलाषी है। इसके स्वभाव में उत्साह के साथ-साथ झगड़ालू प्रवृत्ति भी रहती है। कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति भी इनमें विलक्षण होती है, परन्तु जहां पर ये अपना पक्ष कमजोर देखते हैं वहां पर विनम्र भी शीघ्र हो जाते हैं।

चर स्वभाव होने के कारण इनका मस्तिष्क सदैव क्रियाशील रहता है। फलतः ये मननशील होते हैं। इनमें दोहरे विचार, रहस्यवाद और आध्यात्मिकता के रूप में दृष्टिगोचर

होते हैं। इनकी गुप्त शक्तियों से बहुत कम लोग परिचित होते हैं। अपने विशिष्ट प्रभाव के कारण ये लोगों पर शीघ्र छा जाते हैं। ये अपने प्रभावित कार्यक्षेत्र के एकछत्र स्वामी होते हैं तथा अपने निजी मामले में दूसरे का हस्तक्षेप कतई पसन्द नहीं करते।

इस राशि का स्वामी शनि होने के कारण इनकी उन्नति धीमी गति से होती है। ये सदैव ऊंची-ऊंची योजनायें बनायेंगे। कमाते बहुत हैं ; परन्तु पास में रुपया टिकता नहीं। यह इनकी निजी विशेषता कही जा सकती है।

निर्माता, आविष्कारक, लेखक, दार्शनिक, समाज सेवक एवं दुभाषिये व गाइड के रूप में ये लोग ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

कुम्भ (Aquarius) —

प्रतिबिम्बित चिन्ह—वायु का बवंडर और भूमि में जाते हुए वृक्ष मूल, मोरपंख व पेड़।

तत्त्व—वायु	**गुण**—रजोगुण	**निवास**—घड़ा, भूमि
स्वभाव—स्थिर	**स्वामी**—शनि	**प्रभावित अंग**—पिडण्ली

चित्र नं.—47, 48, 49

हवा से भरे हुए तम्बू या गुब्बारे की तरह इन चिह्नों का एक भाग ऊपर उठ जाता है। वायु का बवंडर वायुतत्व को इंगित करता है, परन्तु जमीन में जाती हुई एक वृक्ष की जड़ भी दिखलाई पड़ती है। अथवा वायु से भरे हुए तम्बू या गुब्बारे की तरह प्रतीत होने वाले इन चिन्हों में कई बार ऐसा लगता है मानो एक वृक्ष या खम्भा जमीन में गड़ा हो (देखें चित्र नं. 48); परन्तु कई बार मोरपंख जैसा भी दिखलाई देता है।

वायु तत्व, स्थिर स्वभाव एवं मूलसंज्ञक लक्षणों से युक्त प्रस्तुत चिह्न 'कुम्भ राशि' के गुणों में तिरोहित होता है।

फलित– कुम्भ राशि का चिह्न 'जल से परिपूर्ण घट' है। अतः इस राशि वाले पुरुष की आकृति घड़े के समान गोल व वाणी घट के समान गम्भीर व गहरी होती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः बाहरी दिखावे में ज्यादा विश्वास रखते हैं। ये भीतर से खोखले व बाहरी दिखावे में सुन्दर दिखलाई पड़ते हैं।

कुम्भ बौद्धिक राशि है। विचार, अदृष्ट ज्ञान, गुप्तविद्या, संगठित शक्ति, परोपकार आदि इस के प्राकृतिक स्वभाव है। वायुतत्व होने के कारण प्रज्ञा एवं ज्ञान के क्षेत्र में सर्व व्यापकता होने का आभास मिलता है।

यह शीर्षोदय एवं रजोगुणी राशि है। इससे शरीर के भीतरी भागों का विचार किया जाता है। एकत्रित करना, छिपाना, गुप्त रखना, गुप्त संबध बनाना, मध्यस्थता स्थापित करना, कुम्भ राशि वालों के सहज स्वाभाविक कार्य हैं। स्थिर स्वभाव राशि होने के कारण इन सभी भावों में स्थिरता, टिकाऊपन एवं दृढ़ता है।

ऐसे जातक व्यापारिक क्षेत्र में अपनी पूंजी का फैलाव सही पूंजी से कई गुणा अधिक रखते हैं। कभी-कभी इनकी वास्तविकता को पहचान पाना बड़ा कठिन हो जाता है। ये भीतर ही भीतर सहते हैं ; परन्तु बाहर आह तक नहीं निकालते। कुम्भ शनि की मूल त्रिकोण राशि कहलाती है। शनि इसमें हर्षित रहता है।

इस राशि वाले जातक प्रायः कलाकार, कला प्रेमी, संगीतज्ञ षडयंत्रकारी, राजदूत, निदेशक, लेखक, सौन्दर्य व साहित्य प्रेमी, कुम्भकार, कैशियर, शिल्पी, हुनर के जानकार एवं खजाने के मालिक होते हैं।

मीन (Pisces)—

प्रतिबिम्बित चिन्ह– जल की चक्री या सरोवर और मछली अथवा अन्य जीवाणु।

तत्त्व–जल **गुण**–सतोगुण **निवास**–मछली

स्वभाव–द्विस्वभाव **स्वामी**–बृहस्पति **प्रभावित अंग**–पैर

चित्र नं.– 50, 51, 52

पानी का विस्तृत क्षेत्र, जल वलय, झील या तालाब, जिसमें प्रायः मुख-पुच्छ मिलित मछली अथवा केंचुए या जल-सर्प का जोड़ा या छोटे-छोटे सूक्ष्म जीवाणु दिखलाई देते हैं।

सरोवर, तालाब, झील, जल वलय इत्यादि जलतत्व प्रधान चिन्हों के प्रतीक हैं। परन्तु सर्प व मछली जीव संज्ञक चिन्ह हैं। एक से अधिक होने के कारण यह द्विस्वभाव है। फलतः प्रस्तुत चित्र जलतत्व, द्विस्वभाव व जीवसंज्ञक की एक मात्र राशि 'मीन' को ही उद्‌बोधित करता है।

फलित– मीन त्रिकोणीय जलतत्व की अन्तिम और कालचक्र की भी अन्तिम राशि है। मीन राशि का चिन्ह 'मुख-पुच्छ मिलित दो मछली हैं। यह जलतत्व सतोगुण का प्रतीक चिन्ह है। इस राशि में जन्मे जातक प्रायः मछली के समान आकर्षक व सुन्दर नेत्र वाले, चौड़े ललाट, भरापूरा चेहरा तथा लम्बे कद के मालिक होते हैं।

यह राशि रहस्यमय विचार, आध्यात्मिक बुद्धि एवं मोक्ष पथ की गामी होती है। मीन राशि वाले व्यक्ति कूटनीति, रणनीति व षड्यन्त्रकारी मामलों में एक प्रतिशत भी रुचि नहीं लेते। इनका प्राकृतिक स्वभाव दयालु व दानशीलता है। मीन में जन्मा व्यक्ति याचक रूप में, उदारता रूप में अपने पापों व कुकर्मों के लिए ईश्वर से क्षमा याचना करता रहता है। संक्षेप में यह राशि आध्यात्मिक खोज और मोक्ष की है।

ऐसे जातक ईश्वर भक्त, भविष्यवक्ता, पुजारी, समाज-सुधारक, काव्य-हास्य-व्यंग्य के लेखक, आध्यात्मिक प्रेरक प्रसंगों के रचयिता, उपदेशक, अध्यापक, जन-कल्याण, बस-परिवहन, रसायन, औषधि, रुचि, हीरे-जवाहरात, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट, विदेश-यात्रा, विदेशी व्यापार में रुचि लेने वाले व्यक्ति होते हैं।

9

अंगुष्ठ से अंशात्मक लग्न निकालना

चित्र नं.– 53

इस चित्र को ध्यान से देखें तथा पृष्ठ संख्या 40 (चित्र नं. 6) से इसकी तुलना करें। इस चित्र (नं. 53) में डेल्टा के नीचे झील के किनारे-किनारे तीन रेखाएं स्पष्ट दिखलाई दे रही हैं। ये रेखाएं अंगूठे पर तो लग्न तथा अंगुलियों पर ग्रहों के अंशों को बताती हैं। एक रेखा $2\frac{1}{2}$ अंश को बताती है। मान लो यदि ये तीन रेखाएं बृहस्पति की अंगुलि पर पाई जाती हैं तो हमें यह मानना चाहिए कि उस जातक के जन्म समय में $2\frac{1}{2}^0 \times 3 = 7\frac{1}{2}^0$ अंशों में बृहस्पति था। इसी प्रकार शनि, सूर्य व चन्द्र के अंश निकाले जा सकते हैं।

लग्न के अनुमापन में ये रेखाएं मिनटों व सैकण्डों में जन्म समय का बोध कराती हैं। मिथुन लग्न में जन्मे जातक के लिए यह एक रेखा $2\frac{1}{2}$ अंश = 10 मिनट के समय का बोध कराती हैं। अध्याय 4 में दिए गए चार्ट के अनुसार अलग-अलग लग्न के राशि चिह्नों में इन रेखाओं का समय मान अलग-अलग होगा। यह राशि-चिह्न अंगूठे के यव से जितना सटा हुआ होगा उतना ही उदीयमान लग्न को बताता है ऐसा मानें तथा अंगूठे के अग्रभाग (नोक) की तरफ ऊपर को दिखाई देने वाला चिह्न अस्ताचल को जाते हुए लग्न का संकेत चिह्न है, ऐसा जानें।

10

अंगुष्ठ से जन्म-कुण्डली बनाना

चित्र नं. – 54

प्रायः हम देखते हैं कि बहुत से लोगों को अपनी जन्म-तारीख याद होती है तथापि उन्हें अपने जन्म समय का ठीक से ज्ञान नहीं होता। जन्म समय के अभाव में जन्म कुण्डली नहीं बनाई जा सकती है। प्रस्तुत प्रकरण उन लाखों ज्योतिष प्रेमियों के लिए ज्योतिष-जगत का द्वार खोलता है जो कि सही जन्म समय के अभाव में दिव्य ज्योतिर्विज्ञान का रसास्वादन लेने में असमर्थ हैं।

पिछले अध्यायों में आपने अंगूठे पर पाये जाने वाले बारह राशियों के निशानों के बारे में पढ़ा-समझा होगा। उसी ज्ञान के आधार पर अंगूठे से जन्म लग्न, तर्जनी से गुरु, मध्यमा से शनि, अनामिका से सूर्य तथा कनिष्ठिका[1] अंगुली के प्रथम पेरुएँ से चन्द्रादि ग्रहों के राशि चिन्हों को ढूंढ निकालें।

गुरु व शनि की मदद से जन्म का वर्ष, सूर्य चिन्ह से जन्म माह, चन्द्र राशि चिन्ह से जन्म दिन तथा अंगूठे के चिन्ह से जन्म समय, मय दिन, मास व वर्ष के जन्म तारीख निकाल सकते हैं। यद्यपि यह अभ्यास श्रमसाध्य है तथापि इसमें मुख्य आवश्यकता है आपके चित्त की एकाग्रता एवं धैर्य की। जिन लोगों को केवल अपने जन्म-समय का

ध्यान रहे हमारी इस पद्धति के अनुसार कनिष्ठिका के प्रथम पेरुएं से चन्द्र-ग्रह की राशि पकड़ में आयेगी। जबकि यह बुधांगुली कहलाती है। इस अंगुली के मूल में बुध के पर्वत से बुध-ग्रह की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।

ही ज्ञान नहीं है ; उनकी जन्म-कुण्डली भी आप ऐफरेमेरिज (Ephemeris) की सहायता से बना सकते हैं। ऐसे लोगों के अंगूठे पर राशि चिन्ह को शोध कर उस चिन्ह की डिग्री निकालें। राशि चिन्ह पर डिग्री निकाल कर जन्म-कुण्डली का तरीका इस प्रकार है।

अंगुष्ठ से जन्म-कुण्डली बनाने का उदाहरण–

सबसे पहले गुरु व शनि की अंगुलियों की सहायता से जातक की अन्दाज आयु ज्ञात करें। मान लीजिये सन् 1981 में एक जिज्ञासु व्यक्ति आपके पास अपनी जन्मकुण्डली बनवाने आया, तथा आपको अपने अनुभव सूत्रों द्वारा यह ज्ञात हुआ कि प्रस्तुत जातक की आयु लगभग 32 वर्ष है।

उस जातक का जन्म उत्तरी अक्षांश 26°.20′ रेखांश 73°.04′ (जोधपुर) का है।

अब जातक की अन्दाज आयु को वर्तमान वर्ष 1981 में घटाने से (1981–32) अन्दाज जन्म वर्ष 1949 प्राप्त हो जायेगा।

उस वर्ष के ऐफरेमेरिज को देखने पर गुरू धनु या मकर व शनि सिंह राशि में प्राप्त होता है।

अब तर्जनी अंगुली पर अंश रेखाओं की गणना करें। मान लो इस प्रकार 12 रेखाएं प्राप्त होती हैं, और शनि की अंगुली पर 6 अंश-रेखा यथा $12 \times 2\frac{1}{2} = 30^\circ$

$6 \times 2\frac{1}{2} = 15^\circ$ डिग्री हैं।

अब सूर्य सिंह राशि के 5 रेखा-अंशों पर $5 \times 2\frac{1}{2} = 12^\circ.30'$ पर है।

मान लीजिये अंगूठे पर सिंह राशि का चिन्ह $2 \times 2\frac{1}{2} = 5^\circ$ डिग्री का प्राप्त होता है।

उपरोक्त सभी ग्रहों की अंशात्मक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, जब हम ऐफरेमेरिज को देखते हैं तो स्पष्ट रूप से पता चल जाता है कि जातक का जन्म दिनांक 30. 8. 1949 का ही है।

अब हमारे पास यह जानकारी प्राप्त हुई कि उपस्थित जातक का जन्म 5° डिग्री 'सिंह लग्न' 30.8.1949 का है।

लग्न-अंश से इष्टकाल निकालना–

(1) इसके लिए सबसे पहले जन्मस्थान के अक्षांश के अनुसार बने हुए लग्न-पत्र में लग्न की राशि व अंश की सीध के घटी-पल लिख लें।

(2) तत्पश्चात् जन्म दिन के सूर्य की राशि व अंश की सीध के घटी-पल उसके नीचे लिख दें।

(3) लग्न-पत्र से निकले राशि-अंश में से सूर्य की राशि-अंश घटाने पर तात्कालिक इष्ट घटी-पल में प्राप्त हो जायेगा।

(4) इस प्रकार प्राप्त घटीपलात्मक इष्ट में $2\frac{1}{2}$ का भाग (÷) करने पर घंटे-मिनट प्राप्त होंगे और उन घंटा-मिनटों में स्व-स्थानिक सूर्योदय जोड़ने पर, स्टैण्डर्ड जन्म-समय की प्राप्ति हो जायेगी।

उदाहरण–प्रस्तुत प्रकरण में जोधपुर (जन्म स्थान) के 26°.20′ अक्षांश की लग्न सारणी के अनुसार–

	घटी पल
(1) लग्न चार के 5 अंश की सीध में =	24 - 10
(2) सूर्य चार के 13 अंश की सीध में =(–)	25 - 40
घटाने पर	58 - 30 घटीपलात्मक इष्टकाल

घटी-पलात्मक इष्टकाल को घंटा-मिनटों में बदलना–

(1) सूत्र– इष्टकाल $\times \frac{2}{5}$ = घं. मि.

घटी पल

प्रस्तुत उदाहरण में = $58 \times \frac{2}{5} + \frac{30\times 2}{5} = \frac{116\text{-}0}{5}$

जोधपुर का स्वस्थानिक	=	23 घण्टा 24 मिनट
सूर्योदय	=	+ 6 घण्टा 19 ,, (स्टै . टाइम)
		योग 29 43
24 घण्टे घटाने पर 1		(–) 24 00
		5. 43 A.M. जन्मकाल स्टै. टाइम

इस प्रकार से प्रस्तुत जातक का जन्म मंगलवार दिनांक 30.8.1949 को 5.43 A.M. का होना सिद्ध हुआ।

जिसकी जन्म कुण्डली इस प्रकार से बनेगी–

लग्न	6	8	10	12	4
श. सू.	शु. के. बु.	चं.	गु.	रा.	मं.

सूर्य 4̇.13′, इष्ट 58̇.30′, लग्न 4̇.5′

---

1. 24 घंटे से अधिक संख्या आने पर प्राप्त अंकों में से 24 घटा देने पर शेष घंटे-मिनट प्रातःकाल (A.M.) के प्राप्त होंगे। 24 अंकों से कम संख्या सायंकालीन समय (P.M.) को बतायेगी।

अन्य मत–

11

अज्ञात व्यक्ति का जन्म-सम्वत् व सन् निकालना

यह पद्धति श्रमसाध्य एवं जटिल है। इसमें अभी पर्याप्त अनुसंधान की आवश्यकता है। मध्यमा-अंगुलि के मूल में उपस्थित शनि पर्वत पर प्राप्त उर्ध्व रेखाओं को गिनें। ध्यान रहे कि ये सभी रेखाएं स्पष्ट, निर्दोष व मध्यमा-अंगुलि के अन्तिम पेरुएं को स्पर्श करती हुई होनी चाहिएं।

इसी प्रकार से बृहस्पति के पर्वत पर की उर्ध्व रेखाएं गिन लें। एवं निम्न-मंगल के स्थल पर प्राप्त मंगल रेखाओं को भी गिन लें।

अब शनि पर्वत पर प्राप्त रेखाओं को $2\frac{1}{2}$ से गुणा करके गुरु पर्वत पर प्राप्त रेखाओं को $1\frac{1}{2}$ से गुणा करके दोनों स्थानों से प्राप्त संख्या में मंगल रेखाएं जोड़ दें। प्राप्त संख्या उपस्थित जातक की वर्तमान आयु होगी।

इस आयु को वर्तमान सन् में से घटायें तो जातक का जन्म सन् ज्ञात हो जायेगा। यदि ज़न्म सन् में 57 जोड़ दें तो जन्म सम्वत् ज्ञात हो जायेगा।

सूत्र = शनि रेखा $\times \frac{5}{2}$ + गुरु रेखा $\times \frac{3}{2}$ + मंगल रेखा = वर्तमान आयु

A = वर्तमान सन् − वर्तमान आयु = जन्म सन्

B = जन्म सन् + 57 = जन्म सम्वत्

12

सूर्य-रेखा से जन्म महीना निकालना

हमारे कई वर्षों के सतत अनुसंधान द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सूर्य-रेखा द्वारा जन्म मास को बताया जा सकता है। परन्तु सूर्य-रेखा के बारे में हमारे पूर्ववर्ती आचार्यों को कई प्रकार की गलत धारणाएं रही हैं जिसके कतिपय संदर्भ यहां दिये जा रहे हैं।

1 सुप्रसिद्ध हस्तरेखा विशारद कीरो के मतानुसार—'The line of Sun may rise from the line of life, the Mount of Luna, the plain of Mars, the line of head, or the line of heart.''

Cheiro

2 'Sun line starts near the Rascette and between the Mounts of Venus and the Moon, ending on the Mount of Sun.''

Saint Germain

3 The line of Sun is a vertical line rising from the upper part of the Mount of Moon and running towards the mount of Apolo.''

G. Benham

4 'The line of Sun starts close to the wrist, between the Mounts of Venus and the Moon and runs up straight to the Mount of Sun.''

Jo. Sheridan

5 'सूर्य रेखा' मणिबन्ध, चन्द्रक्षेत्र, जीवन रेखा, भाग्यरेखा, मंगल क्षेत्र, मस्तक-रेखा, व हृदय-रेखा इन सात स्थानों में से किसी से भी प्रारंभ होकर सूर्य-स्थान पर जाती है।''

लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी

---

(1). Cheiro's Language of Hand P. 142, (2) The Study of Palmistry P. 294, (3.) Laws of scientific hand reading P. 560, (4) What your hands Reveal P. 129, (5). सामुद्रिक-दीपिका पृ. 228

स्पष्ट है कि पश्चिम के सभी विद्वानों ने सूर्य-रेखा के उद्‌गम स्थल को अलग-अलग स्थानों से स्वीकार किया है तथा पाश्चात्य विद्वानों का अन्धानुकरण करने वाले परवर्ती अनेक भारतीय विद्वानों ने भी इसी मत को पुष्ट किया है ; परन्तु मेरा मत इन सभी मान्यताओं के विरुद्ध स्वतंत्र व भिन्न है।

चन्द्र-स्थल से प्रारम्भ होकर निर्विघ्न सूर्य पर्वत पर पहुंचने वाली रेखा को अगर सूर्य रेखा कह दिया जाय तो सामान्यतः कोई गलती नहीं समझी जाती है। मगर ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के सिद्धान्तानुसार यह रेखा सूर्य + चन्द्र दोनों के प्रभाव से युक्त मानी जायेगी तथा प्रायः ऐसे जातक का जन्म पूर्णिमा का होता है। उसकी जन्म-कुण्डली में सूर्य, चन्द्रमा आमने सामने होंगे या नवम स्थान पर सूर्य चन्द्र का प्रभाव होगा।

निर्दोष सूर्य-रेखा वही मानी जायेगी जिसका प्रादुर्भाव केवल सूर्य-पर्वत से ही होता है। वास्तव में सूर्य-रेखा का प्रादुर्भाव अन्य स्थानों से हो ही नहीं सकता, न होता है। हथेली के किसी भी स्थान से प्रादुर्भूत कोई रेखा यदि सूर्य-पर्वत तक पहुंचती है तो निश्चित रूप से यह एक शुभद रेखा नहीं कही जा सकती है। इसे हम सहायक भाग्यरेखा, सफलता रेखा. बुद्धि-रेखा, प्रतिष्ठा-रेखा, तेजस्वी रेखा, समृद्धि-रेखा इत्यादि नामों से अभिहित कर सकते हैं। परन्तु इन सभी रेखाओं को एक नाम सूर्य-रेखा कहने पर 'वदतो व्याघात' दोष लग जायेगा। सूर्य रेखा के लक्षण उस पर घटित भी नहीं होंगे। जिस प्रकार भिन्न-भिन्न स्थलों से प्रादुर्भूत गंगा, जमना, कावेरी, सरयू आदि नदियां एक मिलन बिन्दु समुद्र-स्थल पर पहुंचने पर भी उन सभी अलग-अलग नदियों को समुद्र नाम से अभिहित नहीं किया जा सकता, ठीक उसी प्रकार से भिन्न-भिन्न स्थलों से प्रादुर्भूत सूर्य-स्थल पर पहुँचने वाली सभी रेखाओं को सूर्य रेखा के नाम से अभिहित करना उचित प्रतीत नहीं होता।

हम जिस सूर्य रेखा की यहां चर्चा कर रहे हैं वह रेखा मूलतः अनामिका के नीचे सूर्य-पर्वत से उत्पन्न होकर हथेली के मध्य भाग में पहुंचने का प्रयास करती है ; परन्तु

प्रायः हृदय-रेखा तक ही पहुंच पाती है। सूर्य रेखा का सूर्य से सीधा सम्बन्ध है तथा यह 95% जाताकों के हाथों में पाई जाती है। यह सूर्य रेखा ही जन्म के सूर्य की स्थिति को स्पष्ट करती है। तथा जन्म का सूर्य जातक के जन्म माह को बताता है। मुझे खुशी है कि हमारे अनुसंधान केन्द्र को इस विषय में 80% से 85% के मध्य सफलता मिली है। हमारी अमूल्य शोधों को चित्र नं. 55 द्वारा प्रथम बार एकदम स्पष्ट रूप से समझाया जा रहा है। इस फार्मूले को सबसे पहले आप स्वयं अपनी सूर्य-रेखा पर घटित करें तथा फिर अपने मित्रों की सूर्य-रेखाओं का अध्ययन कर उनका जन्म माह निकालना प्रारम्भ करें। स्मरण रहे कि आप जन्म माह निकलने में उत्साह के साथ-साथ धैर्य से काम लेंगे तभी सफलता मिलेगी। मुझे विश्वास है कि प्रबुद्ध पाठक मेरी इस खोज की कड़ी को निजी शोध से आगे बढ़ायेंगे।

सूर्य रेखा की चारित्रिक विशेषता–

सूर्य-रेखा का अध्ययन करने हेतु हमें सूर्य की चारित्रिक विशेषताओं को समझना बहुत जरूरी है। सूर्य की ऋतु ग्रीष्म है। यह उत्तरायण में बलवान होता है। इसका देवता अग्नि है। यह काल पुरुष की आत्मा व ग्रहों का राजा है तथा एक दिन में एक अंश व तीस अंश एक महीने तक भोगता है। फलतः एक महीने तक एक राशि में रहता है। अंशों के बलाबल से सूर्य-रेखा की आकृति व बनावट को अलग-अलग जानना-समझना चाहिए। सूर्य पुरुष राशि में बली; किन्तु स्त्री राशि में निर्बल रहता है। यह अपनी उच्च राशि में पूर्ण शुभ, मूल त्रिकोण में $\frac{3}{4}$, अपनी स्वराशि में $\frac{1}{2}$ मित्र राशि में $\frac{1}{4}$, समग्रह राशि में $\frac{1}{8}$ अनुकूल फल देता है, परन्तु नीच राशि में अस्त होने पर एवं शत्रु राशि में स्थित होने पर शुभ फल का सर्वथा नाश करता है। इसी कसौटी पर सूर्य-रेखा की भी सम्यक् परीक्षा करें। यह वस्तुतः यश, प्रतिष्ठा, धन व विद्या की कारक रेखा है।

सूर्य रेखा व जन्म का सूर्य एवं मास

(1) **मेष राशि वाली सूर्य रेखा**– (देखें चित्र नं. 55 में 1)

ठीक सूर्य क्षेत्र व सूर्य पर्वत से उद्‌भूत यह रेखा हृदय रेखा की ओर जा रही है। यह पूर्णतः निर्दोष, सुपुष्ट व सर्वोत्कृष्ट सूर्य रेखा है। इस प्रकार की रेखा वाले जातक का जन्म वैशाख महीने (14 अप्रैल से 14 मई) में होता है। वैशाख महीने में सूर्य उच्च का होता है। मेष राशि पुरुष तत्व प्रधान सूर्य की मित्र राशि है। इस समय जन्मे जातक की सूर्य रेखा अपेक्षाकृत मोटी होती है। ऐसे जातक साहसी, धनाढ्य, खर्चीले, राजवर्गी, दूरदर्शी, एवं कुछ रक्तवर्ण की आंखों वाले होते हैं। इनके कान पर बाल होते हैं।

(2) **वृष राशि वाली सूर्य-रेखा**– (देखें चित्र नं. 55 में 2)

यह रेखा नं. 2 सूर्य पर्वत से कुछ हटकर होती है तथा अन्य पूरक रेखाओं द्वारा निर्मित होती हुई कुछ वक्र होती है। यह रेखा मेष राशि की तरह मोटी होती है। वृष, सूर्य की शत्रु राशि व स्त्री संज्ञक है। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ मास (15 मई से 14 जून) के मध्य होता है। ऐसे जातक बुद्धिमान तथा व्यापारवर्गीय होते हैं।

(3) **मिथुन राशि वाली सूर्य-रेखा**– (देखें चित्र नं. 55 में 3)

मिथुन, सूर्य की समग्रह पुरुष राशि है। यह रेखा टुकड़ों में कटी-कटी हुई सी होगी तथा सूर्य क्षेत्र पर बनी सूक्ष्म रेखाओं का झुकाव बुध क्षेत्र की ओर होगा। फलतः यह रेखा आषाढ़-माह (15 जून से 16 जुलाई) के मध्य जन्म को बताती है। ऐसा जातक कुशल कृषक, रोगी, धनवान व अधिक कन्या संतति वाला होता है।

(4) **कर्क राशि वाली सूर्य-रेखा**– (देखें चित्र नं. 55 में 4)

यह स्त्री संज्ञक होते हुए भी सूर्य की मित्र-राशि है। यह रेखा अन्त में बहुशाखी हो जाती है तथा श्रावण मास (17 जुलाई से 16 अगस्त) में जन्मे व्यक्ति को सूचित करती है। ऐसा जातक वैदिक कर्मकाण्ड को जानने वाला, आयुर्वेद का ज्ञाता, डॉक्टर, धन, स्त्री, पुत्र-संतान से युक्त, सफेद नेत्रों वाला, चंचल व चालाक जातक होता है।

(5) सिंह राशि वाली सूर्य-रेखा– (देखें चित्र नं. 55 में 5)

प्रायः दो सामानान्तर रेखाओं से बनी यह रेखा अन्त में द्विशाखी होती है। ऐसे व्यक्ति का जन्म भाद्रपद मास (17 अगस्त से 16 सितम्बर) के मध्य होता है। यह सूर्य की मूल-त्रिकोण राशि है। इस रेखा वाले जातक अभिमानी, दानी, अधिक स्त्री, पुत्र, धन वाले, नौकर, वाहन व रौबोले व्यक्तित्व वाले, तीक्ष्ण दृष्टि, लाल नेत्र व कानों पर लम्बे बाल वाले होते हैं।

(6) कन्या राशि वाली सूर्य-रेखा– (देखें चित्र नं. 55 में 6)

सूर्य पर्वत से कनिष्ठिका की ओर मुड़ती हुई यह रेखा बुध क्षेत्र से अधिक प्रभावित होने के कारण ऐसे जातक का जन्म आश्विन मास (17 सितम्बर से 17 अक्टूबर) प्रकट करती है। यह सूर्य की सम ग्रह स्त्री राशि है। ऐसी रेखां वाला व्यक्ति अल्पायु, पण्डित, अधिक कन्या सन्तति, मध्यम नौकरी या व्यापार करने वाला होता है।

(7) तुला राशि वाली सूर्य-रेखा – (देखें चित्र नं. 55 में 7)

इस काल में सूर्य पृथ्वी के अक्षांश से कुछ तिरछा व दूर हो जाने के कारण शीतल व मन्द रश्मियों को धारण करता है। फलतः इस काल में जन्मे जातक के हाथ में सूर्य-रेखा कुछ तिरछी व टुकड़ों में खण्डित होती हुई छिन्न-भिन्न अवस्था में पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति का जन्म कार्तिक मास (18 अक्टूबर से 15 नवम्बर) के मध्य होता है। तुला सूर्य की शत्रु व नीच राशि है। ऐसा व्यक्ति वाचाल, आलसी, कुटिल व धनवान होते हुए भी खर्च प्राबल्य के कारण दरिद्री सा होता है।

(8) वृश्चिक राशि वाली सूर्य-रेखा– (देखें चित्र नं. 55 में 8)

सूर्य स्थल से प्रादुर्भूत यह रेखा कुछ तिरछी होती हुई निम्न मंगल की ओर मुड़ती है। अथवा इसकी कोई शाखा मंगल क्षेत्र तक पहुंच जाती है। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष महीने (16 नवम्बर से 15 दिसम्बर) के मध्य में होता है। वृश्चिक पुरुषतत्त्व,

अग्निसंज्ञक एवं सूर्य की मित्र राशि है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति पराक्रमी ; किन्तु ईर्ष्यालु होता है। मन्त्र-शास्त्र, गुप्त विद्या एवं तीर्थाटन में रत रहता है।
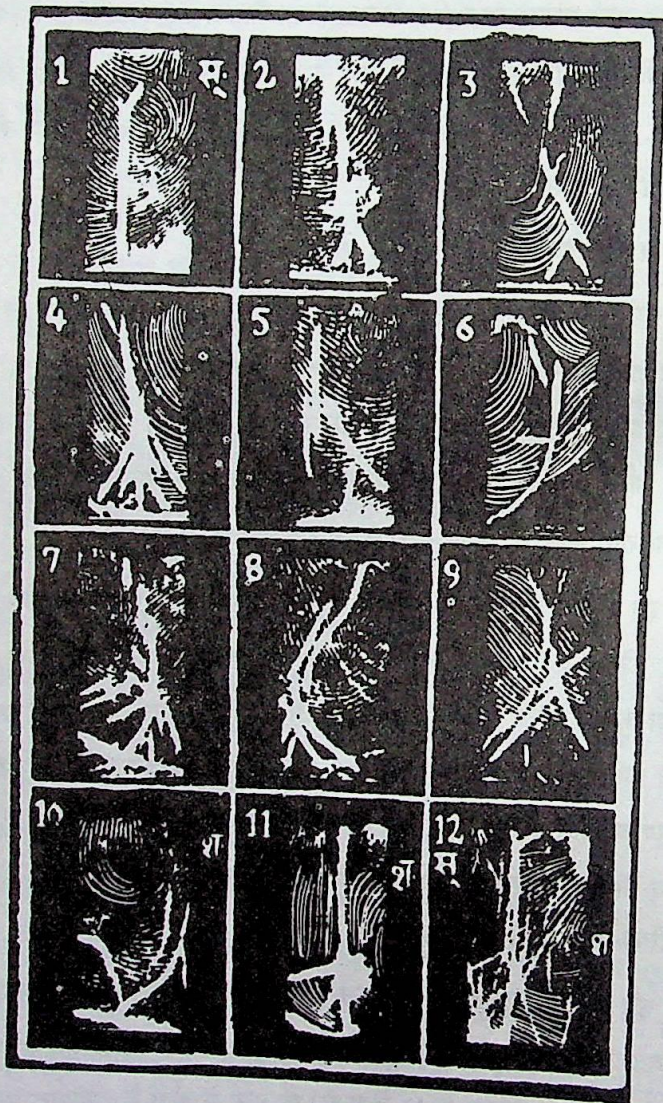
चित्र नं.–55

(9) **धनु राशि वाली सूर्य-रेखा–** (देखें चित्र नं. 55 में 9)

धनु राशि वाली सूर्य-रेखा प्रारम्भिक अवस्था में द्विशाखी होती है तथा इसकी एक शाखा गुरु पर्वत की ओर झुकी होती है। ऐसे जातक का जन्म पौष मास (17 दिसम्बर से 13 जनवरी) के मध्य होता है। धनु सूर्य की मित्र-राशि है। यह तीक्ष्ण-दृष्टि, पीले नेत्रों वाले, धनाढ्य किन्तु रोगी व्यक्ति को दर्शाती है।

(10) **मकर राशि वाली सूर्य-रेखा–** (देखें चित्र नं. 55 में 10)

इस चित्र को गौर से देखने पर पता चलेगा कि सूर्य-रेखा से कुछ शाखाएं शनि पर्वत पर विद्यमान हैं। शनि क्षेत्र प्रभावी इस रेखा वाले जातक का जन्म माघ (14 जनवरी से 12 फरवरी) के मध्य होता है। यह पुरुष संज्ञक होते हुए भी सूर्य की शत्रु राशि है। ऐसे व्यक्ति की आंखों में श्यामलता व नेत्र पीड़ा होती है ; परन्तु ये चतुर, दयालु व भक्त जातक होते हैं।

(11) **कुम्भ राशि वाली सूर्य-रेखा–** (देखें चित्र नं. 55 में 11)

रेखा नं. 10 की तरह यह भी प्रायः शनि-क्षेत्री होती है। परन्तु यह पूर्ण रूप से शनि प्रभावी, स्पष्ट व सरल रेखा होती है। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन मास (13 फरवरी से 14 मार्च) के मध्य होता है। ऐसा व्यक्ति वाहन, नौकर, धन-धान्य से युक्त संघर्षशील, गुणवान, एवं प्रभावी होता है।

(12) **मीन राशि की सूर्य-रेखा–** (देखें चित्र नं. 55 में 12)

यह रेखा बहु-रेखाओं से युक्त होती हुई गुरु क्षेत्र से प्रभावी होती है। ऐसे जातक का जन्म चैत्र मास (15 मार्च से 13 अप्रैल) के मध्य होता है। यह सूर्य की मित्र राशि

नोट : जनवरी से जून तक रवि उत्तरायण में होने से सभी सूर्य रेखाएँ मोटी होंगीं, परन्तु जुलाई से दिसम्बर वाली रवि दक्षिणायन में, ये रेखाएँ अपेक्षाकृत पतली होती हैं (देखें चित्र नं. 55)। कई बार पौष व माघ में जन्मे जातक की सूर्य-रेखा दिखलाई नहीं पड़ती है। इसके लिए प्रिंट आवश्यक है।

है। ऐसा व्यक्ति आस्तिक बुद्धि वाला, गुरु, देवता व ब्राह्मणों में भक्ति रखने वाला, पीत वर्ण, पीत-नेत्र वाला, धनवान व श्रद्धालु होता है।

अन्यमत :–

1. दोनों हाथों की तर्जनी अंगुली पर उपस्थित द्वितीय व तृतीय खण्ड पर प्राप्त सभी उर्ध्व रेखाओं को गिनें। उन्हें 23 से गुणा करके 12 का भाग दें। शेष बचे 1 से मेष, 2 से वृष, 3 से मिथुन और 0 से मीन के सायण सूर्य को जानें।

$$\text{सूत्र} = \frac{\text{तर्जनी द्वि + तृ पर्व रेखाएं} \times 23}{12} = \text{जन्मकालिक सायण सूर्य}$$

2. दक्षिण हस्त की मध्यमा व कनिष्ठिका के द्वितीय व तृतीय खण्ड पर प्राप्त सभी उर्ध्व रेखाओं को गिनें। उनमें 100 जोड़ें तथा 12 का भाग दें। शेष बची संख्या ही सूर्य की राशि होगी।

$$\frac{(\text{मध्यमा द्वि0 + तृ0 + कनिष्ठका द्वि0 + तृ0}) + 100}{100} = \text{जन्मकालिक}$$

सायण सूर्य

3. एक अन्य पाश्चात्य मतानुसार चित्र नं. 67 में प्रदर्शित राशि-चिह्न में से यदि कोई चिह्न सूर्य पर्वत पर दिखलाई दे तो उसी महीने का जन्म समझना चाहिए। यह मत भी काफी ठीक है।

13

अंगुष्ठ से जन्म-पक्ष निकालना

सामुद्रिक शास्त्र में अंगुष्ठ पर यव का बड़ा महत्व है। अंगुष्ठ के प्रथम पेरी के मध्य भाग में यव चिह्न का होना मिष्ठान्न भोजी, सुखी, यशस्वी, विद्वान् एवं अति ऐश्वर्यशाली व्यक्ति के जन्म को बताता है ; परन्तु ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के दृष्टिकोण से जन्मकालिक चन्द्रमा व समय का इससे गहरा सम्बन्ध है। 'सामुद्रिक चिन्तामणि' के अनुसार–

'शुक्लपक्षे दिवाजन्म दक्षिणांगुष्ठगतैर्यवैः।

कृष्णपक्षे निशीजन्म वामांगुष्ठगतैर्यवैः।। 1।।

दक्षिणे तु करांगुष्ठे यवो मध्ये विराजते।

दिवाजन्म विजानीयात् तस्य श्रेष्ठस्य धीमतः।। 2।।

वामे रात्रौ विजानीयात् नियतं पुरुषस्य ही।

बहिर्मुखैर्बहिः कीर्तिं विपरीतं ततोन्यथा।। 3।।

स्पष्टैर्यवस्तस्यलिंगे तिलस्तु परिकीर्तितः।

वामे तिलः सुखीर्लिंगे बहुकामी च दक्षिणे।। 4।।

1 दक्षिण हाथ के अंगुष्ठ के मध्य में यव हो तो पौर्वात्य मतानुसार शुक्लपक्ष में और दिन के समय में जन्म होता है।

2 यदि वाम हाथ के अंगुष्ठ के मध्य में यव हो तो कृष्णपक्ष में और रात्रि के समय में जन्म होता है।

3 यदि दोनों हाथों के अंगुष्ठ पर यव हो तो कृष्णपक्ष में दिन के समय में जन्म होता है।

4 यदि दक्षिण हाथ के अंगुष्ठ में यव हो तो गुप्तेन्द्रिय पर दाहिने तरफ तिल का चिह्न होता है।

5 यदि बायें हाथ के अंगुष्ठ पर यव हो तो गुप्तेन्द्रिय के बायें भाग पर तिल का चिह्न होता है।

अन्य मत :-

1 यदि जीवन रेखा अखण्डित, स्वतन्त्र, मोटी, सुस्पष्ट एवं अर्धचन्द्राकार स्थिति में हो तो कृष्णपक्ष में जातक का जन्म होता है। (देखें चित्र नं 67)

2 यदि जीवन रेखा पतली, स्पष्ट, रक्तवर्णीय या गुलाबी एवं पूर्ण गोलाकार होकर हथेली के अन्त तक पहुंचती है तो शुक्लपक्ष का जन्म होता है।

3 यदि यह रेखा मणिबन्ध तक पहुंच जाय और अन्त में सूक्ष्म रेखाएं हों तो कृष्णपक्ष का जन्म जानें।

4 यदि उपर्युक्त रेखा के अन्त में काला तिल या मस्सा अथवा कोई जन्म चिह्न हो तो शुक्लपक्ष में जन्म जानें।

नख के आधार पर–

1 अंगुष्ठ के नख पर यदि अर्धचन्द्राकृति स्पष्ट व चमकदार दिखाई पड़े तो शुक्लपक्ष का जन्म जानें।

2 इसके विपरीत यदि अर्धचन्द्राकृति अस्पष्ट, धुंधली व गायब हो तो सीधा कृष्णपक्ष का जन्म जानें।

3 अनुभव एवं निरन्तर अध्ययन के आधार पर इस चन्द्राकृति के न्यूनाधिक परिमापन से चन्द्रमा की कलाओं (तिथियों) को भी बताया जा सकता है।

जन्मकालिक चन्द्र की स्थिति बताना

1. चन्द्र पर्वत से उदित कोई रेखा हथेली में जिस ग्रह-स्थान/राशि-स्थान तक पहुँचती है उन-उन स्थानों से जन्मकालिक चन्द्र का जन्मकुण्डली में अवश्यमेव सम्बन्ध जानें।

2. अंगुलियों के किसी भी खण्ड पर यदि चन्द्रमा का चिह्न दिखलाई पड़े तो उन-उन अंगुलियों के खण्ड के प्रतिनिधि नक्षत्रों में जन्मकालिक चन्द्र की स्थिति को जानें। यह चिह्न जातक का जन्म भी उसी नक्षत्र की दशा में होना बताता है।

14

अंगुष्ठ से तिथि (चान्द्र-दिवस) निकालना

(A) चित्र नं. 67 के अनुसार अंगूठे के नीचे शुक्र पर्वत पर उदित ऊर्ध्व रेखाओं को गिनें। निर्दोष व अखण्डित सभी रेखाओं को 6 से गुणा करें तथा 15 का भाग दें, शेष संख्या चन्द्रमा की तिथि को बतायेगी। यदि 0 शेष बचता है तो पूर्णिमा का जन्म जानें तथा 15 के पश्चात् 30 तक क्रमानुसार कृष्ण पक्ष की तिथियां जानें।

सूत्र : $\frac{\text{ऊर्ध्व रेखा शुक्र स्थल} \times 6}{15}$ = जन्म तिथि (शेष)

अन्यमत –

(B) दोनों हाथों की शनि अंगुलि के द्वितीय व तृतीय खण्ड में प्राप्त ऊर्ध्व रेखाओं को गिनें तथा उनमें 32 जोड़ दें तथा 7 से गुणा करके 15 का भाग दें। प्राप्तांश चन्द्रमा की शुक्ल व कृष्ण पक्ष की तिथियों को बतायेगा।

सूत्र = $\frac{\text{मध्यमा अंगुली की द्वितीय तृतीय पर्व की रेखायें} + 32 \times 7}{15}$ = जन्म तिथि

अन्य मत–

(C) मध्यमा तथा कनिष्ठिका के द्वितीय तृतीय खण्ड के दोनों हाथों की स्पष्ट ऊर्ध्व रेखाओं को गिनकर, उनमें तीन जोड़ें एवं 30 का भाग दें। इससे भी प्राप्त लब्धि शुक्ल एवं कृष्णपक्षीय चान्द्र-तिथि को ही बतायेगी।

सूत्र = मध्यमा + कनिष्ठिका

$$\frac{\text{मध्यमा द्वि0 + तृ0 + कनिष्ठका द्वि0 + तृ0 = पर्व रेखा + 3}}{30} = \text{जन्म तिथि}$$

अन्य मत – (भारतीय मत) –

(D) मध्यमा अंगुली के दूसरे तथा तीसरे पर्व पर उपस्थित ऊर्ध्व रेखाओं में 32 जोड़कर 5 से गुणा कर दें तथा उसमें 15 का भाग देने पर जो लब्धि आवे उसे जन्म तिथि समझनी चाहिए।

सूत्र =

$$\frac{\text{मध्यमा अंगुली द्वि0 + तृ0 पर्व रेखा + 32} \times 5}{15} = \text{जन्म तिथि}$$

15

अंगुष्ठ से जन्मलग्न, समय एवं वार निकालना

(1) अंगुष्ठ से जन्म वार निकालना–

(A) आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व हिंदू-वौद्ध प्राचीनतम ज्योतिष ग्रन्थों में होरा चक्र का एक नियम सूत्र प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है–**'अर्कशुक्रौ-बुधश्चन्द्रशनिमन्त्रि- महिसुताः'**। इस सूत्र को अंगुष्ठ के द्वितीय (तर्क) खण्ड पर घटित करने पर आश्चर्यजनक परिणाम निकले हैं।

विधि- चित्र नं. 67 के अनुसार अंगुष्ठ के द्वितीय खण्ड (A से C) पर उपस्थित 1, 2, 3, 4 इत्यादि सभी आड़ी रेखाओं को गिनें।

चित्र नं.–67

ये रेखाएँ उपर्युक्त सूत्रानुसार– 1. रविवार 2. शुक्रवार 3. बुधवार 4. सोमवार 5. शनिवार 6. गुरुवार 7. मंगलवार को बताती हैं। शुक्रक्षेत्र व अंगुष्ठ के द्वितीय पेरुएं को अलग करने वाली रेखा C के पास सटी हुई आड़ी रेखा जातक का जन्म मंगलवार का होना बतायेगी। यदि यही रेखा अंगुष्ठ के प्रथम खण्ड यव के बिल्कुल नीचे सटी हुई हो तो रविवार का जन्म, द्वितीय खण्ड के बीचोंबीच में रेखा होने पर बुधवार का जन्म जानें। इसके अतिरिक्त यदि इस द्वितीय खण्ड पर कुल्हाड़ी या फावड़े जैसा चिह्न हो तो गुरुवार, सूच्याकार पत्थर का खम्भा (Pyramid) जैसा चिह्न हो तो शुक्रवार, चौकड़ी (Cross) का चिह्न हो तो शनिवार, चन्द्राकार निशान हो तो सोमवार का जन्म जानें।

अन्य मत–

(B) दोनों हाथों की अनामिका अंगुली के द्वितीय व तृतीय पेरुएं पर उपस्थित सभी ऊर्ध्व रेखाओं को गिनें। उसमें 611 जोड़ दें एवं उसका 5 से गुणा करें तथा 7 का भाग देने पर जो शेष बचे वही जन्म का वार है। इस प्रक्रिया में 0 से शनि, 1 रवि, 2. सोम, 3 मंगल, 4 बुध, 5 गुरु, 6 से शुक्रवार जानें। सूत्र इस प्रकार होगा–

$$\frac{(\text{अनामिकाओं के दि0 तृ0 पर्व की ऊर्ध्व रेखाओं का योग} + 611) \times 5}{7} = \text{जन्मवार}$$

जन्मवार ज्ञात करना (भारतीय मत)–

(C) अनामिका के दूसरे तथा तीसरे पेरुएं पर उपस्थित उर्ध्व रेखाओं को गिनकर उसमें 517 जोड़ देवें। तथा 5 से गुणन करके 7 का भाग दें। शेष संख्या जन्म वार होगी। 1 से रविवार, 2 सोम, 3 मंगल, 4 बुध, 5 गुरु, 6 शुक्र, 0 से शनिवार समझना चाहिए।

सूत्र –

$$\frac{(\text{अनामिका द्वि0} + \text{तृ0 पर्व रेखा} + 517) \times 5}{7} = \text{शेष जन्मवार}$$

अंगुष्ठ से जन्म-लग्न निकालने का पाश्चात्य मत–

(A) चित्र नं. 67 के अनुसार B क्षेत्र में उपस्थित शुक्र पर्वत की उर्ध्व रेखाएं जन्म लग्न को बताती हैं। अंगुष्ठ के द्वितीय पेरुएं की सीमा रेखा C से मणिबन्ध पर्यन्त क्षेत्र को 12 भागों में विभक्त करके काल्पनिक समानान्तर रेखाएं बनावें। प्रत्येक रेखा मेष से लेकर मीन तक के उदित लग्न-काल को बताती है। अब यदि, जातक के हाथ में C सीमा रेखा के पास सटी हुई यदि एक रेखा उपस्थित है तो 'मेष लग्न' का जन्म जानें। यदि पांच स्पष्ट व दीर्घ रेखाएं लगातार हों तो सिंह लग्न का, बारह रेखा लगातार हों तो 'मीन लग्न' का जन्म जानें। यह अनुभूत सफल प्रयोग है। यदि जातक के हाथ में इस B क्षेत्र के मध्य में कहीं भी एक रेखा दिखलाई पड़े तो काल्पनिक रेखाओं के अनुसार इस जन्म-कालिक रेखा की स्थिति जहां प्रतीत होती हो वही जन्म लग्न है ऐसा जानें।

अन्य मत : (B) कनिष्ठिका अंगुली के द्वितीय व तृतीय पेरुए में उपस्थित उर्ध्व रेखाओं की गणना करें। प्राप्त रेखाओं को 13 से गुणा करें, 5 जोड़ें तथा 12 से विभाजित करें। बचे हुए शेष = 0 से मेष तथा 1 से वृष, 2 से मिथुन क्रमानुसार द्वादश लग्नों को जानें।

सूत्र –

$$\frac{(\text{कनिष्ठका द्वि + तृ0 पर्व रेखा}) \times 13 + 5}{12} = \text{उदित जन्म-लग्न}$$

अन्य भारतीय मत–

(C) दाहिने हाथ की हथेली की चौड़ाई का नाप लेकर, उसका चतुर्थ भाग भी उसमें जोड़ दें। फिर हृदयरेखा तथा मस्तक रेखा की लम्बाई को नापं कर, जोड़ में मिला कर, 11 का भाग दें। शेष बचे वही लग्न समझना चाहिए। इसमें 0 से मेष, 1 से वृषादि क्रमानुसार जानें।

सूत्र –

$$\frac{\text{दायीं हथेली (चौ0) का } \frac{5}{4} + \text{हृदय रेखा(ल0)} + \text{मस्तिस्क रेखा (ल0)}}{11} = \text{जन्मलग्न शेष}$$

16

अंगुष्ठ से जन्म समय निकालना

(1) दक्षिण हस्त के चारों अंगुलियों के मूल में पाये जाने वाली सभी स्पष्ट व दीर्घ ऊर्ध्व रेखाओं को गिनें। ध्यान रहे $\frac{1}{4}$ इंच से छोटी धुंधली व अस्पष्ट रेखाओं को न गिनें। कुल रेखाओं को 2 से गुणा करके तीन का भाग दें। बचे हुए शेष की प्रत्येक इकाई सूर्योदय के पश्चात 1 घंटे के जन्म समय को बताती है।

सूत्र : $\frac{(\text{त}0 + \text{म}0 + \text{अ}0 + \text{क}0 \text{ पर्व रेखा}) \times 2}{3}$ = सूर्योदय का परवर्ती जन्म समय घंटे (60 मि.) में

अनुभूत बिंदु–

(2) अंगुष्ठ के नीचे, शुक्र स्थल पर प्राप्त सभी समानान्तर रेखाओं को गिनें। ये रेखाएं मेष से लेकर मीन पर्यन्त सायण सूर्य को बताती हैं। हाथ का आकार-प्रकार, सूर्य-पर्वत, सूर्य-रेखा इस सायण सूर्य को निश्चित करने में सहायता देता है।

(1) यदि ये सभी रेखाएं स्पष्ट एवं अखण्डित हों तो जन्म समय सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य जानें।

(2) यदि ये रेखाएं दायें हाथ में धुंधली, खण्डित व अस्पष्ट हों, किन्तु बायें हाथ में अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट व दीर्घ हों तो सूर्यास्त के पश्चात् सूर्योदय के पूर्व रात्रि-काल का जन्म जानें।

(3) एकदम सुस्पष्ट मणिबन्ध स्थल, सूर्योदय के कुछ पश्चात् किन्तु सूर्यास्त के कुछ पूर्व मध्य दिन के समय का जन्म बताता है।

(4) यदि मणिबन्ध विखण्डित हो तो सूर्यास्त के पश्चात् रात्रिकाल का जन्म जानें।

घंटा-मिनट निकालने का अन्य मत –

(3) दक्षिण हाथ के अंगुष्ठ के द्वितीय पर्व को स्केल (Scale) की सहायता से 12 बराबर भागों में विभक्त करें। प्रत्येक भाग को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ उन्नोतर कांच द्वारा निरीक्षण करें। जो भाग अधिक स्पष्ट व साफ होगा तथा जिस हिस्से में आड़ी रेखाएं अधिक स्पष्ट हों उसे ही जन्म समय का अंग जानें।

ऊपर से नीचे की ओर प्रतिबिम्बित रेखाएं सूर्योदय के 1 से लेकर सूर्यास्त के 12 घंटों को इंगित करती हैं। इस हिस्से में रेखा की अनुपस्थिति रात्रि काल के जन्म को सूचित करती है।

अन्य भारतीय मत–

(4) सूर्य-पर्वत पर तथा अनामिका पर, गुरु पर्वत व तर्जनी पर, अंगुष्ठ के द्वितीय पेरुए व शुक्र-स्थल पर, मध्यमा व शनि पर्वत पर प्राप्त निर्दोष ऊर्ध्व रेखाओं को गिन कर उनमें 811 जोड़ कर 124 से गुणा कर उसमें 60 का भाग दें। इस प्रक्रिया से लब्धि घंटा-मिनटों में प्राप्त होगी।

सूत्र –

$$\frac{(a+b+c+d+e+f+g+h+811)\times 124}{60}$$

= जन्म समय घंटा-मिनट में

a. सूर्य पर्वत — e. अंगुष्ठ का द्वितीय पर्व

b. अनामिका — f. शुक्र स्थल

c. गुरू पर्वत — g. मध्यमा

d. तर्जनी — h. शनि पर्वत

17

कुण्डली से जन्म सम्वत् (सन्) निकालना

यस्मिन् राशौ भवेत् सौरिस्तस्मात्सार्द्धे च द्वे समाः।

शनिर्यावद् वदेद्वर्ष तयेज्याश्रितराश्रितः।।

जन्म कुण्डली में शनि जिस राशि में हो, उस राशि से वर्तमान (गोचरस्थ) शनि तक गिनें। प्राप्त संख्या को $2\frac{1}{2}$ से गुणा करें। गुणनप्रक्रिया से प्राप्त अंकों को जातक के गत वर्ष जानें। उन्हें वर्तमान सम्वत् या सन् में से घटाने पर जातक का जन्म सम्वत् या सन् सहज ही प्राप्त हो जायेगा।

सूत्र –

(a) $\frac{\text{जन्म शनि से वर्तमान शनि तक की संख्या} \times 5}{2}$ = जातक के गत वर्ष

(b) वर्तमान सन् /संवत् – जातक के गत वर्ष = जातक का जन्म सन् संवत्।

उदाहरण– सन् 1981 को एक जातक आपके पास आया और उसकी जन्म कुण्डली में शनि कन्या राशि में है तो उसका जन्म सन् बताइये।

जन्म का शनि कन्या राशि में है तथा वर्तमान सन् 1981 में भी शनि कन्या राशि में है। कन्या राशि से तुला, वृश्चिक, धनु क्रमानुसार कन्या राशि तक गिनने से 12 संख्या प्राप्त हुई :

$$\frac{12 \times 5}{2} = 30,$$

1981−30=1951 जन्म सन्

अर्थात्, उपस्थित जातक का जन्म सन् 1951 का होना सिद्ध होता है, जो सही है।

अन्य अनुभूत मत–

(1) उपर्युक्त तरीके से गणना करने पर कभी-कभी एक-डेढ़ वर्ष का अन्तर भी आ सकता है। इसलिए यदि यह गणना गुरु ग्रह के माध्यम से की जाय तो ज्यादा सही व सटीक बैठती है। परन्तु इसमें जातक की अनुमानित आयु की कल्पना करनी पड़ती है। बृहस्पति एक राशि पर 13 महीने तक रहता है। तथा 12 वर्षों में वापस अपनी प्रारम्भिक राशि (Starting point) पर लौट आता है।

प्रक्रिया– जन्म के बृहस्पति से वर्तमान गोचर के बृहस्पति तक गिनें। प्राप्त संख्या को वर्तमान सन् में से घटा दें, तो जातक का जन्म सन् निकल आता है। यदि प्राप्त संख्या जातक की अंदाज आयु से कम लगती है तो 12 वर्ष पुनः पुनः जोड़ते जायें जब तक कि सही जन्म सन् प्राप्त न हो जाय।

शनि व बृहस्पति की युति से जन्म-सन् बतलाना

(2) थोड़ा सा अभ्यास करके आप पिछले कुछ वर्षों के शनि व बृहस्पति की युतियों के जन्म सन् याद कर लें। तथा उन-उन राशियों में शनि+बृहस्पति को देखते ही तत्काल जन्म सन् बता दें।

यह प्रक्रिया सबसे चमत्कारिक व सटीक है। इसमें जातक की अंदाज आयु की कल्पना का अधिक सहारा नहीं लेना पड़ता। इसमें कोई गणित प्रक्रिया भी नहीं करनी पड़ती। इसमें समय इतना कम लगता है कि उपस्थित व्यक्ति आप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता तथा इसमें गलती की कोई सम्भावना नहीं रहती; क्योंकि शनि व बृहस्पति एक राशि पर पुनः 59 वर्ष की प्रक्रिमा के बाद ही आ पाते हैं। पहले सम्भव नहीं।

उदाहरण– मान लीजिए किसी कुण्डली में शनि व गुरु मेष राशि में हैं। देखने पर उस जातक का जन्म सन् 1941 में होना सिद्ध होगा। इसमें 59 और जोड़ें तो जातक का जन्म ई. सन् 2000 का होना सिद्ध होगा जो सम्भव नहीं। इस प्रकार से इस प्रक्रिया में हमें अंदाज आयु की भी कल्पना नहीं करनी पड़ती, गलती की भी इसमें कोई सम्भावना नहीं रहती तथा समय भी बहुत कम लगता है। केवल थोड़ी सी स्मरण शक्ति की आवश्यकता है जो कि ज्योतिषी को ग्रह देखते-देखते अपने आप हो जाती है। ये युतियां आगे फलित अभ्यास में भी बहुत काम आती हैं।

ईस्वी सन् 1900 से 2000 तक (1 जनवरी) के शनि व बृहस्पति ग्रह

	बृहस्पति	शनि
मेष	1917,29,41 53,65,77 2000	1911,12,13,40,41,42,70,71,99,2000
वृष	1906,18,30,42,45,89	1914,43,44,72,73
मिथुन	1907,19,31,43,66,78,90	1915,16,45,74,75
कर्क	1908,20, 32,55,67,79,91	1917,18,46,47,48,76,77
सिंह	1909,21 44,56,68,80,92	1919 20,49,50,78,79
कन्या	1910,22,33,34,45,57,69,81,93	1921,22,23,51,52,80 81,82
तुला	1911,23,35,46,47,58,70,82,94	1924,25,53,54,55,83 84
वृश्चिक	1900,12,24,36,48 59,60,71,83 95	1926,27,28,56,57,58,85,86,87
धनु	1901 13,25,26,37,49,61,72,73,84,85,96	1900,01,02,29,30,31,59,60,61,88,89,90
मकर	1902,03,14,38,50,62,74,86 97,98	1903,04,05,32,33,34,62,63,64,91,92,93
कुम्भ	1904 15,16 27,39,51,63,75,87,99	1906,07,08,35,36,37,65,66,94,95,96
मीन	1905,16,17,28,40,52,64,76,88	1909,10,38,39,67,68,69,97,98

कुण्डली ये जन्म मास निकालना

वैशाखे स्थाप्यते मेषो यावद् भानुश्च गण्यते।

तावन्मासे भवेज्जन्म गर्गस्य वचनं यथा।

जन्म कुण्डली में जिस राशि में सूर्य बैठा हो वही जातक का जन्म मास होता है। मेष का सूर्य हो तो वैशाख मास, वृष से ज्येष्ठ, मिथुन से आषाढ़, कर्क से श्रावण, सिंह से भाद्रपद, कन्या से आसोज, तुला से कार्त्तिक, वृश्चिक से मार्गशीर्ष, धनु से पौष, मकर से माघ, कुम्भ से फाल्गुन एवं मीन के सूर्य से चैत्र मास का जन्म जानें।

कुण्डली से जन्म तारीख निकालना

सूर्य जिस राशि में हो उस राशि के भारतीय महीनों की तारीखें याद कर लें। उन तारीखों में सूर्य के अंश जोड़ दें तो सही जन्म तारीख निकल आयेगी।

सूर्य राशि ;	जन्म माह	सूर्य राशि ;	जन्म माह
मेष-	14 अप्रैल से 14 मई	**तुला-**	18 अक्टू. से 15 नव.
वृष-	15 मई से 14 जनू	**वृश्चिक-**	16 नव. से 15 दिस.
मिथुन-	15 जून से 16 जुलाई	**धनु-**	16 दिस. से 13 जन.
कर्क-	17 जुलाई से 16 अगस्त	**मकर-**	14 जन. से 12 फर.
सिंह-	17 अगस्त से 16 सित.	**कुम्भ-**	13 फर. से 14 मार्च
कन्या-	17 सित. से 17 अक्टू.	**मीन-**	15 मार्च से 13 अप्रैल

उदाहरण– यदि किसी जातक की कुण्डली में सिंह का सूर्य 16 अंश में है तो उसकी जन्म तारीख बतावें ?

सिंह का सूर्य = 17 अगस्त

+ 16 (सूर्य के अंश)

= 33

– 30 (30 से अधिक होने पर)

3 शेष (सितम्बर)

उत्तर– अतः प्रस्तुत जातक का जन्म 3 सितम्बर का है।

कुण्डली से शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष निकालना

यत्र राशौ भवेत्सूर्यस्तस्मास्सप्तगृहान्तरे।

चन्द्रे शुक्लो भवेत् पक्षश्चान्यथा कृष्णपक्षकः।।

जिस राशि पर सूर्य हो उस राशि से सात राशि के भीतर चन्द्र हो तो शुक्ल पक्ष का जन्म कहें और सात राशि के बाहर चन्द्र हो तो कृष्ण पक्ष का जन्म समझना चाहिए।

कुण्डली से तिथि निकालना

यत्र भानुः स्थितस्तत्र सादुर्धे द्वे तिथिरुच्यते।

चन्द्रो यावत् समाख्यातं तिथिज्ञानं मनीषिभिः।।

जिस स्थान में सूर्य हो उस स्थान से चन्द्रमा तक गिनें और उसे $2\frac{1}{2}$ से गुणा करने पर जन्म तिथि की प्राप्ति हो जाती है।

पाठकों की सुविधा हेतु यहां टेबल बनाई गई है। सूर्य से चन्द्रमा की दूरी के हिसाब से आगे शुक्ल व कृष्ण पक्ष की तिथियां भी बताई गई हैं।

सूर्य से स्थान	जन्मतिथि (शुक्लपक्ष)	सूर्य से स्थान	जन्मतिथि (कृष्णपक्ष)
1 -	प्रतिपदा द्वितीया ,,	8 -	प्रतिपदा, द्वितीया ,,
2 -	तृतीया से पंचमी ,,	9 -	तृतीया से षष्ठी ,,
3 -	पष्ठी, सप्तमी ,,	10 -	सप्तमी, अष्टमी ,,
4 -	अष्टमी से दशमी ,,	11 -	नवमी से एकादशी ,,
5 -	एकादशी, द्वादशी ,,	12 -	त्रयोदशी से चतुर्दशी ,,
6 -	त्रयोदशी, चतुर्दशी ,,		सूर्य + चन्द्र युति = अमावस्या
7 -	समकल-पूर्णिमा ,, (सूर्य, चन्द्रमा आमने-सामने)		

कुण्डली से दिन रात निकालना

सूर्याच्च लग्नं यदि षड्-गृहान्तरे भवेत्तदा जन्म दिवा वदेद्‌ बुधः।

स्यात्सप्तमे यस्य च तस्य सायं, तदन्यथा चेज्जननं निशायाम्‌।

जन्म कुण्डली में सूर्य से लग्न 6 भवन के अन्दर हो तो दिन का जन्म, तथा 7वां लग्न हो तो सायंकाल, और आगे 8 से 12 वें भवन में हो तो रात्रि का जन्म समझें।

कुण्डली से जन्म समय निकालना

सही जन्म समय की जानकारी हेतु प्रस्तुत टेबल के अनुसार लग्न स्थान से सूर्य तक गिनें।

स्थान		जन्म समय
सूर्य लग्न में हो तो	–	सूर्योदय प्रातःकाल
„ „ से बारहवें	–	6 से 7 (A.M.)
„ „ से ग्यारहवें	–	8 से 9 „
„ „ से दसवें	–	10 से 11 „
„ „ से नवमें	–	ठीक 12 बजे दिन को
„ „ से आठवें	–	1 से 2 बजे दोपहर (P.M.)
„ „ से सातवें	–	2 से 4 बजे „
„ „ से छठे	–	5 से 6 सूर्यास्त „
„ „ से पांचवें	–	7 से 8 सायं „
„ „ से चौथे	–	9 से 10 रात्रि „
„ „ से तीसरे	–	11 से 12 मध्यरात्रि „
„ „ से दूसरा	–	1 से 3 रात्रि (A.M.)
„ „ से पहला	–	4 से 6 „ „

बिना पचांग के ईस्वी सन्, मास व तारीख को विक्रम सम्वत् मास व तिथि में बदलना

अभीष्ट ईस्वी सन् में 1 जोड़ कर 19 का भाग दें। शेष बची संख्या का कोष्ठक में ध्रुवाङ्क देखें। इसी प्रकार अंग्रेजी मास की तारीख के अनुसार सूर्य के राशि अङ्क को भी लें।

तत्पश्चात् प्राप्त ध्रुवाङ्क, सूर्य के राशि अङ्क व अभीष्ट तारीख को आपस में जोड़ दें। प्राप्त योग ही उस दिन की तिथि होगी।

प्राप्तांङ्क	ध्रुवांङ्क
1	1
2	11
3	22
4	3
5	14
6	25
7	6
8	17
9	28
10	9
11	20
12	1
13	12
14	23
15	4
16	15
17	26
18	7
19	18

ध्यान रहे कि 1 से 15 तक के प्राप्ताङ्क शुक्ल पक्ष की तिथियों को बतायेंगे तथा 16 से 30 तक कृष्ण पक्ष की तिथियों को इंगित करेंगे।

तत्पश्चात् सूर्य की राशि वाला महिना[1] लिख दें तथा ईस्वी सन् में 57 जोड़ कर सम्वत् बना दें। इस प्रकार से सम्पूर्ण अंग्रेजी तारीख बिना किसी पंचांग की सहायता के विक्रम सम्वत्, मास व तिथि में बदल जायेगी।

उदाहरण– ईस्वी सन् 3-9-1949 को विक्रम-सम्वत्, मास व तिथि में बदलिये।

प्रक्रिया :- 1949 + 1 = 1950 ÷ 19 = 12 शेष

A. 12 का ध्रुवाङ्क = 1

B. 3 सितम्बर की सूर्य राशि = 5

C. 1 + 5 + 3 = 9(अर्थात शुक्ल पक्ष की तिथि)

D. 1949 + 57 = 2006 सम्वत्

E. सिंह का सूर्य=भाद्रपद माह

---

1 अंग्रेजी की तारीखानुसार सूर्य की राशि पृष्ठ संख्या 72 से 76 तक निर्दिष्ट हैं। तथा जन्म मास प्रकरण पृ. सं. 89 में सूर्य की राशि को देख कर महीना लिख लें।

उत्तर :- ईस्वी सन् 3.9.1949 को प्रस्तुत प्रक्रिया द्वारा सम्वत् 2006 भाद्रपद मास शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि प्राप्त हुई।

विना पचांग सहायता के जन्म नक्षत्र व चन्द्रमा बताना

अभीष्ट महीने के अन्तिम नक्षत्र से अभीष्ट तिथि तक (उल्टा) गिनिये। वही जन्म नक्षत्र होगा तथा नक्षत्रानुसार चन्द्रमा भी स्वतः ही निकल आयेगा। यह स्वानुभूत विधि अन्य सभी विधियों से बहुत सरल है ; क्योंकि प्रत्येक ज्योतिषी को महीनों के नाम व नक्षत्रों के नाम तो कण्ठस्थ ही होते हैं।

भारतीय ज्योतिषियों ने प्रत्येक मास की समाप्ति पूर्णिमा पर मानी है तथा पूर्णिमा की रात्रि को प्राप्त नक्षत्र के आधार पर ही मास का नाम रखा गया; जो इस प्रकार है। ध्यान रहे इस प्रक्रिया में अभिजित नक्षत्र नहीं गिना जायेगा।

मास		पूर्णिमान्त नक्षत्र
1 चैत्र	–	चित्रा
2 वैशाख	–	विशाखा
3 ज्येष्ठ	–	ज्येष्ठा
4 आषाढ	–	पूर्वाषाढा
5 श्रावण	–	श्रवण
6 भाद्रपद	–	पू. भाद्रपद
7 आश्विन	–	अश्विनी
8 कार्तिक	–	कृत्तिका
9 मार्गशीर्ष	–	मृगशिरा
10 पौष	–	पुष्य
11 माघ	–	मघा
12 फाल्गुन	–	पू. फाल्गुनी

1	**अश्विनी**	15	स्वाति
2	भरणी	16	**विशाखा**
3	**कृत्तिका**	17	अनुराधा
4	रोहिणी	18	**ज्येष्ठा**
5	**मृगशिरा**	19	मूला
6	आर्द्रा	20	**पू. षाढा**
7	पुनर्वसु	21	उ. षाढा
8	**पुष्य**	22	**श्रवण**
9	आश्लेषा	23	धनिष्ठा
10	मघा	24	शतभिषा
11	**पू. फाल्गुनी**	25	**पू. भाद्रपद**
12	उ. फाल्गुनी	26	उ. भाद्रपद
13	हस्त	27	रेवती
14	**चित्रा**		

उदाहरण– भाद्र शुक्ल 12 को कौन-सा चन्द्रमा व नक्षत्र था ?

प्रक्रिया – भाद्रपद महीने की पूर्णिमा को प्राप्त पू. भाद्रपद नक्षत्र से उल्टा क्रम द्वादशी तक गिनेंगे तो 'श्रवण' आया। श्रवण नक्षत्र मकर राशि के अन्तर्गत आता है।

यथा– उत्तराषाढायास्त्रयः पादाऽभिजिच्छ्रवणधनिष्ठार्द्धमकरः

अतः भाद्र शुक्ल 12 को मकर का चन्द्र एवं 'श्रवण' नक्षत्र था।

बिना पंचांग के वार बताना

अभीष्ट तारीख के सन् के उत्तरार्द्ध में 4 का भाग देवें। प्राप्त लब्धि को सन् के उत्तरार्द्ध में जोडें। तत्पश्चात् अभीष्ट मास के ध्रुवाङ्क व तारीख को उसमें जोड़ कर 7 का भाग दें। शेष बचा हुआ अंक ही वार का द्योतक होगा।

प्रक्रिया :-

A. सन् का उत्तरार्द्ध ÷ 4 = लब्धि

B. लब्धि + सन् का उत्तरार्द्ध + मास ध्रुवाङ्क + तारीख ÷ 7 = वार

मास		ध्रुवाङ्क	मास		ध्रुवाङ्क
जनवरी	–	1	जुलाई	–	0
फरवरी	–	4	अगस्त	–	3
मार्च	–	4	सितम्बर	–	6
अप्रैल	–	0	अक्टूबर	–	1
मई	–	2	नवम्बर	–	4
जून	–	5	दिसम्बर	–	6

शेष अंक से प्राप्त वार-क्रम						
श.	र.	सो.	मं.	बु.	गु.	शु.
0	1	2	3	4	5	6

उदाहरण– 28 दिसम्बर 1980 को क्या वार था ?

A. (19) 80÷4 = 20

B. 20 + 80 + 6 (मा. ध्रु.) + 28

= 134 ÷ 7

= 1 (शेष)

= रविवार

अर्थात् 28 दिसम्बर 80 को रविवार था।

बिना पंचांग सहायता के योग निकालना

योग जानने के लिए पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र (अमावस्या के दिन वाला नक्षत्र) तक गिनते जायं। जो आवे वह, और श्रवण नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र (जिस दिन का योग देखना हो उस दिन का नक्षत्र) तक गिनने से जो आवे, उन दोनों को जोड़ कर 27 का भाग देने से जो शेष प्राप्त हो वही अभीष्ट दिवस का 'योग' होता है।

प्रक्रिया = A. पुष्य नक्षत्र से सूर्य (अमावस्या) नक्षत्र तक = प्राप्ति

B. श्रवण नक्षत्र से अभीष्ट नक्षत्र तक = + प्राप्ति

कुल प्राप्ति ÷ 27

शेष (योग)

उदाहरण– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को क्या योग होगा ?

A. पुष्य नक्षत्र से सूर्य न. (भरणी) तक की प्राप्ति = 22

B. श्रवण से अभीष्ट नक्षत्र रेवती तक की प्राप्ति = + 5

जोड़ 27 ÷ 27 = 0 शेष

अर्थात् विष्कुम्भादि क्रम से जातक का जन्म विष्कुम्भ योग में हुआ।

बिना पंचांग सहायता के करण निकालना

जिस दिन का करण निकालना हो तो शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से अभीष्ट दिन तक की तिथि गिनकर, उसका दूना करके, उसमें से दो घटावें और 7 भाग दें। शेष बचे वही उस दिन का करण होगा।

सूत्र : शुक्ल 1 से अभीष्ट दिन = $\frac{\text{प्राप्ति} \times 2 - 2}{7}$ = करण

उदाहरण– वैशाख कृष्ण 5 को क्या करण होगी ?

A. वैशाख कृष्ण प्रतिपदा से शुक्ल कृष्ण 5 तक = 20 दिन हुए

B. = $\frac{20 \times 2 - 2}{7}$

C. =3 (भाग का शेष)

अतः तीसरी करण अर्थात कौलव करण होगी।

शास्त्रार्थप्रकरण–

अदृष्टशास्त्र मीमांसा

ज्योतिष की गणित व फलित प्रक्रिया में बड़ा भारी अन्तर है। केलकुलेटर व कम्प्युटर के युग में किसी भी प्रकार की गणित तो मिनटों व सैकण्डों में की जा सकती है ; किन्तु फलित अनुभवजन्य है तथा ज्योतिष शास्त्र की कसौटी भी फलादेश ही है। यह फलादेश मुख्यरूप से भगवत्कृपा के कारण ही सिद्ध होता है। अध्ययन और अनुभव तो भविष्यवाणी की सिद्धि में मात्र माध्यम हैं, परन्तु उपादान कारण तो अदृष्ट है। इसलिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र को विदेशियों ने मात्र विज्ञान नहीं, अपितु परम पवित्र विज्ञान (Divine Science) कहा है।

भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है ? यह अदृष्ट है। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से इस अदृष्ट जिज्ञासावृत्ति की निवृत्ति होती है। अतः फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व 'अदृष्टशास्त्र मीमांसा' अनिवार्य है। अदृष्ट की सिद्धि के लिए दिव्य द्रष्टा त्रिकालज्ञ ऋषियों ने कुछ नियम बनाए हैं।

सबसे पहला नियम है कि पृच्छक दैवज्ञ के पास कभी खाली हाथ नहीं जावे। यथा– **रिक्तपाणिर्न पश्येत् राजानः देवतां गुरूम्'** अब यह प्रश्न उठता है कि 'दैवज्ञ' किसे कहते हैं। समाधान है कि **'जितेन्द्रियः विद्वान् आत्मज्ञानविद्दैवज्ञः**, जो देव (भाग्य-शास्त्र, ज्योतिष-शास्त्र) को जानता हो, जितेन्द्रिय, विद्वान् तथा आत्मज्ञानी हो, वह दैवज्ञ है।

शास्त्रों में कहा है– 'ज्योतिषं गारुडी विद्या न सुताय अपि दीयते' ज्योतिष गारुडी विद्या होने के कारण पात्र-कुपात्र की परीक्षा किये बिना पिता अपने पुत्र को भी यह

विद्या नहीं सिखाये। कोई बिरले ही इस वेदविद्या के सुपात्र होते हैं। कुपात्र को विद्यादान फूटे हुए घड़े में जल भरने की चेष्टा के समान ही निरर्थक सिद्ध होता है।

पृच्छक को दैवज्ञ गुरू के पास जिज्ञासु, निष्कपट, विनयशील एवं श्रद्धावान होकर जाना चाहिए। प्रमाद, परीक्षाभाव एवं द्वेषभावना से पूछे गये प्रश्नों का फल अनिष्टकारक होता है। प्रायः जिस भावना को लेकर व्यक्ति दैवज्ञ के पास जाता है वे मानसिक तरंगें दैवज्ञ के अन्तःकरण से टकराकर पृच्छक के दिल व दिमाग पर शुभाशुभ प्रभाव डालती हैं। उक्तंच– यादृशी भावनां कुर्यात्सिद्धिर्भवति तादृशी।' इसलिए दैवज्ञ के पास पवित्र भावना से आशावान होकर जाना चाहिए।

ज्योतिष विद्या में सफलता प्राप्त करने के लिए पुस्तक-ज्ञान के अतिरिक्त योग्य गुरू से शिक्षा-दीक्षा लेनी चाहिए। ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता होने के लिए संस्कृत अवश्य पढ़ना चाहिए। तत्पश्चात् अन्य पाश्चात्य ग्रन्थों का अध्ययन करे। परन्तु भारतीय ज्योतिष की जड़ संस्कृत भाषा में है। जिसने केवल आंग्ल भाषा के ग्रन्थ व बाजारू पुस्तकों को ही पढ़ा है उसकी स्थिति मूल से अविच्छिन्न उस पौधे के समान है जिस पर कोई फल नहीं।

इसके अलावा ऋषियों ने दैवज्ञों के लिए भी विधिवाक्य कहे हैं। यथा– 'सूर्योदय के पहले, सूर्यास्त के पश्चात (अर्थात् रात्रि में) मार्ग में चलते हुये, जहां हँसी मनोविनोद होता हो उस स्थान में एवं अज्ञानी (मूर्खो) की सभा में भविष्यवाणी न करे।'' –

फलपुष्पमुद्राग्रहणविना रेखावलोकनं न कर्त्तव्यम्'

–(सामुद्रिक रहस्य)

अर्थात् श्रद्धावान व्यक्ति से फल, पुष्प, एवं दक्षिणा ग्रहण कर, पूज्यभाव (उचित आदर) को प्राप्त करने के पश्चात् अपने इष्ट का ध्यान करके ही हस्तरेखाओं पर फलादेश करना चाहिए ताकि उक्त व्यक्ति विशेष के प्रति कहे गये वचन निष्फल न होवें।

फलित-पक्ष

भाग 2

अंगुष्ठ के आधार पर रोचक किन्तु प्रामाणिक भविष्यवाणियां

अंगूठे में प्राण शक्ति है। यह वचन ध्रुव सत्य है। यदि आज का भौतिकवादी वैज्ञानिक इस सत्य का अन्वेषण नहीं कर पा रहा है तो उसके ज्ञान में कहीं न कहीं कमी, बाधा व रुकावट अवश्य है। कर्मकाण्ड के मूर्तिविज्ञान प्रकरण के अन्तर्गत, बिल्ववृक्ष, श्वेतअर्क, करंजवृक्षादि से चमत्कारिक मूर्तियां बनाने का विधान है। इनमें से सबसे श्रेष्ठ मूर्ति कौनसी होती है ? उसके परिमाण (लम्बाई + चौड़ाई) का उल्लेख करते हुए ग्रन्थकार लिखते हैं–

अंगुष्ठमात्रं प्रतिमां प्रविधाय विशेषतः[1]

अर्थात् केवल अंगूठे जितने आकार-प्रकार वाली मूर्ति ही प्राणप्रतिष्ठा के लिए सबसे उच्च कोटि की होती है। इन आर्ष वाक्यों में बड़ा भारी रहस्य छिपा है जिसे खोजने के लिए पर्याप्त अध्ययन, अनुसंधान व समय चाहिए।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में सर्वशक्ति-स्वरूप यादवेन्द्र भगवान् श्रीकृष्ण की मृत्यु अंगूठे में तीर लगने से हो गई। बड़ी विचित्र बात है कि पैर के अंगूठे में तीर लगने से ऐसे दिव्य पुरुष की मृत्यु कैसे हो सकती है ? यह शंका कई दिनों से मुझे परेशान कर रही थी कि 'सांख्य दर्शन' का अध्ययन करते-करते अचानक बड़ा महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया। पञ्चवायु में से प्रथम प्राणवायु की चर्चा करते हुए आचार्य प्रवर श्री वाचस्पति मिश्र लिखते हैं–

'तत्र प्राणो नासाग्रहृन्नाभिपादाङ्गुष्ठवृत्तिः[2]

अर्थात् इनमें से 'प्राण' नामक वायु नासिका के अग्रभाग हृदय नाभि पाद तथा अंगुष्ठ में रहता है। इसी कारिका पर ज्योतिष्मती व्याख्या करते हुए टीकाकार पं. रमाशंकर भट्टाचार्य लिखते हैं कि इनमें से 'प्राण' नामक वायु नासाग्र, हृदय, नाभि और पैर के अंगुष्ठ में रहता है। 1

1. मूर्तिरहस्य पृ. 44 का 3/4

2. सांख्यतत्त्वकौमुदी प्रभा. का–29 पृ. सं. 248

इन दोनों वृत्तियों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि प्राणवायु का सीधा संबंध अंगूठे से है। इस बात को खुले मस्तिष्क से सबसे पहले स्वीकारा चीन के चिकित्सा वैज्ञानिकों ने, जिन्होंने अंगूठे व पांव के तले की विभिन्न शिराओं को सूई की नोक से स्पर्श करके अनेक प्रकार की बीमारियों को ठीक करने का चमत्कार कर दिखाया।

इन अंगूठों में प्राण-शक्ति का स्रोत कहां छिपा है ? इसका पता लगाना असम्भव तो नहीं, किन्तु कठिन जरूर है। बलशाली राक्षसराज रावण के घमण्ड को नष्ट करने के लिए भगवान् शंकर ने पैर के अंगूठे के अग्रभाग को ही तो माध्यम बनाया था। शायद इन्हीं तथ्यों के महत्व को स्वीकार करते हुए परवर्ती मन्दिरमार्गी जैन मतावलम्बियों में मूर्तिपूजा का यह विधान है कि वे प्रथम दक्षिण पैर के अंगूठे से पूजा प्रारम्भ करते हैं तथा पैर के अंगूठे से चन्दनपुष्पादि चढ़ाते हुए क्रमानुसार मस्तक तक पहुंचते हैं।

कर्मकाण्ड की यह प्राचीन परम्परा है कि ब्राह्मण जब देवताओं को तिलक करते हैं तो अनामिक अंगुली से; परन्तु जब ब्राह्मण अपने यजमान का तिलक करते हैं तो अंगूठे से ही तिलक किया करते हैं। यह प्रक्रिया बताती है कि ब्राह्मण अपने अंगुष्ठ में छिपी प्राण-शक्ति द्वारा आध्यात्मिक समन्वय के साथ यजमान में नवीन शक्ति का सञ्चार करते हैं।

18

स्पर्शात्मक वर्गीकरण

सामुद्रिक शास्त्र के प्रारम्भ में लिखा है कि सफल भविष्य-वक्ता को सर्व प्रथम हाथ का स्पर्श करके उसकी मृदुता (कोमलता) एवं कठोरता का ज्ञान करना चाहिये। उसके पश्चात् अंगुलियों तथा अंगूठे की परीक्षा स्पर्शानुभूति द्वारा करनी चाहिए।

(1) ऊष्ण स्पर्श–

यदि स्पर्श करने से अंगूठा भरा हुआ गद्देदार एवं कुछ ऊष्ण प्रतीत हो तो ऐसा जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला कुछ कर गुजरने की सक्रिय महत्त्वाकांक्षा वाला; किन्तु कामी होता है। ध्यान रहे अति ऊष्णता रोग की सूचक है।

(2) श्वेदन स्पर्श –

अंगुष्ठ के अवयवों (विशेष कर शुक्र स्थल) को स्पर्श करने से यदि श्वेद (पसीना) आता हो, तो अशुभ समझना। ऐसे जातक मानसिक रूप से त्रस्त, निराशावादी, डरपोक व भीरु होते हैं।

(3) अश्वेदन स्पर्श –

जिसके अंगुष्ठ के अवयवों में अश्वेदन (पसीना नहीं आता) हो, वह शुभ होता है। उसे कोई रोग व मानसिक विकार नहीं होता। ऐसा जानना चाहिए।

(4) मृदु स्पर्श –

जिस जातक के अंगुष्ठ व अंगुलियों का स्पर्श मृदु (मुलायम) हो तो वह स्थिर कार्य को करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति धैर्यवान, दक्ष और सम्पत्तिवान होते हैं। ऐसे व्यक्ति कोमल व नाजुक स्वभाव के समझदार जातक होते हैं।

(5) कठोर व रुक्ष स्पर्श –

स्पर्श करने पर सूखा-रूखा दिखाई देने वाले अंगूठे का स्वामी कठोर हृदयी व रूखे स्वभाव वाला होता है। ऐसे व्यक्ति निश्चित रूप से श्रम-जीवी होते हैं।

(7) शीत स्पर्श –

स्पर्श करने पर शीतल (ठंडा) प्रतीत होने वाले अंगूठे के स्वामी निष्क्रिय व शांत शक्ति वाले होते हैं। इनको खून की कमी व आन्तरिक बीमारी होती है। ऐसी निष्क्रियता कुछ कालान्तर में मृत्यु की सूचना भी देती है।

(8) खुरदरा स्पर्श –

यदि स्पर्श करने से चमड़ी रुक्ष, खुरदरी व कटी-फटी सी हो तो ऐसा जातक दरिद्री होता है। ये प्रायः कारीगर (शिल्पी) होते हैं तथा कठोर शारीरिक परिश्रम करते रहने के कारण इनमें सूक्ष्मग्राही बुद्धि की कमी रहती है। ऐसे लोग प्रायः अनपढ़ एवं अव्यावहारिक होते हैं।

19

आकृतिमूलक वर्गीकरण

दक्षिण भारत के प्रवास के मध्य 'रावणसंहिता' के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह ग्रन्थ वहां 'तमिल भाषा' में ताड़ पत्रों पर लिखा हुआ मिला जिसमें 'सामुद्रिक प्रकरण' के अन्तर्गत कई प्रकार के अंगूठों का वर्णन भी था। उन सभी अंगूठों का वर्गीकरण आकृतिमूलक था। इस विषय पर ध्यान देना मुझे बहुत ही आवश्यक प्रतीत हुआ। विषय विस्तार के भय से सभी प्रकार की आकृतियों का चित्रण व फलावट सम्भव नहीं, परन्तु मुख्य रूप से छः आकृतियों का वर्णन यहां किया जा रहा है जिसको आधार मानकर यदि फलादेश किये जाएं तो वे फलादेश सर्वाधिक प्राचीन होने के साथ-साथ सर्वाधिक सफल भी सिद्ध साबित होंगे।

खम्भाकृति - खम्भे की आकृति के समान ही सीधा व खड़ा दिखलाई देने वाला यह अंगूठा पुष्ट व मांसल होते हुए भी पीछे की ओर न मुड़ने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति हठी स्वभाव के होते हैं। साहित्यिक क्रिया-कलापों में इनकी बिल्कुल रुचि नहीं होती। इसके विपरीत जीवन के व्यावहारिक पक्ष में प्रबल आस्था होती है। बचपन से ही इनमें धैर्य की कमी होती है तथा जरा सा विपरीत वातावरण देखते ही इनको शीघ्र क्रोध आकर ये भड़क उठते हैं। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति प्रायः मध्यमवर्गीय स्तर के होते हैं, परन्तु यदि ये उच्च-पदस्थ अधिकारी होवें तो उनके ही आफिस के लोग उनके गुप्त शत्रु होते हैं। ऐसे लोग जल्दबाज होते हैं तथा अक्सर अपने द्वारा किये गये कार्यों से ही उलझ जाते हैं। (देखे चित्र नं. 68)।

ऐसे व्यक्ति प्रायः टैक्निकल व मैकेनिकल कार्यों के भी जानकार होते हैं तथा एक के बाद दूसरा धन्धा बदलते रहते हैं। धन्धे व कारोबार की दृष्टि से इनमें स्थायित्व

जीवन के 28 व 30 वर्ष की आयु के मध्य आता है। ऐसे व्यक्ति कठोर व रुक्ष स्वभाव के होते हैं तथा इनकी आर्थिक स्थिति धीरे-धीरे सुदृढ़ होती है। यदि ऐसे व्यक्ति धीर, गम्भीर वृत्ति को धारण कर लें तो निश्चित रूप से आगे बढ़ सकते हैं। ऐसे अंगूठे वाले जातक की कुण्डली व लग्न में मंगल का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

तलवाराकृति– ऐसे अंगूठे तलवार की आकृति के समान कुछ पीछे की ओर **झुके** हुए **स्निग्ध** पुष्ट व दृढ़ होते हैं। देखें चित्र नं. 69, तथा चित्र नं. 68 से इसकी तुलना करें।

ऐसे अंगूठे वाले जातक का बचपन सुखमय होता है तथा इनका जन्म उच्च कुल में होता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः धीमी गति से कार्य करना पसन्द करते हैं एवं अध्ययनशील प्रवृति के कारण किसी भी विषय में प्रवीणता हासिल कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों की सलाह कम मानते हैं तथा जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए अन्तः प्रेरणा से संचालित होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में समपर्ण की भावना के साथ कुछ स्वार्थी प्रवृत्ति भी होती है।

ऐसे व्यक्ति ऐश्वर्यशाली व विलासी जीवन भोगते हुए दूसरों पर अनुशासन करना ज्यादा पसन्द करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य क्षेत्र में कुशल होते हैं। ऐसे व्यक्ति न्यायप्रिय होते हैं तथा अच्छे मकान, अच्छा खाना, अच्छा रहना व अच्छा व्यवहार करना-कराना पसन्द करते हैं। धार्मिक क्रिया-कलापों में रुचि होती है तथा सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कार्यों में आर्थिक सहायता (चन्दा) भी समय-समय पर देते रहते हैं।

ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय 22 से 25 वर्ष की आयु में शुरू हो जाता है। ऐसे जातक सुन्दरता व प्रेम के पुजारी होते हैं तथा इनके जीवन में अन्य स्त्रियों से भी सम्पर्क बना रहता है।

ऐसे जातक के गुप्त शत्रु भी होते हैं ; परन्तु धैर्य से काम लेने पर शत्रु भी मित्र हो जायेंगे। ऐसे अंगूठे वाले जातक की कुण्डली में सूर्य व शुक्र के कारण प्रबल राजयोग होता है।

धनुषाकृति– चित्र नं. 70 में दिखाई देने वाले अंगूठे तलवाराकृति की अपेक्षा पीछे की ओर ज्यादा झुक कर धनुष की आकृति को धारण कर लेते हैं। ऐसे व्यक्ति
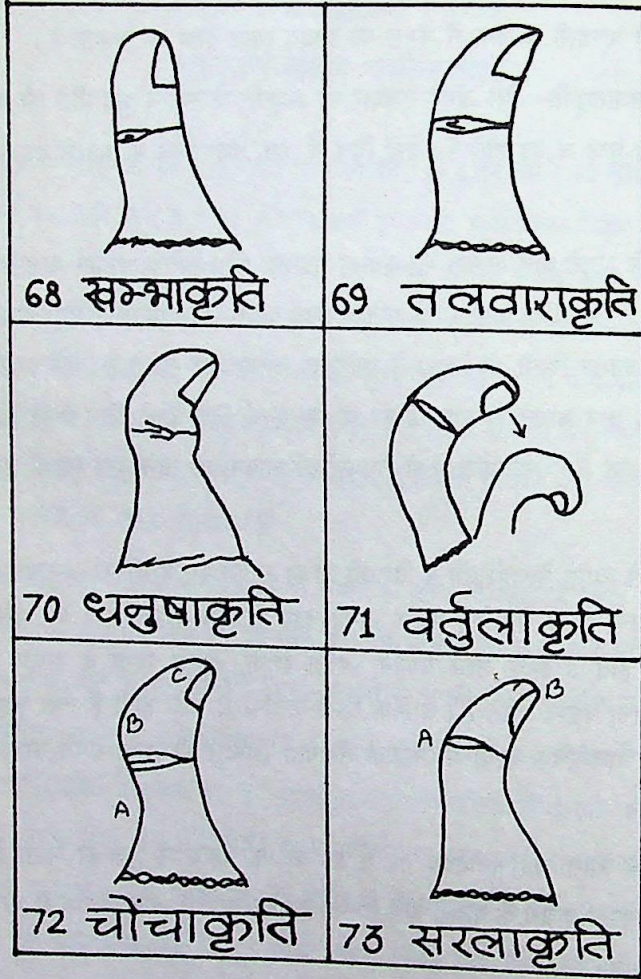
चित्र नं.– 68 से 73 तक

प्रायः पढे-लिखे, विनम्र व सहनशील होते हैं। ये धीमा व मधुर बोलना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक मानसिक रूप से सम्पन्न होते हुए भी झगड़े-टंटे व लड़ना बिल्कुल पसन्द

नहीं करते। ऐसे व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी बढ़ना जानते हैं। ये अपने परिवार, पत्नी, बच्चों व कुटुम्ब की जिम्मेदारियों को समझते हुए, उनके भरण-पोषण में कोई कसर नहीं छोड़ते। इनके जीवन के 26 वर्षों तक कुछ संघर्ष बना रहता है। परन्तु 27 से 31 वर्ष के मध्य इनका भाग्योदय हो जाता है। परधन व पराई स्त्री में इनकी रुचि कतई नहीं रहती। इनको जीवन में अच्छे गुरु की भी प्राप्ति होती है तथा समयानुसार आध्यात्मिक शक्तियाँ भी इनको मिल सकती हैं।

ऐसे अंगूठे वाले जातक का दूसरा भाग्योदय जीवन के 36 से 41 वर्ष की आयु के मध्य होता है। स्त्री जातक के हाथ में यह अंगूठा स्वामीभक्ति, पतिव्रत्य, सरलता एवं सज्जनता का द्योतक है। ऐसे अंगूठे वाले जातक की कुण्डली में गुरु का प्रभाव अधिक होता है।

वर्तुलाकृति : (देखें चित्र नं. 71)। ऐसे अंगूठे गोल घेरे की तरह पीछे मुड़ जाते हैं। ऐसे जातक कुछ बातूनी होते हैं। मधुमेह (Diabetes) व वीर्य दोष के शिकार होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रखर वक्ता होते हैं तथा अपनी वाणी के प्रभाव के कारण दूसरे लोगों को शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं, परन्तु अक्सर अपनी गलती को नहीं देख पाते।

ऐसे व्यक्ति या तो ज्यादा पढ़े-लिखे होते हैं या फिर बिल्कुल नहीं, परन्तु दोनों ही परिस्थितियों में इनका बौद्धिक विकास प्रखर होता है। इनको जीवन में अधिक परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु उसका लाभ आनुपातिक रूप से बहुत कम मिलता है। ऐसे व्यक्ति भावुक व तुनक मिजाजी होते हैं ; और हवाई किले बनाते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति वाक् शक्ति से परिपूर्ण किन्तु शारीरिक शक्ति से शून्य होते हैं। जीवन में पत्नी पक्ष के द्वारा इनको धोखा अवश्य होता है।

ऐसे जातक सिरदर्द, पेटदर्द (कब्जी) के बीमार होते हैं तथा किसी न किसी प्रकार से पारिवारिक तनाव इनको बना रहता है। ऐसे व्यक्ति विशाल हृदय व रईस दिल होते हैं; परन्तु अक्सर जमाना इनकी जीते जी कद्र नहीं करता।

इनके जीवन का भाग्योदय 42 व 44 वर्ष की आयु के मध्य बनता है। ऐसे जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए तथा आत्मविश्वास को प्रबल रूप से बढाना चाहिए। स्त्री जातक को अपना चित्त घरेलू बातों से हटाकर ईश्वर-चिन्तन में लगाना चाहिए। ऐसे अंगूठे वाले जातक के लग्न पर बुध व चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

चोंचाकृति– इस प्रकार के अंगूठे पीछे की ओर मुड़ने वाले होते हैं ; परन्तु इसका द्वितीय पेरुआ (A) पतला होता है। प्रथम पेरुआ चौड़ा व कठफोड़े पक्षी के गले की तरह गोल (B) होता है, परन्तु इस पेरुए का नख वाला भाग अत्यधिक पतला होता हुआ चोंच की आकृति (C) को धारण कर लेता है। (देखें चित्र नं. 72)। ऐसे अंगूठे वाले जातक की तर्क शक्ति पुष्ट होती है। ऐसे जातक दूसरों के साथ जल्दी घुल-मिल नहीं पाते। ऐसे व्यक्ति संगीत व कला के प्रेमी होते हैं ; परन्तु धीमी गति से आगे बढ़ पाते हैं। ऐसे जातक के बच्चों व पत्नी पर जब कोई संकट आता है ; तो ये भारी चिन्तित व परेशान हो जाते हैं। छोटी-छोटी बातों को लेकर बड़ी भारी चिन्ता रहती है। आर्थिक परेशानियों को लेकर जीवन में कर्जा भी हो सकता है।

ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय जीवन के 32 वर्षों में बनता है तथा द्वितीय भाग्योदय 38 वें वर्ष में बनता है। ऐसे व्यक्ति को मकान, वाहन व पुत्र-पौत्रादि के सभी सुख उपलब्ध रहते हैं।

ऐसे अंगूठे वाले जातक की कुण्डली पर मंगल व राहु का स्पष्ट प्रभाव होता है तथा 45 वर्ष की आयु तक सुखी व समृद्ध हो जाते हैं। ऐसे जातक को छोटी-छोटी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए तथा अपनी बात को जबर्दस्ती मनवाने का पूर्वाग्रह भी नहीं करना चाहिए। तभी विशेष उन्नति की ओर अग्रसर हो पायेंगे।

सरलाकृति (चित्र नं. 73)– जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है ऐसे अंगूठे के दोनों खण्ड गांठरहित, कुछ पतले (A) तथा सरल होते हैं। प्रथम खण्ड का मुड़ान (A से B) जातक की गम्भीर व मिलनसार प्रवृत्ति को बताता है। ऐसे व्यक्ति तार्किक व चिन्तक

होते हैं। ऐसे जातक राजनीति में भी दक्ष होते हैं तथा साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति से काम लेने में कुशल होते हैं।

ऐसे जातक विद्वान् व प्रबुद्ध क्रिया शक्ति वाले होते हैं। ऐसे जातक छोटे से सूत्र के माध्यम से किसी भी रहस्य की गहराई व जड़ में पहुंचने में समर्थ होते हैं।

ऐसे व्यक्ति गुरू व बड़ों के प्रति श्रद्धावान होते हैं तथा सज्जनता, विनम्रता एवं मानवीय गुणों से ओत-प्रोत होने के कारण दूसरे व्यक्तियों को शीघ्र ही अपने आकर्षण केन्द्र में ले लेते हैं। ऐसे जातक की अन्तर्मुखी प्रतिभा होती है ; परन्तु अपने जन्म स्थान में रहकर तरक्की नहीं कर पाते। ऐसे अंगूठे वाले जातक की कुण्डली में बुध व शुक्र का प्रभाव अधिक होता है तथा इनके जीवन का प्रथम भाग्योदय 25 से 28 वर्ष की आयु में होता है। यह अंगूठा सुनियन्त्रित कल्पना, प्रेम व तर्क शक्ति को उद्बोधित करता है।

ऐसे जातक सरल स्वभाव के होते हुए भी जीवन के व्यावहारिक-क्षेत्र में कुशल होते हैं। यद्यपि जीवन की प्रथम अवस्था में ही यथेष्ट द्रव्य कमाना शुरू कर देते हैं ; परन्तु स्थायी पूंजी मध्य आयु के बाद ही बन पाती है। जीवन के दूसरे भाग्योदय का समय 34 से 36 वर्ष की आयु है। ऐसे जातक को वाहन, नौकर, मकान व स्त्री का सुख बराबर मिलता है। इनका तीसरा भाग्योदय ठीक 45 वर्ष की आयु में बनता है। यदि ऐसा अंगुष्ठ स्त्री जातक का हो तो वह तीन से पांच पुत्रों की माता होती है एवं कुछ बिरले भाग्यशाली ही ऐसे अंगुष्ठ वाली स्त्रियों के पति होते हैं।

20

आकार-प्रकारात्मक वर्गीकरण

अंगूठे के जन्मकालिक आकार प्रकार को लेकर किये गये विभाजन आकार-प्रकारात्मक वर्गीकरण कहलाते हैं। आ-कृतिमूलक वर्गीकरण व इनमें मुख्य रूप से यह अन्तर है कि आकृतिमूलक में समूचे अंगूठे के प्रतिबिम्ब पर बाहरी तत्वों का आरोप किया गया है। परन्तु प्रस्तुत वर्गीकरण में अंगूठे की जन्मकालिक स्थिति के आकार-प्रकार को लेकर विभाजन किया जा रहा है, जिनमें से दस मुख्य विभाजन इस प्रकार है—
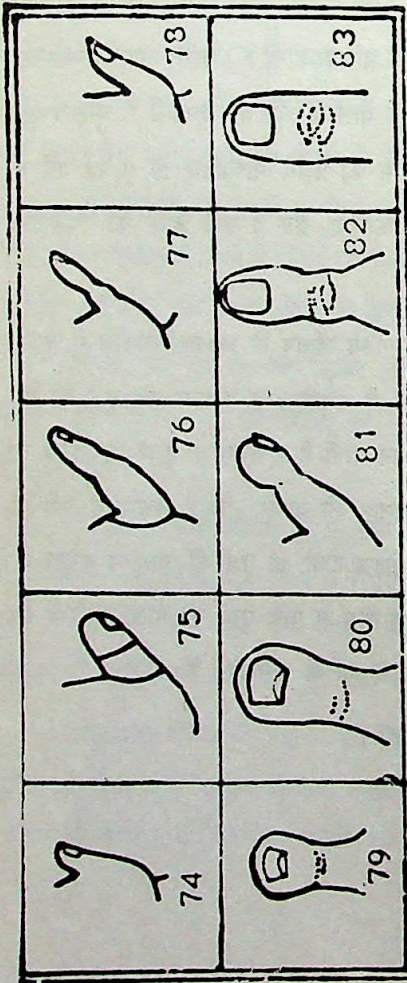
1. अविकसित
2. मोटा,
3. लम्बा व दुबला
4. टेढ़ा-मेढ़ा
5. समतल
6. गोल
7. विस्तृत
8. गद्दाकार
9. कटिप्रदेशमूलक
10 पूर्ण विकसित

चित्र नं. 74 से 83 तक।

(1) अविकसित अंगूठा चित्र नं. 74

ऐसे अंगूठे हथेली से बिल्कुल चिपके रहते हैं। ऐसे लोग तर्क शक्ति रहित मूर्ख और अव्यावहारिक होते हैं। इनमें पाशविक प्रवृत्ति व क्रूरता अधिक होती है। मानवीय संवेदना से शून्य ऐसे जातक विपरीत लिङ्गी से पशुतुल्य व्यवहार करते हैं। ऐसे जातक की शारीरिक शक्ति असामान्य होती है। प्रायः अनपढ़ व जंगली लोगों में ऐसे अंगूठे पाये जाते हैं।

(2) मोटा अंगूठा चित्र नं. 75

ऐसे अंगूठे इतने मांसल होते हैं कि इनमें अंगूठे के खण्डों (Phalanx) के गांठ वाले स्थल का पता ही नहीं चलता। छिले हुए केले के समान दिखाई देने वाले इस अंगूठे को कुछ पाश्चात्य विद्वान् आदिम अंगूठा भी कहते हैं। ऐसे अंगूठे वाले जातक पाशविक वृत्ति वाले, विषय भोगों में लिप्त रहने वाले क्रूर व डकैत होते हैं। ऐसे व्यक्ति मानसिक शक्ति से कमजोर किन्तु शारीरिक शक्ति से बलवान, अभिमानी व अहंकारी होते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में किसी भी खतरे की परवाह नहीं करते तथा वर्तमान समय का आनन्द भोगने में व्यस्त ; किन्तु भविष्य के प्रति लापरवाह रहते हैं। किसी भी प्रकार से द्रव्य कमाना व भौतिक सुख भोगना ही इनका परम लक्ष्य होता है।

(3) लम्बा व दुबला अंगूठा चित्र नं. 76 -

ऐसे जातक में कुछ कलात्मक शक्तियों का विकास रहता है। यह स्वास्थ्य व स्फूर्ति का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति शिक्षित होते हैं तथा इनमें कवित्व व कलात्मक गुणों की प्रचुरता रहती है ; परन्तु इनके जीवन का विकास धीमी गति से होता है। इनके जीवन में प्रेम-प्रसङ्ग जरूर बनता है ; परन्तु उसमें सफलता संदिग्ध रहती है। ऐसे व्यक्ति प्रायः खर्चीली प्रवृत्ति के जातक होते हैं। रुपया इनके हाथ में टिकता नहीं।

(4) टेढ़ा-मेढ़ा अंगूठा (Crooked-thumb) चित्र नं. 77-

दबे हुए टेढ़े-मेढ़े व कुटिल अंगूठे वाले जातक धोखेबाज, धूर्त व ठग होते हैं। ऐसे व्यक्ति अविवेकी, हिंसक व क्रोधी होते हैं। हीन मनोवृत्ति वाले ऐसे जातक समाज

में कलंक होते हैं। गलत तरीकों से रुपया कमाते हुए भी ऐसे जातक जीवन में कभी धनाढ्य नहीं हो पाते। आध्यात्मिक विद्या, धर्म व ईश्वर शब्द ऐसे लोगों के लिए निरर्थक होते हैं।

(5) समतल-अंगूठा (Flat-thumb) चित्र नं. 78-

प्रस्तुत चित्र में अंगूठे की ऊपरी गोलाई समतल है। ऐसे जातक स्वार्थी व संकुचित वृत्ति वाले होते हैं। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी ये रुपया खर्च करने में बहुत संकोच वृत्ति से काम लेते हैं। ऐसे जातक अपना कारोबार व गृहस्थी कुशलता पूर्वक चला लेते हैं ; फिर भी ये ज्यादा लोगों से मिलना-जुलना पसन्द नहीं करते।

(6) गोल अंगूठा (Round-thumb) चित्र नं. 79-

ऐसे जातक भावुक व प्रेमी होते हैं ; परन्तु इनमें ईर्ष्या व द्वेष वृत्ति भी अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है। ऐसे जातक कुछ डरपोक स्वभाव के होते हुए भी चालाक होते हैं। इनको चटपटी वस्तुएँ खाने का शौक होता है। फलतः इनको उत्तेजना व क्रोध शीघ्र आता है। उत्तेजना के समय ये अपना भला-बुरा तथा आगा-पीछा कुछ भी नहीं सोच पाते। ऐसे जातक कानों के कच्चे होते हैं। फलतः इनसे मित्रता हानिकारक भी होती है।

(7) विस्तृत अंगूठा (Broad-thumb) चित्र नं. 80-

ऐसे व्यक्तियों को वायु विकार की शिकायत रहती है। व्यावहारिक होते हुए भी क्रोध पर काबू पाना इनके लिए सम्भव नहीं। ऐसे जातक का गुस्सा शीघ्रता से उतर जाता है तथा बाद में पछताते हैं। इनके गृहस्थ जीवन में कलह सदैव चलता ही रहता है। आर्थिक व मानसिक दृष्टि से ये जातक सम्पन्न होते हैं तथा धर्म-कर्म में भी इनका विश्वास अटल रहता है।

(8) गदाकार अंगूठा (Clubbed-thumb) चित्र नं. 81-

ऐसे अंगूठे का प्रथम खण्ड गदा के समान गोल होता है द्वितीय खण्ड अपेक्षाकृत पतला किन्तु मोटा होता है। पाश्चात्य विद्वान् एकमत से इसे खूनी का अंगूठा

(Murderer's thumb) कहते हैं। ऐसे व्यक्ति हिंसक होते हैं तथा किसी की भी हत्या किसी भी प्रकार के शस्त्र से करना इनकी सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। मानवीय संवेदना से हीन होने के कारण ये क्रूरतम वृत्तियों के पोषक होते हैं तथा इसके लिए इनको कोई पश्चाताप भी नहीं होता।

(9) कटिप्रदेश-मूलक अंगूठा (Waist-thumb) चि. नं. 82-

जैसा कि नाम से स्पष्ट है ऐसे अंगूठे का मध्यखण्ड कुछ पतला होता है। तत्पश्चात् इसका कटिप्रदेश (स्त्रियों की भांति) स्पष्ट दिखलाई देता है। ऐसे जातक प्रबुद्ध, तेज-तर्रार व गम्भीर प्रवृत्ति वाले होते हैं तथा अपनी अध्ययनशील प्रवृत्ति के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसे जातक समाज-सेवी, सभ्य व शांतिप्रिय होते हैं तथा दूसरों के झगड़ों में मध्यस्थता कर के उसे भी शान्त कराने में दक्ष होते हैं। ऐसे जातक राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में बराबर सफलता प्राप्त करते देखे गये हैं।

(10) विकसित अंगूठा (Full-thumb) चित्र नं. 83-

इस प्रकार के अंगूठे का द्वितीय खण्ड परिपूर्ण व पुष्ट होता है। ऐसे जातक कपट रहित होते हैं। ऐसे जातक में आत्मविश्वास गजब का होता है। ये धार्मिक, आर्थिक व बौद्धिक क्षमता से सम्पन्न एवं स्वाभिमानी होते हैं।

ऐसे व्यक्ति सत्यवक्ता व ईमानदार होते हैं। जैसा सोचत हैं, वैसा ही स्पष्ट व खुले शब्दों में कह देते हैं तथा इस बात पर तनिक भी विचार नहीं करते कि श्रोता पर इसका क्या असर पड़ेगा। सारांशतः विकसित अंगूठा शारीरिक व मानसिक शक्ति का उद्‌बोधक है। ऐसे जातक का मस्तिष्क क्रियाशील एवं शरीर चेष्ठावान् होने के कारण ये पूर्णतः महत्त्वकांक्षी व्यक्ति कहलाते हैं।

21

पर्वपृष्ठाकृतिमूलक वर्गीकरण

अंगूठे के प्रथम पर्व के पृष्ठभाग की आकृति को आधार मानकर किये गये सभी विभाग पर्वपृष्ठाकृतिमूलक वर्गीकरण कहे जायेंगे। ये मुख्यतः पांच भागों में विभक्त किये जा सकते हैं –

(1) नोकदार (Pointed)

(2) सूच्याकार (Conic)

(3) वर्गात्मक (Square)

(4) फैले हुए सिरेवाला (Spatulate)

(5) आयताकार (Rectangular)
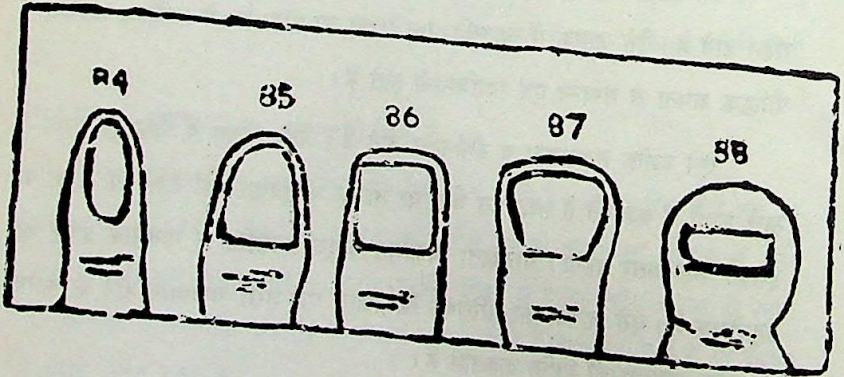
चित्र नं.–84 से 88 तक।

1. नोकदार अंगूठा (Pointed-thumb) देखें चि. 84-

ऐसे अंगूठे देखने में बहुत सुन्दर दिखलाई पड़ते हैं। ऐसे अंगूठे मूल से चौड़े व मध्य में गोल तथा नाखून के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते नुकीले हो जाते हैं। स्त्री जातकों

में प्रायः इस प्रकार के अंगूठे पाये जाते हैं। ऐसे अंगूठे नाजुक मिजाजी, सौन्दर्ययुक्त व भावात्मक व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे जातक आदर्शवादी, काल्पनिक, सज्जन व अति प्रेमी होते हैं। परन्तु शारीरिक श्रम इनके बस का खेल नहीं। ऐसे जातकों में स्वचिन्तन अधिक होता है। इसलिए लोगों की नजर में ये स्वार्थी माने जाते हैं। फिर भी मित्रता की दृष्टि से ऐसे जातक श्रेष्ठ मित्र साबित होते हैं।

2. सूच्याकार अंगूठा (Conic-thumb) देखें चि. 85-

जैसा कि नाम से स्पष्ट है ऐसा अंगूठा पीछे से चौड़ा व ऊपर से गोलाकार संकड़ा (सूजे की तरह) होता है। ऐसे जातकों में कल्पना के साथ व्यावहारिकता का सम्मिश्रण होता है। ये स्वादु भोजन, सुन्दर वस्त्र, कलात्मक व सौन्दर्यपूर्ण सभी वस्तुओं के शौकीन होते हैं। इनमें शारीरिक व मानसिक क्षमताएं बराबर होती हैं। स्वचिन्तन के साथ-साथ इनमें परार्थ-चिन्तन की भावना भी रहती है। अतः ऐसे लोग सामाजिक-प्राणी होते हैं।

3. वर्गात्मक अंगूठा (Square-thumb) देखें चि. 86-

ऐसे जातक कर्मठ व क्रियाशील होकर मात्र कर्म में ही विश्वास रखते हैं। ये पूर्णतः भौतिकवादी व व्यवहारशील होते हैं। झूठी शान-शौकत, कल्पना व ऊंचे आदर्शों में इनका विश्वास नहीं होता। ऐसे लोग मेहनतकश व सादगी पसन्द एवं प्रायः मध्यमवर्गी होते हैं। ये आंखें मूँद कर किसी बात पर विश्वास नहीं करते, अपितु अपनी बुद्धि व तर्क की कसौटी से सत्यासत्य का स्वयं निर्णय लेते हैं। धैर्य व साहस के साथ पैसा कमाना इनके जीवन का एक प्रमुख लक्ष्य होता है। स्पष्टवादिता व ईमानदारी इनकी प्रमुख विशेषता कही जा सकती है।

4. फैले हुए सिरेवाला अंगूठा (Spatulate-thumb) देखें चि. 87-

ऐसा अंगूठा सूच्याकार के ठीक विपरीत आकृति वाला होता है अर्थात् ऊपर से चौड़ा व नीचे से सकड़ा होता है। ऐसे व्यक्तियों में मानसिक क्रियाशीलता कुछ अधिक होती है। इनके जीवन में दार्शनिक चिन्तन के साथ आध्यात्मिक समन्वय भी पाया जाता

है। ये तत्त्ववेत्ता होते हैं। इनकी कल्पनाएं व्यावहारिक व खोजपूर्ण होती हैं। कुछ नवीन कार्य, नवीन आविष्कार, कुछ न कुछ नई खोज व अद्‌भुत कार्य करने की इनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में सफल होते देखे गये हैं।

यदि ये क्रियात्मक हो जाते हैं तो उच्चश्रेणी के खिलाड़ी, श्रेष्ठ इंजीनियर, अन्वेषक एवं वैज्ञानिक बन जाते हैं।

5. आयताकार अंगूठा (Rectangular-thumb) देखें चि. 88-

ऐसे लोगों के जीवन में भौतिक पृष्ठ-भूमि होती है। खाना, पीना व ऐश करना इनका सहज स्वभाव होता है। इनमें शारीरिक शक्ति व स्फूर्ति गजब की होती है ; परन्तु इनके शारीरिक व मानसिक परिश्रम का अंतिम लक्ष्य भौतिक सुखों की प्राप्ति है।

प्रायः ऐसे जातकों के जीवन में अध्ययन-वृत्ति नहीं होती। ऐसी परिस्थिति में इनका मानसिक विकास नहीं हो पाता। फलतः असामाजिक तत्त्वों की संगति में आकर ये लोग, डाकू, खूनी, हत्यारे व क्रूरतम पाशविक प्रवृत्ति को भी धारण कर सकते हैं। यदि इनका पालन-पोषण अच्छा हुआ हो तथा हथेली में अन्य शुभ चिह्न भी हों तो साहस की अधिकता होने के कारण ऐसे जातक कर्मठ कार्यकर्त्ता, श्रेष्ठ पुलिस अधिकारी, मिलट्री आफिसर, जासूस एवं कट्टर देशभक्त भी साबित हो सकते हैं।

22

अंगुष्ठ-पर्वपृष्ठ रेखाएं

आपने कई बार देखा होगा कि पुराने ज्योतिषी अंगूठे के पीछे की रेखाओं को पढ़कर भी भविष्यकथन करते हैं।

अंगूठे के पृष्ठ भाग की प्रथम संधि पर दिखलाई देने वाली इन चार रेखाओं का बड़ा भारी महत्त्व है। प्राचीन सामुद्रिक ऋषियों ने इन चार रेखाओं को जीवन की चार अवस्थाओं का प्रतीक माना है।
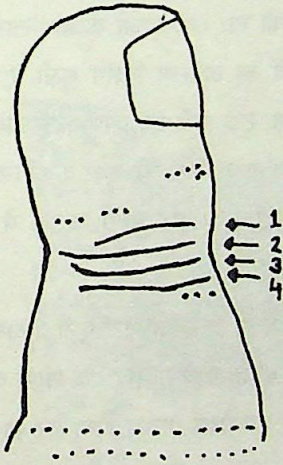
चित्र नं.– 89

(1) यह बाल्यावस्था की प्रतीक रेखा है। जीवन के दस संस्कारों तक इस रेखा का प्रभाव रहता है। अर्थात् गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातक कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्राशन, चूडा- कर्म, कर्णवेध एवं उपनयन इत्यादि तक यह रेखा प्रभावी रहती है। इस रेखा की अधिकतम सीमा 14 वर्ष की आयु है। इस रेखा से जातक की शारीरिक शक्ति व विकास पर विचार किया जाता हैं।

(2) नम्बर दो रेखा मनुष्य के 'ब्रह्मचर्यावस्था' अर्थात् यौवनकाल की प्रतीक रेखा है। जीवन के दो महत्त्वपूर्ण वेदारम्भ एवं समावर्तन संस्कारों तक इसका प्रभाव रहता

हैं। इस रेखा से जातक की शैक्षणिक, बौद्धिक एवं व्यावसायिक वृत्ति का अनुमान किया जाता है।

(3) रेखा क्रम तीन 'गृहस्थाश्रम' की प्रतीक रेखा है। विवाह संस्कार को लेकर जीवन के 25 से 50 वर्ष की आयु तक इस रेखा का प्रभाव देखा जाता है। इस रेखा से जातक के विवाह सुख, मध्यम आयु में स्वास्थ्य, धन व यश आदि पर विचार किया जाता है।

(4) चौथी रेखा अंगुष्ठ पर्वपृष्ठ की अन्तिम व मनुष्य की 'वानप्रस्थ' अवस्था की प्रतीक रेखा है। इसकी सीमा 50 से 100 वर्ष तक अथवा मृत्यु-पर्यन्त है। जीवन के वानप्रस्थ, सन्यास एवं अन्त्येष्टि इन तीन संस्कारों तक इसका प्रभाव रहता है। इस रेखा से जातक की अंतिम अवस्था, त्यागवृत्ति, वैराग्य, धर्मोपासना एवं तीर्थाटन आदि का विचार किया जाता है।

इस प्रकार से इन चारों रेखाओं का जीवन की चार अवस्थाओं के साथ तारतम्य है। यदि ये रेखाएं स्पष्ट व दीर्घ हों तो जातक की वह अवस्था विशेष सुखी व ठीक रहती है। इन रेखाओं में से जो-जो रेखाएं विखण्डित, टूटी-फूटी एवं जीर्ण-शोर्ण अवस्था में होती है तो जातक को उन-उन रेखाओं की प्रभावित आयु-सीमा तक कष्ट व कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार से जो रेखाएं अस्पष्ट होंगीं जातक में उन रेखाओं के तद्विषयक कारक-गुणों की कमी पाई जायेगी।

उदाहरणार्थ यदि किसी जातक के अंगुष्ठ पर प्रथम दो रेखाएं टूटी-फूटी व अस्पष्ट हों तथा अन्तिम दो रेखाएं स्पष्ट व दीर्घ हों तो ऐसे व्यक्ति मध्यम आयु तक संघर्ष करते रहते हैं तथा जीवन की 45 वर्ष की आयु से इनका भाग्योदय प्रारम्भ होता है। 45 वर्ष की आयु के पश्चात् ऐसे जातक को वाहनसुख, मकानसुख, नौकरसुख एवं संतानसुख मिलेगा तथा अंतिम अवस्था तक धनाढ्य, यशस्वी होता हुआ वैभवशाली मृत्यु को प्राप्त करता है। इस प्रकार से इन रेखाओं के न्यूनाधिक फलादेश को समझना चाहिए।

23

यव-रेखामूलक वर्गीकरण

अंगुष्ठ के प्रथम पर्व के नीचे प्रायः यह रेखा यवयुक्त होने से इसे 'यवरेखा' कहते हैं। हमारी शोध के अनुसार यह रेखा अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण हथेली में कहीं भी यव का होना बहुत अशुभ माना जाता है; परन्तु केवल इस रेखा में यव का पाया जाना अत्यधिक शुभ व श्रेष्ठ माना गया है। कहीं-कहीं पर प्राचीन विद्वानों ने (नाड़ी ग्रन्थों में) इसे 'पुष्प रेखा' एवं 'फल रेखा' के नाम से भी पुकारा है। इस रेखा से जीवन का विस्तार (Span of life) बाल्यावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था के सुख-दुःख को जाना जाता है।

चित्र नं.– 90

चित्र नं. 90 के अनुसार इस रेखा से आयु की गणना की जाती है। आयु गणना में औसत आयु 90 वर्ष का मान लेकर यह गणना दायें से बांयें की ओर (चित्रानुसार A-B के समान) अंकित की जाती है। मध्य के बिंदु का मान (C) 45 वर्ष आंका गया है।

इस रेखा को स्केल (scale) से नाप कर अलग कागज पर इसका आनुपातिक चिह्नों से युक्त विस्तृत विवेचन करके सूक्ष्म एवं सटीक फलादेश दिया जा सकता है।

इस रेखा पर अखण्ड यव का पाया जाना अत्यन्त सौभाग्य, समृद्धि एवं ऐश्वर्य का सूचक है। ऐसे व्यक्ति यवाकृति के अन्तरकाल में सुखी, आरामयुक्त एवं वैभवशाली जीवन बिताते हैं तथा यही समय इनके भाग्योदय का होता है जबकि इन्हें अल्प प्रयास से ही अधिक सफलता मिलती है। केवल लम्बाई ही नहीं, अपितु यव की आकृति व आकार के अनुसार इसके न्यूनाधिक फलादेश भी करें।

चित्र नं. 90 में दिखाई देने वाली A-B पूर्ण-यव रेखा है। यहां यव में कहीं भी कटाव, अपूर्णता या धुंधलापन नहीं है। यह सर्वश्रेष्ठ व उत्तम रेखा है। इस रेखा की लम्बाई 3.5 सें. मी. होने से हमने इसके 7 खण्ड किये तथा प्रत्येक खण्ड का मान 13 वर्ष रखा। अब इसका फलादेश इस प्रकार से होगा।

पूर्ण यव रेखा होने से इस जातक का जन्म अच्छे परिवार में हुआ है। यह जातक जन्म से भाग्यशाली कहा जा सकता है। इस जातक का निरोगी जीवन है तथा बाल्यावस्था सुखमय रही होगी। ठीक 26 वर्ष से 27 वर्ष की आयु उत्तरोत्तर वृद्धि एवं पूर्ण आनन्द भोगने का समय कहा जा सकता है। C बिन्दु को देखते हुए 45 से 48 वर्ष तक जातक के भाग्यमध्य का समय है जिसे हम जीवन का स्वर्णिम काल तथा द्वितीय भाग्योदय का समय कह सकते हैं। यह समय जातक का स्थायी वाहन सुख, मकान सुख, नौकर-चाकर सुख एवं स्थायी पूंजी निर्माण का समय कहा जा सकता है।

इस प्रकार की रेखाएं आकृत्यानुसार मुख्यतः 21 प्रकार की पाई जाती हैं। अब प्रत्येक प्रकार की यव रेखाओं का चित्र के क्रमानुसार विस्तृत विवेचन किया जा रहा है।

(1) A पूर्ण यव रेखा– सारांशतः अंगुष्ठोदर में पूर्णयव वाला जातक कुल का भूषण, यशस्वी तथा विनम्र स्वभाव का पुरुष होता है।

(1) B यदि द्वितीय पेरुएं के नीचे अंगुष्ठ मूल में यव का निशान हो तो जातक उत्तम पुत्र संतानों से युक्त होता है। उस व्यक्ति के प्रायः प्रथम पुत्र ही होता है तथा यहाँ पर जितने यव के निशान पाये जाते हैं जातक के उतने ही पुत्र होते देखे गये हैं।

(2) द्वय-यव रेखा– ऐसे जातक के जीवन में मध्यमायु में परिवर्तन आता है और जातक खूब द्रव्य कमाता है।

(3) अपूर्ण यव रेखा वाले व्यक्ति को पैतृक सम्पदा ससुराल सम्पदा से उतना लाभ नहीं मिल पाता जितना वह चाहता या सोचता रहता था। परन्तु आंशिक लाभ जरूर मिलता है।
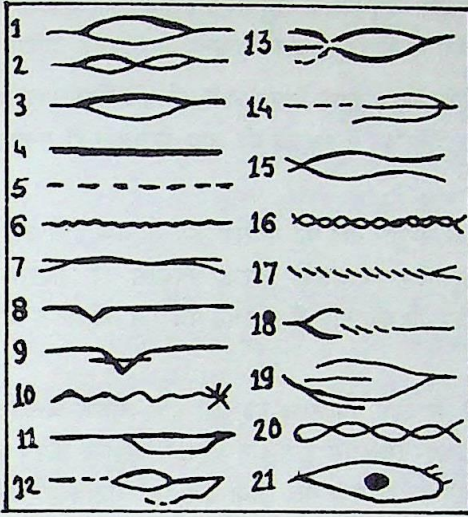
चित्र नं. – 91 से 111 तक

(4) अंगुष्ठ के उदर में मात्र सरल रेखा हो, कोई यवाकृति या अन्य निशान न हो तो व्यक्ति का जीवन 32 वर्ष तक संघर्षमय रहता है। उसके बाद अपने खुद के प्रयास से जातक आत्मनिर्भर होता हुआ धनवान होता है। ऐसा व्यक्ति सादा व सरल जीवन बिताना पसन्द करता है।

(5) अंगुष्ठ उदर में खण्डित सरल-रेखा बताती है कि जातक को अपने गुजर के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। ऐसे व्यक्ति के परिवार-कुटुम्ब में भी कोई न कोई विग्रह बना रहता है तथा गृहस्थ जीवन भी ज्यादा सुखी नहीं होता।

(6) जब यव रेखा लहरदार हो तो ऐसे व्यक्ति का चित्त स्थिर नहीं रहता। उसको अकारण लगातार मानसिक परेशानियां घेरे रहेंगीं। शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा में वह सुखी व प्रसन्न मन होता हुआ कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा में उदास व दुखी रहेगा। जीवन में धूप-छाँव की तरह सुख-दुःख उसके साथ रहेंगे। ऐसे जातक लाटरी, जुआ, सट्टा में ज्यादा रुचि रखते हैं।

(7) थोड़ी सी वक्र किन्तु अन्त में द्विशाखी (Froked) यव रेखा बताती है कि ऐसे जातक की बाल्यावस्था में ही माता की मृत्यु हो जाती है। वह बालक बकरी या अन्य किसी के दूध से पालित होता हुआ मातृ-सुखहीन होता है। ज्योतिष के हिसाब से

मकर लग्न हो एवं चौथे स्थान में नीच के शनि के साथ राहु की युति से इस योग की पुष्टि होती है। हमारे परीक्षित अनुभवों के अनुसार इस प्रकार की यवरेखा वाले जातक की कुण्डली में अन्य लग्नों में भी इसी प्रकार के अन्य योग मिलने चाहिएं।

(8) यव रेखा नीचे जाकर वापस उठान लेती हुई यदि त्रिकोणाकृति जैसा गड्ढा बनाती है तो ऐसे जातक के जीवन में 35 वर्ष की आयु के पश्चात् ही सन्तान की प्राप्ति होती है।

(9) चित्र नं. 9 के अनुसार यदि यह यवरेखा जरा सी गहराई में जावे तथा अन्य आड़ी रेखा अचानक उत्पन्न होकर उसको काटकर त्रिकोण की आकृति बना दे तो जातक को 33 वर्ष से 35 वर्ष की आयु में गुणवान पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी। जिससे उसका वंश चलेगा।

(10) इस प्रकार की अति वक्रात्मक यव-रेखा वाले जातक के जीवन में बहुत सारे दुश्मन होते हैं। नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा धन-हानि, व परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। ऐसे जातक प्रायः निसंतान होते हैं तथा गोद लिया हुआ पुत्र नालायक व बदमाश होता है।

(11) यदि यव रेखा प्रारम्भ में टूटी-फूटी हो तथा कुछ अन्तर के पश्चात यह रेखा स्पष्ट व दृढ हो तो इसका तात्पर्य यह है कि जातक का बचपन कष्टमय बीतेगा परन्तु युवावस्था में प्रवेश करते ही जातक का जीवन सुखमय व सम्पन्न हो जायेगा।

(12) चित्र 12 के अनुसार प्रारम्भ में खण्डित यव रेखा कुछ अन्तर के पश्चात स्पष्ट प्रकट होती हुई यदि यव की पूरी आकृति बना लेती है तथा अन्त में वापस मुड़ जाती है तो यह स्पष्ट बताती है कि ऐसा जातक बचपन में ही अपने जन्म स्थान (गांव) को छोड़ कर दूसरे स्थान (शहर) चला जायेगा तथा रिश्तेदारों व अन्य लोगों की मदद से जीवन की मध्यम आयु में खूब द्रव्य कमायेगा, परन्तु धीमे-धीमे अन्तिम अवस्था में सब धन समाप्त हो जायेगा। उसकी पत्नी उसके सामने ही मर जायेगी।

(13) इस प्रकार की यह रेखा प्रारम्भ में यवाकृति को धारण करना चाहती है ; परन्तु मध्य में जाकर यव की पुष्ट आकृति धारण करती है। इस प्रकार की रेखा प्रारम्भ व अन्त में बहुशाखी होती है। यह रेखा बताती है कि जातक के सभी अभिभावकों की मृत्यु बचपन में ही हो जाती है। वह इधर-उधर भटकता रहता है। परन्तु ठीक 28 वर्ष से कमाना प्रारम्भ करता है तथा जीवन में खूब द्रव्य, यश व प्रतिष्ठा कमायेगा।

(14) इस प्रकार की यवरेखा वाले जातक जो कुछ कमाते हैं वह 35 से 40 वर्ष की आयु के मध्य खर्च कर देते हैं। उन पर कर्ज रहता है तथा पैतृक धरोहर को बेचकर अन्त में कुकर्मों में रत रहते हुए जीवन को बिताते हैं।

(15) जब यव रेखा मछली की आकृति को धारण कर लेती है तो ऐसे जातक सुखी, सम्पन्न व खुशदिल होते हैं। ऐसे जातक का जन्म प्रायः चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में ही होता है। ऐसे जातक धार्मिक विचारों वाले होते हुए दूरस्थ प्रदेशों या तीर्थों की यात्रा अधिक करते हैं।

(16) इस प्रकार की संकीर्ण क्रास युक्त यवरेखा क्रूर, निर्दयी व जिद्दी स्वभाव के जातक का बोध कराती है। ऐसे जातक की शैक्षणिक योग्यता कम होती है। वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होता है। भारी परिश्रम व कठिनाइयों का सामना करते हुए जीवन में कभी पूंजी, यश व प्रतिष्ठा का संकलन नहीं कर पाते। कुछ विद्वान इसे 'मकर रेखा' भी कहते हैं। इस रेखा वाले जातक अधिकांशतः झगड़ालू होते हैं।

(17) इसका फल भी उपर्युक्त रेखा वाले जातक के समान ही जानें। यह रेखा टूटी हुई होने के कारण ऐसे जातक का मनोबल कमजोर होता है तथा कभी भी निराश होकर आत्महत्या कर सकता है।

(18) ऐसे व्यक्ति बचपन में कुछ सुखी, किन्तु 16 वर्ष की आयु के पश्चात् दुर्दैव के शिकार हो जाते हैं। जीवन के 32 वर्ष की आयु में निश्चित परिवर्तन आता है तथा जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर बहुत सारी सम्पदा व दौलत के स्वामी बनते हैं।

(19) यदि यव-रेखा अपने प्रारम्भिक स्थल में ही बहु-रेखा वाली होती हुई एक विशिष्ट प्रकार की धान के बालों से युक्त यवाकृति बनाती है तो ऐसा व्यक्ति बाल्यावस्था से ही सुखी होता हुआ, परिवार व कुटुम्ब वालों को तरक्की (प्रगति) प्रदान करता है तथा स्वयं भी अपने जीवन काल में अतुल धन, सम्पत्ति कमाता है। ऐसे व्यक्ति के पास स्थायी नौकर व वाहन सुख होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं।

(20) इस प्रकार की रेखा को यव माला कहते हैं। यह अति शुभ है। ऐसा जातक अनेक पुत्रों वाला, राजा, राज्याधिपति, राज्यपाल, सुखी लक्ष्मीवान किन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होता है।

यदि यह रेखा अशुभ सी दिखलाई पड़े तथा अन्य अशुभ चिह्न भी हाय में हों तो जातक को अन्तिम अवस्था में मृत्यु-दण्ड या फांसी होती है। श्री भुट्टो के हाथ में इसी प्रकार की यवरेखा उनकी मृत्यु का कारण बनी।

यदि ऐसी यवमाला अंगुष्ठ मूल में दिखाई पड़े तो ऐसे जातक को धनाढ्य व प्रतिष्ठावान ससुराल मिलता है तथा विवाह के पश्चात् उसका भाग्योदय होता है ; परन्तु इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति को धन, सम्पत्ति, सोना व भूमि की प्राप्ति होती है। ऐसे जातक की कुण्डली में सूर्य + राहु की युति पाई जाती है या राहु व सूर्य त्रिकोण (5, 8) में होते देखे गये हैं।

(21) यव रेखा पर यव न बन कर नेत्राकृति का पाया जाना अपने आप में एक शुभ चिह्न है। ऐसे जातक दिव्यद्रष्टा व अति-दूरदर्शी होते हैं। इनमें कुछ पूर्वाभास की शक्ति भी विद्यमान रहती है। अपनी अन्तर्शक्ति द्वारा दूसरों के मानसिक संकल्प-विकल्प को फौरन मालूम कर लेने में ये समर्थ होते हैं। देखें चि नं. 112.
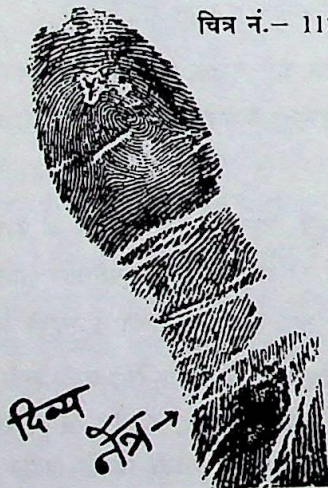
चित्र नं.– 112

प्रस्तुत दुर्लभ चित्र भारत के एक प्रसिद्ध दिव्य द्रष्टा योगी के हाथ के अंगूठे का प्रिंट है।

प्रसिद्ध हस्तरेखा विशारद् कीरो के हाथ के अंगुष्ठ मूल में यह नेत्राकृति सूक्ष्म रूप से देखी जा सकती है। (द्रष्टव्य 'Cheiro's Language of the Hand' पृ. सं. 129) स्वामी रामकृष्ण परमहंस के हाथ में भी यह निशान देखा गया था। स्मरण रहे कि जिस ज्योतिषी या भविष्यवक्ता के हाथ में ऐसा निशान दिखलाई पड़े तो समझ लें कि वह त्रिकालदर्शी है।

24

रेखात्मक वर्गीकरण

यव रेखा के अतिरिक्त अंगुष्ठोदर यव के पश्चात् अन्य रेखाएं भी कभी-कभी दिखलाई पड़ती हैं। सामुद्रिक ऋषियों ने इनको अलग-अलग नामों से अभिहित किया है।
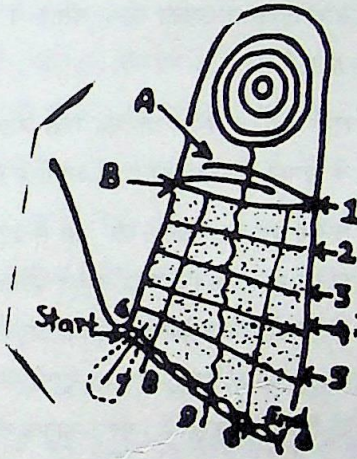
चित्र नं.– 113

1. पुष्परेखा या फल रेखा
2. मधुरा रेखा
3. मन्दरा रेखा
4. मन रेखा
5. रति रेखा
6. मल्लिका रेखा
7. वज्र रेखा
8. केसर रेखा
9. रिपु रेखा

इन रेखाओं के आधार पर अलग-अलग भविष्यवाणियाँ भी प्रस्तुत की हैं।

1. पुष्प रेखा–'रावण संहिता' में यव रेखा को पुष्प रेखा' या 'फल रेखा' के नाम से पुकारा गया है। ऐसी रेखा वाले जातक सुखी, सम्पन्न एवं आराम व ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाले होते हैं। पुष्प रेखा यदि धूमिल व अस्पष्ट हो तो भी जातक को खाने-पीने की कमी नहीं रहती; परन्तु उस व्यक्ति का बचपन बहुत कष्टमय कहा जा सकता है।

यदि यह रेखा प्रारम्भ में अस्पष्ट कटी-फटी हो किन्तु मध्यभाग में वापस सुस्पष्ट व गहरी दिखलाई पड़े तो जातक 22 वर्ष की आयु तक कष्ट में रहता है। पढाई उसकी 22 वर्ष के पहले ही छूट जाती है। जीवन में कटु अनुभव बाल्यावस्था से ही होने लग जाते हैं। परन्तु 28 से 32 वर्ष के मध्य अथाह सम्पत्ति कमाता है। यदि यह रेखा रस्सी के समान गुंथी हुई हो तो व्यक्ति क्रूर, झगडालू होता है तथा गरीबी में जीता है। यदि इस प्रकार की रेखा के साथ केसर, मल्लिका एवं रति रेखा भी दिखाई पड़े तो जातक त्यागी, ज्ञानी व तपस्वी होता है। उसका मोहभंग हो जाता है तथा उसका जन्म संसार में केवल कर्म-बन्धन तोड़ने व मोक्ष प्राप्ति के लिए होता है।

'नारद संहिता' में इसी रेखा को 'पराग रेखा' कहा है। यह यव रेखा जातक के पूर्व जन्म के शुभ-अशुभ कर्मों को दीपक के समान स्पष्टतः प्रकाशित करती है।

प्राचीन 'नारद संहिता' के अनुसार सम्पूर्ण यव रेखा जातक की 100 से 120 वर्ष की आयु को बताती है। (जिसका अब आधुनिक मान 90 वर्ष करना उचित प्रतीत होता है)। यव रेखा दो रेखाओं के जोड़ (योग) से बनती है। प्रत्येक यव मूलक अंगूठे में ये दोनों रेखाएं पाई जाती हैं। इसमें प्रथम रेखा A को तो आयु की तथा दूसरी सहायक रेखा B जातक के जीवन साथी के स्वरूप को दिग्दर्शित करती है। पुरुष जातक के हाथ में इस ठ रेखा को 'पति रेखा' कहेंगे तथा स्त्री जातक के हाथ में इसे 'पत्नी रेखा' कहेंगे।

जब यह पुष्प रेखा B यदि टूटी हुई हो तो वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण व कष्टदायक होगा। यदि इस रेखा पर काला तिल हो तो कमाई में कोई बरकत नहीं रहेगी तथा जीवन की पूर्ण यौवनावस्था में जीवन साथी की अकाल मृत्यु होती है। यदि यह रेखा B प्रारम्भिक अवस्था में धूमिल व खण्डित अवस्था में हो तो व्यक्ति की पत्नी दुश्चरित्र होती है तथा उसके कई लोगों से गलत सम्बन्ध होते हैं। यदि यह चिह्न स्त्री जातक के हाथ में हो तो उसके पति का अन्य स्त्रियों से गुप्त सम्बन्ध रहता है। यदि यह रेखा अपनी समाप्ति स्थान पर घूमिल व टूटी हुई हो तो जातक के पुत्र सन्तान की मृत्यु होती देखी गई है।

जिस अंगूठे पर यह रेखा B प्रारम्भ से ही एकदम स्पष्ट हो तो जातक का छोटी उम्र में ही विवाह हो जाता है। यदि ये सहायक रेखा B एक से अधिक हों तो जातक के उतने ही पति या पत्नियां होती हैं। जब कोई अन्य शुभ रेखा इस यवाकृति में आकर मिलती हो तो जातक को निश्चित भूमि लाभ होगा। इस बात की स्पष्ट सूचना भी देती है। जब यह 'फल रेखा' मत्स्याकृति को धारण कर लेती है तो जातक को ठंड, जुकाम व नजले की बीमारी रहती है। यह भी सम्भव है कि ऐसे जातक का जन्म मीन राशि में होवे। यदि इस रेखा पर क्रॉस (Cross) का निशान हो तो जातक की 37 से 39 वर्ष की आयु के मध्य चल रहे व्यापार या धन्धे में परिवर्तन आता है। इस काल से उसके पति/पत्नी की भी तबीयत खराब रहती है।

2. मधुरा रेखा (देखें चित्र 113 में 2)–

यदि यह रेखा छोटी किन्तु स्पष्ट व चमकीली हो तो जातक उदार हृदय व रईस तबीयत वाला व्यक्ति होता है।

3. मन्दरा रेखा (देखें चित्र नं. 113 में 3)–

यह रेखा दूरस्थ स्थलों की यात्राओं को प्रतिबिम्बित करने वाली रेखा है।

4. मन रेखा– यह रेखा यदि पुरुष जातक के हाथ में पाई जाती है तो उसके अन्य स्त्रियों से नाजायज ताल्लुकात होंगे। यदि यह स्त्री जातक के हाथ में हो तो उस स्त्री के कई पुरुष मित्र होते हैं जिनसे उसका शारीरिक सम्बन्ध भी होता है। यह रेखा कम हाथों में ही पायी जाती है। (देखें चित्र नं. 113 में 4)

5. रति रेखा (देखें चित्र नं. 113 में 5) –

कुछ विद्वान् लोग इसे 'मोहिनी रेखा' भी कहते हैं। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट ध्वनित होता है कि यह रेखा जातक के अपने जीवन साथी के प्रेम, लगाव (Sexual attachment), रुझान, व्यवहार निभाव एवं वैवाहिक सुख को बताती है। जब इस रेखा के ऊपर नीचे दो तीन सहायक रेखा होती हैं तो पुरुष जातक के अनेक प्रेम-सम्बन्ध होने की भविष्यवाणी करें।

यदि यह रेखा अस्पष्ट हो तथा अंगुष्ठोदर यव खण्डित हो तो आयु गणना करने पर उसी आयु में जातक की पत्नी की मृत्यु या तलाक होगी तथा इस घटना के बाद वह जातक तत्काल दूसरी शादी कर लेगा।

रति-रेखा वैवाहिक सुख एवं वास्तव में प्रणय-क्रीड़ाओं की उद्बोधक रेखा है। जब यह रेखा मोटी व भद्दी सी दिखलाई पड़े तो जातक का जीवन साथी प्रणय-प्रसङ्गों (काम-क्रीड़ाओं) से अनभिज्ञ व अनजान होता है। यह रेखा जितनी पतली व गहरी हो जातक को उतना ही नाजुक व तीव्र रति सुख मिलता है। जब यह रेखा बीच से टूटी हो तो उसका जीवन साथी उस जातक के प्रति उदास किन्तु अन्य के प्रति कामेच्छा रखने वाला होता है।

यदि इस रेखा पर द्वीप हो तो जातक की पत्नी को गुप्त रोग व गुप्त बीमारी होती है। जब यह रेखा प्रारम्भ से कुछ अस्पष्ट, अदृश्य हो तो जातक को वैवाहिक-सुख 28 वर्षों के पश्चात् मिलता है; परन्तु ठीक बीच भाग में से इस रेखा का अदृश्य होना व्यक्ति के मध्य जीवन में पत्नी की अचानक मृत्यु को बताता है। यदि यह रेखा दो रस्सियों की तरह जुड़ी हुई हो तो जातक के एक ही समय में दो विवाहित पत्नियाँ होती हैं, परन्तु दोनों से सन्तान नहीं होती। यदि इस रेखा पर काला बिन्दु हो तो जातक की पत्नी नमूनिया व तपेदिक की बीमारी से मरती है।

6. मल्लिका-रेखा (देखें चित्र नं. 113 में 6)–

जब इस रेखा पर या इसके आस पास, मत्स्य, ध्वजा, पत्ता या सर्प की केंचुली दिखलाई पड़े तो जातक अपने जीवन में ही ईश्वर के तुल्य सम्मान पाता हुआ पूजा जाता है।

यदि यहां पर सींग, द्वीप, सर्प, दांत, केकड़ा या बिच्छू की सी आकृति हो तो जातक दिव्य प्रतिभाओं से युक्त होता हुआ भी साधारण सा निम्न स्तरीय जीवन ही व्यतीत कर पाता है।

यदि मल्लिका रेखा दो सामानान्तर रेखाओं द्वारा बनी हुई दिखलाई पड़े तो जातक के जीवन में नदी के बहाव की तरह ही रुपया आता व जाता है। यदि यह रेखा अस्पष्ट व खण्डित हो तो जातक जीवन में अस्वस्थ व बीमार रहता है। यदि इस पर काला तिल हो तो जातक को गुप्त रोग, चिन्ता व बीमारी रहती है। यदि इस पर सफेद दाग या चिन्ह हो तो जातक को जुकाम, नजले की शिकायत रहती है।

जब यह रेखा नीली, बैंगनी व हरे रंग की हो तो जातक को गैस्टिक ट्रबल, डाइबिटीज एवं वीर्य दोष तथा शीघ्र पतन की बीमारी होती है।

यदि जातक के हाथ में यह रेखा रस्सियों की तरह जुड़ी हुई आकृति में हो तो जातक की सन्तानें श्रीमान्, धीमान्, प्रसिद्ध व बहादुर होंगी एवं जातक स्वयं धनवान व साहसी होगा।

7. वज्ररेखा (देखें चित्र नं. 113 में 7)–

इसको 'हीरक रेखा' भी कहते हैं। जिस जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र उच्च का हो, अथवा स्वगृही होकर केन्द्र में हो या योगकारक होकर लग्न में बैठा हो उस जातक के अंगुष्ठ मूल में निश्चित रूप से यह रेखा पाई जाती है। यह भाग्य एवं ऐश्वर्य की अधिष्ठातृ रेखा मानी गई है।

जब किसी जातक के हाथ में रति रेखा विखण्डित हो और वज्ररेखा स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत धनाढ्य होता है ; परन्तु उसे शराब की लत हो जाती है एवं गुप्त (सैक्स) रोगों से ग्रसित होता है। परन्तु यदि केसर-रेखाओं की भी उपस्थिति हो तो जातक निश्चित रूप से करोड़पति होता है। उसकी कुण्डली में राजयोग प्रबल होता है तथापि उसे कोई न कोई बीमारी भी अवश्य रहती है।

यदि वज्ररेखा स्पष्ट हो किन्तु केसर-रेखाएं व फलरेखा विखण्डित हो तो भी जातक लाखों करोडों में खेलता है ; परन्तु उसका भाग्य उस जुआरी की तरह होता है जिसके रुपये आने व जाने का कोई पता नहीं चलता।

(8) केसर रेखा (देखें चित्र 113 में 8)

इस रेखा की उपस्थिति जातक के जीवन में यश, धन व भाग्य का उदय काल बताती है। इस रेखा की अनुपस्थिति अर्थाभाव व श्रमपूर्ण जीवन का दिग्दर्शन कराती है। यदि यह रेखा मोटी हो तो जातक अल्प परिश्रम से ही बहुत अधिक द्रव्य कमा लेता है। यदि यह रेखा टूटी हुई हो तो जातक को किसी धंधे में स्थायी लाभ नहीं हो पाता, उसको जीवन यापन के लिए बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जब यह रेखा बाल के समान पतली व सूक्ष्म अवस्था में हो तो जातक द्रव्य तो खूब कमाता है परन्तु उसको गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोगों का भय सदैव बना रहेगा। यदि यह रेखा यव रेखा से प्रारम्भ होकर मल्लिका रेखा तक एकदम स्पष्ट व गहरी दिखाई दे तो जातक का जन्म निश्चित रूप से उत्तम कुल व धनवान परिवार में होता है तथा ऐसा व्यक्ति कला का प्रेमी व कदरदान होता है।

यदि यह रेखा सर्पाकृति सी मुड़ी हुई टेढ़ी-मेढ़ी हो तो जातक को मानसिक कमजोरी रहती है। यदि इस प्रकार की छोटी-मोटी 16 रेखाएं दोनों हाथों में हों तो ऐसा जातक शाही घराने का स्वामी होता हुआ जीवन के सभी ऐश्वर्य, भोग विलास एवं सुख सुविधाओं को प्राप्त करता है। ऐसे जातक की जन्म कुण्डली में शुक्र या शनि उच्च के होकर योगकारक होते हैं।

जब यह रेखा अंगुष्ठ के प्रथम खण्ड में अस्पष्ट हो तथा द्वितीय खण्ड में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो तो ऐसे जातक का जन्म गरीब व निम्न परिवार में होता है ; परन्तु जीवन की द्वितीय अवस्था में उसका कारोबार अच्छा चल पड़ता है तथा फिर वह जातक प्रचुर यश व द्रव्य कमाता है।

यदि यह रेखा धागे की तरह हो तथा काली, नीली या पीली हो तो भी जातक के जीवन में धन व वैभव को निश्चित दर्शाती है परन्तु लाल, गुलाबी, चमकीली व स्निग्ध होने के कारण इस रेखा का महत्त्व कई गुणा बढ जाता है।

9. रिपुरेखा (देखें चित्र 113 में 9)–

इसको 'अमंगल रेखा' भी कहते हैं। यह रेखा यवरेखा, रतिरेखा एवं मल्लिका रेखा को काटती हुई शुक्र स्थल में प्रवेश करती है। जो रेखाएं इस रिपुरेखा के द्वारा छेदित हो जाती हैं उनका शुभ प्रभाव प्रायः नष्ट हो जाता है। अपने नाम व स्वरूप के अनुसार यह रेखा, दरिद्रता दुर्भावना एवं दुश्मनी की कारक रेखा है। इसकी उपस्थिति से जातक को अपने जीवन में कई शक्तिशाली शत्रुओं का सामना करना पड़ता है तथा अन्य शुभ लक्षणों या चिन्हों के बिना शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना दुष्कर हो जाता है।

रिपु रेखा जितनी गहरी व सुस्पष्ट हो तो जातक को उतना ही गम्भीर संकट व शत्रुभय सम्भव है। धूमिल रिपु रेखा जातक का ज्यादा नुकसान नहीं कर पाती। 'शत्रुञ्जय यज्ञ' के द्वारा रिपु रेखा के प्रभाव को नष्ट किया जा सकता है।

25

कोणात्मक वर्गीकरण

अंगूठे के हथेली से दूर होने की वृत्ति को ध्यान में रखते हुए समस्त मानव जाति के अंगूठे विशेष रूप से तीन भागों में विभक्त किये गये हैं। हथेली से बिल्कुल चिपके रहने वाले अंगूठे न्यूनकोण कहलाते हैं। हथेली व तर्जनी के साथ इसका विस्तार क्षेत्र 40° डिग्री से 80° डिग्री तक रहता है। दूसरी श्रेणी में समकोण अंगूठे आते हैं जो कि हथेली पर तर्जनी के साथ 90° डिग्री से 95° डिग्री तक का विस्तार क्षेत्र रखते हैं। तीसरी श्रेणी में वे अगूठे आते हैं जो कि 95° से 180° तक झुक-मुड़ सकने के कारण तर्जनी के साथ अधिक कोण बनाते हैं। जैसे कि प्रस्तुत चित्र नं. 114 में 1, 2, 3 क्रमानुसार चित्रित हैं।

चित्र नं. – 114
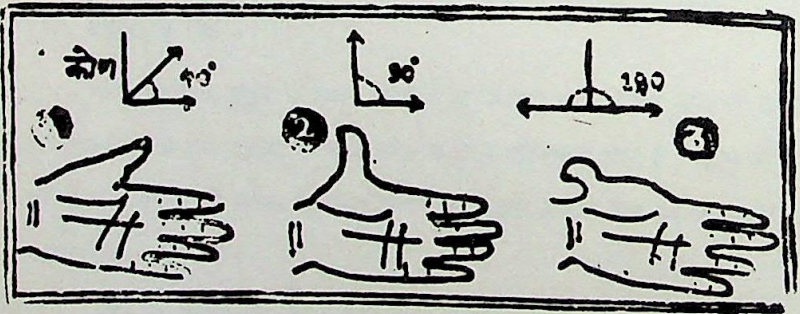
(1) न्यूनकोण (देखें चित्र 114 में 1) –

ऐसे अंगूठे मिट्टी के ढेले के समान हथेली से जुड़े होते हैं। इनकी लम्बाई बहुत ही कम होती है जो कि कठिनता से तर्जनी के नीचले पेरुएं की प्रथम संधि रेखा तक ही पहुंचते हैं। ऐसे व्यक्तियों का शारीरिक गठन छोटा, मोटा, ठिगना व गंठा होता है। ऐसे जातक अधिकतर मध्यम व निम्न वर्गी होते हैं। शिक्षा के अभाव में ये लोग धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते तथा आर्थिक अभावों से ग्रस्त रहते हैं। ऐसे लोग वास्तविक धर्म व सत् चित् आनन्द ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं कर भूत, प्रेत, कब्र, सन्त, समाधि, पितर इत्यादि की पूजा करते हैं। जादू, टोने, गन्डे-ताबीज में अपना रुपया व समय नष्ट करते हुए परम्परागत अन्ध विश्वासों में जीते हैं।

ऐसे व्यक्ति आलसी व तमोगुणी होते हैं। दैनिक व्यवहार में ये लोग गन्दे व अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हैं। अभक्ष्य भोजन, अवैध धन्धा एवं अव्यावहारिक जीवन इनकी निजी विशेषता कही जा सकती है। अधिकतर निम्न जाति की स्त्रियों के साथ इनका शारीरिक संबंध होता है। इसी प्रकार से स्त्रीजातक का पुरुषों के साथ समझें। निम्नवर्गीय स्तर के अलावा यदि ऐसा अंगूठा उच्च कुल के व्यक्ति के हाथ में पाया जाय तो निश्चित जानें वह जातक उपर्युक्त सभी दुर्गणों से ग्रसित होगा। ऐसे व्यक्ति धूर्त, बेईमान व धोखेबाज होते हैं। **प्रायः** ऐसे जातक गुलामी व मजदूरी के काम करने के लिए ही पैदा होते हैं तथा ज्योतिषी **को** उसकी पूरी दक्षिणा भी नहीं दे पाते। ज्यों-ज्यों ऐसे जातक का कोण 40° डिग्री से आगे बढ़ता जायेगा त्यों-त्यों इन दुर्गणों से निवृत्ति व सद्गुणों की आवृत्ति होती है।

(2) समकोण (देखें चित्र 114 में 2) –

हथेली से जुड़ते समय तर्जनी से समकोण 90° से 95° डिग्री के मध्य सीधे खड़े दिखलाई देने वाले इस अंगूठे के स्वामी सुन्दर, सुदृढ़, सुडौल व सभ्य होते हैं। ऐसे जातक व्यावहारिक व समझदार होते हुए शिक्षित होते हैं। ऐसे जातक दूसरों की अपेक्षाकृत

अधिक परिश्रम करते हैं। ऐसे व्यक्ति या कर्मचारी, धुन के धनी व बात के पक्के होते हैं। प्रतिशोध तथा बदले की भावना इनमें प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति जीवन में टूट सकते हैं ; परन्तु झुकना इनके बस की बात नहीं होती। यदि ऐसे जातक किसी के मित्र हो जायं तो अपने प्राणों पर खेलकर भी मित्र की रक्षा करेंगे; परन्तु यदि शत्रु हो जायं तो प्राण लिए बिना नहीं रहते।

ऐसे जातक रजोगुणी होते हैं। ये क्रियाशील व मेहनती होते हैं। धार्मिक आर्थिक मामले में इनमें रूढ़ीवादी व आधुनिक विचारों का समन्वय पाया जाता है। इनमें स्वाभिमान व अकड़ कुछ विशेष होती है। ये लोग अधिकतर स्वच्छन्द व स्वेच्छाचारी होते हैं तथा दूसरों के बहकावे में शीघ्र आ सकते हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक होते हैं तथा उत्तेजना में आकर अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के कार्य बेझिझक कर देते हैं। ऐसे जातक आर्थिक व मानसिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। श्रेष्ठ लेखक, डॉक्टर, वकील, ज्योतिषी के हाथों में प्रायः ऐसे अंगूठे पाये जाते हैं।

(3) अधिक कोण (देखें चित्र 114 में 3) –

जैसा कि चित्र में स्पष्ट है ऐसे जातक के अंगूठे मुलायम, शीघ्र मुड़ने वाले व अधिक कोण बनाने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक भावुक व कुछ लम्बे कद के होते हैं। ये विपरीत परिस्थितियों में भी विद्याध्ययन करते हैं। कला, संगीत, विज्ञान, मन्त्र, औषध व आध्यात्मिक विद्याओं के प्रति इनकी सहज प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति सभ्यतापूर्ण व्यवहार करने वाले एवं मधुरभाषी होते हैं। इनका धार्मिक क्षेत्र विस्तृत होता है। जीवन में अंतिम सत्य की परीक्षा के लिए ये सभी धर्मों के मार्गों को अपना सकते हैं। ऐसे व्यक्ति बार-बार अपने विचार बदलते रहते हैं और जीवन में काफी बाधाओं के बाद ही सफल हो पाते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी पीड़ा व गुप्त भेद को अपने तक ही सीमित रखते हैं। सिद्धान्तों व आदर्शों से बन्धे हुए ऐसे जातकों के जीवन का अपना एक अलग लक्ष्य होता है।

ऐसे जातक सतोगुणी होते हैं तथा फिजूलखर्ची, दानी, त्यागी व साहसी होते हैं। इनमें सात्विक गुणों की वृत्ति की अधिकता का पता 120° से 180° डिग्री के मध्य चलता है। यहां एक बात का ध्यान रखने योग्य है कि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के तीसरे पेरुए के मध्य भाग तक ही उत्तम मानी गई है। अधिक कोण वाले जातक के अंगूठे प्रायः लम्बे होते हैं। यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के मध्य पेरुएं के अर्धभाग तक या इससे ऊपर पहुँच जाय तो ऐसा व्यक्ति मूर्ख होता है। उस जातक के उपर्युक्त सभी गुण अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध होने के कारण दोष में परिणित हो सकते हैं। ऐसे जातक एक नम्बर के पहुँचे हुए महापुरुष हो जाते हैं जो कि लौकिक पुरुषों से भिन्न प्रकार का व्यवहार करते हैं या फिर अव्वल दर्जे के मूर्ख हो सकते हैं। अतः कोणात्मक वर्गीकरण के साथ अंगूठे की लम्बाई पर ध्यान देना भी आवश्यक समझना चाहिए।

26

आनम्यतामूलक वर्गीकरण

अंगूठे की लचक के आधार पर किया गया भेद आनम्यतामूलक वर्गीकरण कहा जाता है। अंगूठे के प्रथम खण्ड की गांठ (Knot) से इस लचक का सीधा सम्बन्ध होता है। इसके मुख्य रूप से दो भेद होते हैं–

(1) कठोर या अलचकदार अंगूठा (2) नम्र या लचकदार अंगूठा
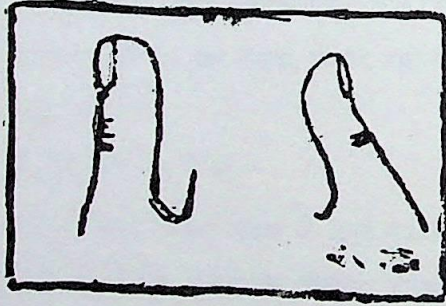
चित्र नं. 115, नं.–116

(1) कठोर अंगूठा

ऐसे जातक की इच्छा शक्ति प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करते हुए बलवान शत्रु के आगे भी हिम्मत नहीं हारते। ऐसे जातक अपनी भावनाओं, कल्पनाशक्ति व इच्छाओं पर दृढ़ नियन्त्रण रखते हैं।

ऐसे व्यक्ति दूसरों के गुप्त रहस्यों को पचाने में समर्थ होते हैं। ऐसे लोग अपनी स्वाभिमान प्रवृत्ति के कारण कुछ कम मिलनसार होते हैं तथा मित्र बनाने में जल्दी नहीं

करते। परन्तु यदि किसी को एक बार ये मित्र बना लें तो आजीवन उससे हर कीमत पर मित्रता निभायेंगे।

अपनी धुन व बात के धनी ऐसे लोग साधारणतया किसी को वचन नहीं देते। यदि दे दें तो आखीरी दम तक अपने वादे को निभाते हैं तथा तन, मन, धन उसके लिए समर्पित कर देते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वस्थ विचारधारा वाले होते हुए भी पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं।

यदि कठोर अंगूठे के समान ही अंगुलियां भी कठोर हों तथा सभी प्राकृतिक रूप से हथेली के अन्दर की ओर झुकी हुई सी दिखाई दें तो ऐसा जातक निश्चित रूप से हत्यारा होता है।

(2) लचकदार अंगूठा

ऐसे जातक विनम्र और शांत स्वभाव के होते हैं। इनको लड़ाई झगड़ा व वितण्डा कतई पसन्द नहीं होता। ऐसे जातक उदार हृदय के होते हैं। ऐसे जातक किसी भी व्यक्ति को शारीरिक व आर्थिक मदद करने में नहीं हिचकिचाते। अपनी इस सहानुभूतिपूर्ण उदार प्रवृत्ति के कारण ये समाज में आदर के पात्र होते हैं।

ऐसे जातक ऐश्वर्यशाली व विलासी जीवन को पसन्द करते हैं। मन व इच्छा की तुष्टि के सामने ये रुपयों की परवाह नहीं करते। ऐसे व्यक्ति मिलनसार व व्यावहारिक होते हैं। अपरिचित वातावरण में भी ये घरेलू माहौल बना लेते हैं। ऐसे व्यक्ति कला, साहित्य व अभिनय में रुचि रखने वाले, स्नेही तथा समन्वय नीति के समर्थक होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों की बातों को स्नेह व ध्यानपूर्वक सुनकर सम्मान देते हैं तथा अपने मत को मनवाने के लिए दुराग्रह नहीं करते। कुल मिलाकर ऐसे लोग विकसित मानसिक व बौद्धिक शक्ति वाले जातक होते हैं।

यदि इस प्रकार के अंगूठे अत्यधिक लचीले हों तो आकृतिमूलक वर्गीकरण के अन्तर्गत यह अंगूठा वर्तुलाकृति में व्यभिचरित हो जायेगा। देखें पृष्ठ संख्या 118।

27

पर्वात्मक वर्गीकरण

अंगूठे के तीन पेरुएं होने से यह मुख्यतः तीन भागों में बंटा हुआ होता है। पहला भाग वह होता है जो नाखून से चिपका होता है। दूसरा मध्य भाग तथा तीसरा भाग वह कहलाता है जो हथेली में शुक्र पर्वत से जुड़ा हुआ होता है। (देखें चित्र 117) कुछ विद्वान इन्हीं खण्डों को (1) ऊर्ध्वभाग (2) मध्यभाग तथा (3) अधोभाग के नाम से भी सम्बोधित करते हैं। तो अन्य विद्वान इन पेरुओं को सत, रज व तम से क्रमानुसार विभाजित करते हैं। कुछ भी हो, पाश्चात्य व पौर्वात्य दोनों विद्वानों ने एकमत से अंगूठे के प्रथम खण्ड को इच्छा शक्ति, विज्ञान, संकल्प शक्ति व भावना का द्योतक माना है। मध्य खण्ड तर्क, विवेक व विचार शक्ति, व्यवहार का प्रतिनिधित्व करता है, तथा तीसरा खण्ड भौतिक जगत, अनुराग, स्नेह, वासना, मैत्री एवं व्यवहार कुशलता को बताता है।

चित्र नं.–117
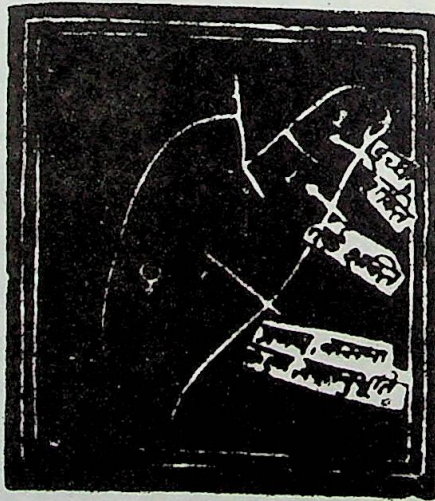
(1) **प्रथम पर्व**– प्रथम पेरुआं आध्यात्मिक जगत, प्रेम, इच्छा व निर्णय शक्ति का स्थान है। यह प्रशासन में योग्यता व शारीरिक शक्ति का भी द्योतक है। जिस मनुष्य के अंगुष्ठ का प्रथम खण्ड दूसरे खण्ड से लम्बा हो तो वह व्यक्ति स्वतन्त्र निर्णय लेने में समर्थ होता है तथा उसकी इच्छा शक्ति बड़ी प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति किसी की अधीनता व गुलामी में रहकर अपना विकास नहीं कर सकते। ऐसे जातक अपने पराक्रम व व्यक्तित्व के बल पर कुछ भी कार्य सम्पन्न कर देने में समर्थ होते हैं। इनकी आत्म शक्ति व हौसला बढ़ा-चढ़ा होता है।

यदि प्रथम तथा द्वितीय खण्ड बराबर लम्बे व पुष्ट हों तो ऐसे व्यक्ति समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। न तो ये किसी को धोखा देते हैं और न ही किसी व्यक्ति के द्वारा धोखा खा सकते हैं। ऐसे जातकों के जीवन में मित्रों की संख्या बहुत होती है तथा समाज में ऐसे व्यक्ति शीघ्र लोकप्रिय होते हैं। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपनी इच्छा शक्ति के कारण ये दुष्कर कार्य करने में भी सफल हो जाते हैं।

अंगुष्ठ के प्रिंट से व्यक्ति की लम्बाई बताना

अंगुष्ठ के इस खण्ड की लम्बाई से मनुष्य की औसत लम्बाई भी निकाली जा सकती है। इसके लिए प्रिंट लेना जरूरी है। इस सम्बन्ध में हमारे निष्कर्ष इस प्रकार है।

(1) 2.5 c.m. से 3.00 c.m. वाले जातक की लम्बाई 4 से 5 फीट के मध्य होती हैं।

(2) 3.5 c.m.= 5 फुट 5 इंच

(3) 3.6 c.m= 5 फुट 6 इंच

(4) 3.7 c.m.= 5 फुट 7 इंच

(5) 3.8 c.m.= 5 फुट 8 इंच

(6) 3.9 c.m.= 5 फुट 9 इंच

(7) 4.0 c.m.= 6 फुट (पूर्ण विकसित लम्बाई)

ध्यान रहे कि यह औसत लम्बाई है। आयु के परिमाण से इसके निष्कर्ष में हल्का सा परिवर्तन आ सकता है। इसके लिए प्रेक्टिकल अनुभव जरूरी है। थोड़े से प्रयास व अनुभव के पश्चात् आप अंगुष्ठ के प्रिंट से जातक की लम्बाई बता कर मित्र-मण्डली को अत्यधिक प्रभावित कर सकते हैं।

(2) **दूसरा पर्व**– यह व्यावहारिक ज्ञान, न्याय तथा तर्क-शक्ति का केन्द्र स्थान है। यदि यह खण्ड पहले खण्ड की अपेक्षा बड़ा और मजबूत हो तो यह साबति होता है कि व्यक्ति में तर्क-शक्ति जरूरत से ज्यादा है और ऐसा व्यक्ति तर्क-शक्ति में अपने सामने किसी को भी टिकने नहीं देगा। वाक्-शक्ति की अधिकता होने के कारण सभ्य समाज में इनको बकवासी व वाचाल भी कहा जाता है। छिद्रान्वेषक स्वभाव के कारण इनके अधिकारी इनसे नाराज रहते हैं। यदि पहला व दूसरा खण्ड बराबर लम्बाई मोटाई व चौड़ाई में हो तो व्यक्ति शान्त व ज्ञानवान होते हैं। ऐसे जातक सभ्य, ऊंचे स्तर के व्यापारी महत्त्वपूर्ण पदों पर अधिकारी और माने हुए कलाकार होते देखे गये हैं।

दोनों पेरुए बराबर लम्बे होते हुए यदि पहले पेरुएं की अपेक्षा दूसरा पेरुआं कमजोर, पतला व दुबला हो तो ऐसे जातक अपनी इच्छा पर न चलकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दूसरों की सलाह अवश्य लेते रहते हैं। ऐसे जातक भाग्यवादी होते हैं तथा इनमें आत्मविश्वास अपेक्षाकृत कुछ कम होता है।

(3) **तीसरा पर्व**– कई विद्वान अंगूठे के इस तीसरे खण्ड या पेरुएं का विभाजन अलग से न मानकर इस स्थान (चित्र 117 में 3) को शुक्र-स्थल कह कर अलग से पुकारते हैं। यह बात सत्य है कि यह शुक्र-स्थल ही है। फिर भी अंगुष्ठ के नीचे अवस्थित होने के कारण तथा अंगुष्ठ की दूसरी गांठ से इसका सीधा सम्बन्ध होने के कारण इसके न्यूनाधिक परिमाण से अंगुष्ठ के मूल आकार प्रकार व आकृति में अन्तर आता है। अतः अंगुष्ठ के तृतीय पेरुएं के रूप में इसका अध्ययन भी अपेक्षित है।

यह भौतिक-जगत, काम-वासना व इन्द्रियों का निवास स्थान है। जीवन साथी, वीर्य का स्थायित्व, विषय-वासना, ऐश्वर्य, व्यवहार-कुशलता एवं संतान सम्बन्धी भविष्यवाणियों हेतु इस खण्ड का विशेष महत्त्व है। वैसे तुलनात्मक दृष्टि से प्रथम दो पेरुओं की अपेक्षा यह भाग निश्चित ही उन्नत, सुदृढ़ एवं पुष्ट होता है। यदि यह खण्ड गुलाबी आभा लिए हुए सुन्दर दिखाई देता है तथा शुभ चिह्नों से युक्त हो तो ऐसे जातक

की जन्मकुण्डली में शुक्र उच्च का होता है तथा ऐसे जातक समाज व कुटुम्ब में कीर्ति अर्जित करते हुए ऐश्वर्य प्रधान जीवन बिताते हैं।

यदि यह स्थान अत्यधिक उठा हुआ हो तथा स्पर्श करने से ऊष्ण प्रतीत होता हो तो व्यक्ति कामुक व भोगी होता है। ऐसे जातक को प्रतिपल कामदेव सताता रहता है एवं विषय वासना से इनकी तृप्ति तब तक नहीं होती जब तक कि इस खण्ड में ऊष्णस्पर्शता समाप्त नहीं हो जाती। ऐसे जातक एक से अधिक विवाह करते हैं। फिर इनका गृहस्थ जीवन भी ज्यादा सुखमय नहीं होता।

यदि इस स्थान पर हरे व नीले रंग की नसें उभरी हुई दिखलाई पड़ें तो उस जातक की कुण्डली में निश्चय रूप से शुक्र नीच का होता है। ऐसे जातक का प्रेम शुद्ध न होकर वासना या छलमय होता है। इनके संकल्प अशुद्ध होते हैं तथा किसी भी विपरीत लिङ्गी के प्रति शीघ्र आकर्षित होकर मानसिक रूप से उसके साथ मन ही मन संभोग कामना करने लग जाते हैं। ऐसे जातक जीवन में कभी भी उन्नति नहीं कर पाते तथा इनकी आध्यात्मिक सिद्धियां शीघ्र ही समाप्त हो जाती हैं। ऐसे लोगों को अपने मन पर नियन्त्रण तथा वासना पर अंकुश रखना अनिवार्य है।

अंगुष्ठ के तीनों खण्ड बराबर हों, ऐसा देखने में बहुत कम आता है। ऐसे व्यक्ति उच्च श्रेणी के महात्मा व प्रकृतिलीन योगी ही हो सकते हैं तथा उनका कार्य क्षेत्र व्यावहारिक नहीं होकर पारमार्थिक होता है।

अंगुलियों का पर्वात्मतक वर्गीकरण

अंगुष्ठ की तरह अंगुलियों के पर्वात्मक वर्गीकरण पर भी ध्यान देना अत्यावश्यक है। पामिस्ट्री में फलादेश करने हेतु रेखाओं का जितना महत्त्व है उतना ही महत्त्व अंगुलियों के पर्वों का है। ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री में इन अंगुलियों के पर्वों का सूक्ष्म अध्ययन ग्रहों को खोज निकालने के लिए नितान्त जरूरी है। प्रायः बड़े-बड़े विद्वान् अंगुलियों के इन पर्वों पर ध्यान नहीं देते, जिससे फलादेश में बड़ी-बड़ी गलतियां रह जाती हैं। इस बात को

ध्यान में रखते हुए हमारे अनुसंधान केन्द्र के कार्यालय में प्राप्त बीस हजार से अधिक प्रिंटों का सार गर्भित विवे़चन इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रत्येक अंगुलियों का नाप तौल

1st
2nd
3rd
PHALANX
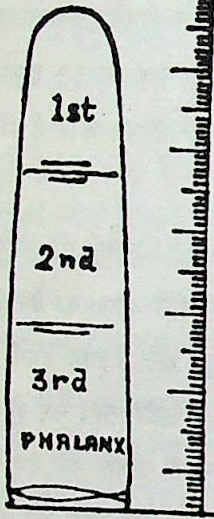
तर्जनी Jupiter	मध्यमा Saturn	अनामिका Sun	कनष्टिका Mercury	अंगुष्ट Venus

चित्र नं. – 118

अंगुष्ठ की भांति अंगुलियों के पर्व को भी तीन विभागों में विभक्त किया गया है। इसमें प्रथम पर्व को काल्पनिक जगत, द्वितीय को व्यावहारिक जगत तथा तृतीय को भौतिक जगत के नाम से जाना जाता है। इसके आनुपातिक सम्मिश्रण से फलित पक्ष की सूक्ष्मता को जाना जाता है।

पर्व का औसत परिमाप–

अंगुली की लम्बाई का पांचवें हिस्से का प्रथम खण्ड, तीसरे हिस्से का द्वितीय खण्ड तथा शेष बचे हुए तीसरे से कुछ अधिक हिस्सा तृतीय खण्ड का होना चाहिए। उदाहरणार्थ यदि किसी अंगुली का माप 10 c.m. है तो प्रथम खण्ड को 2 c.m. द्वितीय को 3 c.m. तृतीय को 4.5 c.m. होना चाहिए। यह पर्वों का औसत माप है जो कि व्यावहारिक तौर पर गणना करने पर अलग-अलग लम्बाई की इकाइयों में प्राप्त होगा। इसी आधार पर हमें विविध प्रकार के फलादेश प्राप्त होंगे।

तर्जनी अंगुली

प्रथम खण्ड– धर्म के प्रति आस्था, ईश्वर में विश्वास, आध्यात्मिक प्रेरणा।

द्वितीय खण्ड– महत्त्वकांक्षा, घमण्ड।

तृतीय खण्ड– शासन में प्रीति, शक्ति प्राप्ति की ललक।

(1) इस अंगुलि का प्रथम खण्ड यदि औसत माप व द्वितीय खण्ड से लम्बा हो तो जातक आस्तिक बुद्धि वाला एवं कट्टर धार्मिक होता है। ऐसे व्यक्ति दार्शनिक होते हैं तथा अध्यात्म विषय के अधिकार पूर्वक कुशल वक्ता होते हैं। यदि यह खण्ड जरूरत से ज्यादा लम्बा हो तो जातक अन्धविश्वासी होता है।

(2) यदि इस अंगुली का दूसरा खण्ड लम्बा हो तो व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है।

(3) यदि तीसरा खण्ड औसतन लम्बा हो तो व्यक्ति गर्विष्ट व शासन करने तथा प्रभुत्व प्रदर्शन में रुचि रखता है।

उपरोक्त खण्ड में से जो खण्ड सबसे छोटा तथा औसत माप से कम लम्बाई वाला होता है तो उसमें उपर्युक्त गुणों का अभाव पाया जाता है।

मध्यमा अंगुली

प्रथम खण्ड–उदासीन प्रवृत्ति, गम्भीरता।

द्वितीय खण्ड–कृषि सम्बन्धी रुचि, यान्त्रिक व मशीनरी ज्ञान, व्यापारिक प्रतिभा।

तृतीय खण्ड–कृपणता, मितव्ययिता व चतुरता।

(1) यदि इस अंगुली का प्रथम खण्ड औसतन द्वितीय खण्ड से अधिक लम्बा हो तो व्यक्ति गम्भीर स्वभाव का धैर्यशाली किन्तु चिड़चिड़ा होता है। यदि यह खण्ड जरूरत से ज्यादा लम्बा हो तो व्यक्ति निराशावादी एवं उदासीन प्रवृत्ति वाला होता है।

(2) यदि इसका द्वितीय पेरुआं औसत माप से बड़ा हो तो जातक कृषि, व्यापार, तन्त्र, मन्त्र, ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्रों से रुपया कमाने वाला व्यक्ति होता है।

(3) यदि इस अंगुली का तृतीय पेरुआं लम्बा व मजबूत हो तो जातक सर्वमान्य, लोकप्रिय मितव्ययी व सफल राजनेता होता है।

अनामिका

प्रथम खण्ड– कलात्मक अभिरुचि,

द्वितीय खण्ड– व्यावहारिक ज्ञान की समृद्धि,

तृतीय खण्ड– सुन्दर वस्तुओं का प्रदर्शन।

(1) यदि इस अंगुली का प्रथम खण्ड औसत माप से दीर्घ व द्वितीय पेरुएं से लम्बा हो तो जातक श्रेष्ठ कलाकार, उत्तम अभिनेता, सौन्दर्य उपासक किन्तु श्रमजीवी होता है। यदि यह पेरुआं अत्यधिक लम्बा हो तो व्यक्ति में कलात्मक प्रक्रिया की अधिकता होने के कारण कुछ पागलपन-सा हो जाता है।

(2) यदि द्वितीय पेरुआं लम्बा हो तो व्यापार में रुचि होती है तथा जातक व्यावहारिक ज्ञान में समृद्ध होता है।

(3) यदि इस अंगुली का तृतीय पेरुआं लम्बा व मजबूत हो तो जातक मिथ्याभिमानी एवं धन के दिखावे में अत्यधिक अभिरुचि रखने वाला होता है।

कनिष्ठिका

प्रथम खण्ड– वक्तृत्व योग्यता, वैज्ञानिक अभिरुचि।

द्वितीय खण्ड– अनुसंधान प्रवृत्ति,

तृतीय खण्ड– व्यापारिक प्रतिभा।

(1) इस अंगुली का प्रथम पेरुआं यदि औसत माप व द्वितीय पेरुएं से दीर्घ हो तो जातक वाक्-पटु होता है; एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति से शास्त्रों का अभ्यास करता है ; परन्तु यदि यह खण्ड जरूरत से ज्यादा लम्बा व दीर्घतर हो तो ऐसा व्यक्ति मिथ्याभाषी, कपटी, धूर्त व पाखण्डी होता है एवं झूठे दिखावे व अहं प्रदर्शन के लिये शास्त्राभ्यास करता है।

(2) इसका द्वितीय खण्ड यदि लम्बा हो तो व्यक्ति व्यापार दृष्टि वाला, उत्तम लेखक, प्रकाशक, सत्साहित्य प्रचारक एवं ज्ञानी होता है।

(3) यदि इस अंगुली का तृतीय खण्ड औसत माप से लम्बा हो तो मनुष्य राजनीति विद्या विशारद्, व्यवहार कुशल, युक्तिवान, बुद्धिमान एवं व्यापारिक प्रतिभा युक्त धनाढ्य व्यक्ति होता है।

28

नाखूनात्मक वर्गीकरण

नख सुख-दुःख का सूचक है। मनुष्य जीवन में नखों का उतना ही महत्व है जितना कि हस्तरेखाओं का। किसी विद्वान् ने कहा है कि–'नाखून एक दर्पण है जिसमें मनुष्य की अन्तरंग प्रवृत्ति व स्वास्थ्य की झलक दिखाई देती है।' सामुद्रिक अंग लक्षण के अन्तर्गत नाखूनों के अध्ययन से व्यक्ति की स्थिति, स्वभाव, भाग्य, बीमारी व चारित्रिक विशेषताओं का पता चलता है।

अंगूठे व अंगुलियों के अग्रभाग पर उपस्थित ये नाखून बाहरी आघात से अंगुलियों की सुरक्षा तो करते ही हैं, साथ में अंगुलियों की सुन्दरता बढ़ाने में भी सहायक हैं। वैज्ञानिकों ने माना है कि ये नाखून विद्युत प्रवाहक होते हैं तथा वायुमण्डल में फैली हुई सूक्ष्म विद्युत तरंगें इन नाखूनों के माध्यम से ही शरीर में प्रवेश करती हैं। इनके साथ ग्रहों की सूक्ष्म रश्मियां भी इन नाखूनों के माध्यम से अलग-अलग रंगों में विभक्त होकर रक्त प्रवाह में सञ्चरित होती हैं।

नाखून कई प्रकार के होते हैं ; परन्तु पाठकों की सुविधा के लिए हम इन्हें मुख्य रूप से बारह भागों में विभाजित करते हैं।

चित्र नं. – 119 से 130 तक
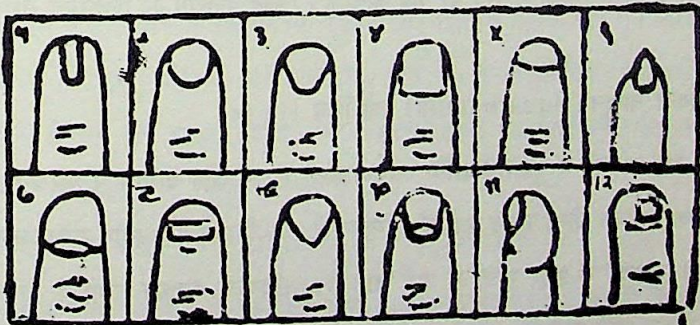
1. सँकरे नाखून (Narrow nails) देखें चित्र 119 (1)

ऐसे नाखून प्रायः नुकीली व गांठ रहित अंगूठों-अंगुलियों पर पाये जाते हैं। ऐसे जातक समझदार व चतुर होते हैं। ये व्यर्थ के झगड़े टंटे में विश्वास नहीं रखते तथा चापलूसी व मीठी बातों के द्वारा अपना काम निकालने में निपुण होते हैं। ऐसे जातक मधुर, सौम्य व गम्भीर स्वभाव के होते हैं। परोपकारिता व दयालुता का गुण इनमें विशेष होता है। ऐसे जातक कलात्मक प्रतिभा सम्पन्न किन्तु भावुक होते हैं ; परन्तु जीवन के व्यावहारिक पक्ष में इनको सफलता कम मिलती है।

2. गोलाकार नाखून (Round nails) देखें चित्र 119 (2)

ऐसे नाखून प्रायः चौकोर अंगुलियों पर पाये जाते हैं। ऐसे व्यक्ति सशक्त विचारों वाले एवं तुरन्त निर्णय लेने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति धैर्यवान् होते हैं तथा एक बार जो निर्णय ले लेते हैं उस पर अमल करना भी जानते हैं। ऐसे लोग विश्वास योग्य एवं व्यावहारिक जगत में सफल कहे जा सकते हैं।

3. सूच्याकार नाखून (Conic nails) देखें चित्र 119 (3)

ऐसे नाखून नीचे से संकुड़े एवं ऊपर से फैले हुए होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में धैर्य की कमी होती है। ये छिद्रान्वेषी एवं आलोचक होते हैं। ऐसे जातक जल्दबाज भी होते हैं तथा इनमें कुछ स्वार्थी भावना भी पाई जाती है। इनको वातरोग की शिकायत सम्भव है।

4. वर्गाकार नाखून (Square nails) देखें चित्र 119 (4)

ऐसे जातकों में पुरुषार्थ शक्ति अधिक होती है। ये लोग वास्तव में परिश्रमी व मेहनत-कस जीवन जीना पसन्द करते हैं। ईमानदारी, न्यायप्रियता व मानवीय संवेदनात्मक गुण ऐसे जातकों में प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। अधिकतर पत्रकार लोगों के अंगूठों पर ये नाखून पाये जाते हैं।

5. छोटे नाखून (Short nails) देखें चित्र 119 (5)

जैसा कि चित्र 119 (5) में स्पष्ट है कि ये प्रथम खण्ड की प्रथम गांठ से बहुत दूर होते हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक होते हैं तथा तथ्यात्मक सर्वेक्षण करने की शक्ति इनमें नहीं होती। ऐसे जातक कुछ हठी प्रवृत्ति के व अड़ियल होते हैं तथा आर्थिक दृष्टि से अधिक सम्पन्न नहीं होते। इनको प्रायः दन्तरोग रहता है।

6. नुकीले नाखून (Pointed nails) देखें चित्र 119 (6)

ऐसे जातक शारीरिक दृष्टि से कमजोर व अस्थिर विचारों वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं निर्णय नहीं ले पाते, अपितु दूसरे व्यक्ति जो भी राय देते हैं उसी पर अमल करते हैं। इनको प्रायः हृदयरोग रहता है। यदि कठोर नख हों तो लकवा (पक्षाघात रोग) होने का भय भी रहता है।

7. विस्तृत नाखून (Broad nails) देखें चित्र 119 (7)

ऐसे नाखूनों वाले जातक पुष्ट व मजबूत शरीर वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं। ऐसे जातक स्पष्ट वक्ता व निर्भीक होते हैं।

8. आयताकार नाखून (Rectangular-nails) देखें चित्र 119 (8)

ऐसे नाखूनों वाले जातक भौतिक सुखों व वासनाओं से चिपके रहते हैं। शारीरिक परिश्रम के साथ इनमें मस्तिष्क शक्ति भी सक्रिय रहती है। जीवन की विकट परिस्थितियों में भी ये हिम्मत नहीं हारते, क्योंकि इनका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा होता है। परन्तु शैक्षणिक दृष्टिकोण से ये पिछड़े हुए होते हैं।

9. त्रिकोणात्मक नाखून (V-shaped nails) देखें चित्र 119 (9)

ऐसे जातक के गले में तकलीफ, खराश या गलकण्ठ; (Tonsils) की शिकायत रहती है। ऐसे व्यक्ति सुस्त एवं कमजोर होते हैं। इनमें कुछ निराशावादी भावना होती

है तथा ये अपने आप को समाज से अलग-थलग एवं कटा हुआ समझते हैं। इनमें शिकायती स्वभाव विशेष होता है। प्रतिपल दूसरों के दोषों का बखान करना इनकी एक आदत सी हो जाती है।

10. पूर्ण नाखून (Full nails) देखें चित्र 119 (10)

इस प्रकार के नाखूनों में चौड़ाई व लम्बाई अनुपातिक ढंग से व्यवस्थित व सुन्दर दिखलाई देती है। ऐसे व्यक्ति उत्तम विचारों वाले, आशावादी तथा निरन्तर आगे बढते रहने की भावना रखने वाले, स्वस्थ व समाजसुधारक होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में परार्थ दृष्टि होती है तथा ये विस्तृत राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र वाले होते हैं।

11. कूर्माकार पीठ वाले नाखून (High roofed nails)- देखें चित्र 119 (11)

ऐसे व्यक्ति सुखी, प्रसन्न चित्त व सद्‌गुणों से सम्पन्न होते हैं। इन्हें मित्रों से लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति कुछ पागल प्रकृति के होते हैं। जिस बात को ये एक बार मन में ठान लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं, चाहे वह कार्य गलत हो या सही हो। ये इस बात की परवाह नहीं करते, अपितु अपनी बात पर अड़े रहते हैं।

12. टूटे-फूटे नाखून (Cut nails) देखें चित्र 119 (12)

कुछ विद्वान् मनुष्य के द्वारा नाखूनों का कुतरा जाना अच्छा नहीं मानते। कटे-फटे नाखनों वाले जातक में कोई न कोई मानसिक व्यथा अवश्य होती है। ऐसा व्यक्ति भावावेश में रहता है और चिन्ता या निराशा के कारण चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है। ऐसे लोगों में बुद्धि की कमी और बचकाने विचारों की अधिकता होती है। ये प्रायः हृदयरोगी होते हैं तथा इन्हें मिर्गी का रोग भी हो सकता है। इनका जीवन संघर्षमय होता है तथा ये आर्थिक दृष्टि से पिछड़े होते हैं।

मोटे व कठोर नख वाले जातक में क्रूरता, पाशविकता व मूर्खत्व अधिक होता है। टेढे-मेढे नखों वाले दरिद्री, शेर के समान बड़े व तीखे नख वाला व्यक्ति पापी, क्रूर व हत्यारा होता है। इसके विपरीत कोमल व स्वस्थ चिकने, मुलायम नखों वाले मनुष्य सरल, सज्जन व मानवीय संवेदना से युक्त विनम्र स्वभाव के होते हैं।

29

नखवर्णमूलक वर्गीकरण

नखों के द्वारा स्वस्थ व अस्वस्थ होने का अनुमान क्रमशः उनकी कोमलता, चमक, चिकनेपन व उनके गुलाबी रंग तथा इसके ठीक विपरीत रंग होने से होता है। नाना प्रकार के रंग के धब्बों का नखों में पाया जाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार के रंग के धब्बों की अधिकता पाई जाती है नख भी प्रायः उसी वर्ण के अन्तर्गत पाये जाते हैं जो कि मुख्य रूप से सफेद, लाल, गुलाबी, पीला, काला, बैंगनी, हरे, नीले व इन्द्रधनुषी भेद से नौ प्रकार के होते हैं।

नखों के धब्बे का मनुष्य पर प्रभाव
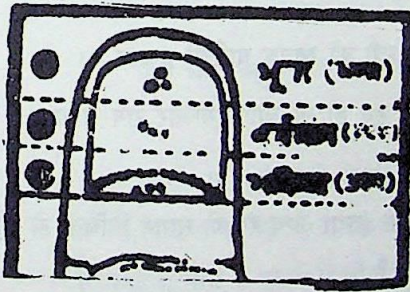
चित्र नं.– 131

नाखूनों पर धब्बे प्रायः चिन्ता, रोग, विद्वेष मनोवृत्ति, रक्त संचालन, मानसिक क्रिया, कठिन परिश्रम, अस्वाभाविक स्थिति, कार्य दबाव व खतरे की सूचना देते हैं।

ये धब्बे यदि नखाग्र भाग में होते हैं तो उनका प्रभाव व्यक्ति भोग चुका है जिसको भूतकाल कहते हैं। साथ ही ये धब्बे यदि नाखून के मध्य भाग में हों तो जातक वर्तमान समय में उसके फल से प्रभावित है और नाखून के मूल भाग में यदि धब्बा है तो उसका फल मनुष्य आगे भोगेगा। धब्बे प्रायः नाखून के मूलभाग में ही दिखाई देते हैं, इसके पश्चात् ये धब्बे धीरे-धीरे आगे खिसकते रहते हैं। यही इनका क्रम

है। प्रस्तुत प्रकरण में हम नख के वर्ण मूलक वर्गीकरण में उनके धब्बों का भी अध्ययन साथ-साथ करेंगे।

1. सफेद– स्वस्थ्य नखों पर सफेदी हो तो यह व्यक्ति के वैराग्य वृत्ति को बताता है। सफेद बिन्दु सौम्यता सूचक हैं।

सफेद धब्बे खून की कमी व भावी रोग के सूचक हैं। यह व्यक्ति में सतोगुण की वृत्ति को बताता है। सफेद बिन्दु सौम्यता सूचक हैं।

सफदे धब्बे वाला व्यक्ति एकान्तप्रिय होता है। सफेद धब्बे प्रेम, कीर्ति ऐश्वर्य व दूरदर्शिता तथा आध्यात्मिक उन्नति के सूचक हैं।

तर्जनी पर सफेद धब्बे होने पर जातक बुद्धिमान, कुशल, शान्त, धार्मिक व उदात्त मनोवृत्ति वाला होता है। मध्यमा पर हवाई यात्रा, जल यात्रा, कराता है ; परन्तु उस जातक की मृत्यु जल से होती है। अनामिका पर कीर्ति, यज्ञ से सिद्धि, व्यापार व राजकार्य में लाभ व विजय के सूचक तथा कनिष्ठिका पर धब्बे धनवान् गुणवान गायक व चतुर व्यक्ति को दिग्दर्शित करते हैं।

स्त्रियों के नखों पर श्वेत बिन्दु बहुधा स्त्री को स्वतंत्र चारिणी बनाता है।

2. लाल– लाल रंग व नाखून सिकुड़े हुए हों तो व्यक्ति गम्भीर रोग से ग्रस्त रहता है।

नाखूनों की जड़ों के पास गहरा लाल रंग (तथा अन्य रंग के समान मिश्रित) हो तो व्यक्ति विष (जहर) खा कर प्राणान्त करता है।

लाल धब्बे ब्लड-प्रेशर के सूचक होते हैं। तथा हृदय की बीमारी की भी सूचना देते हैं।

अंगूठे पर लाल छींटे वाला व्यक्ति हत्यारा होता है। तर्जनी पर धब्बे क्रोधी, मध्यमा पर अविवेकी, अनामिका पर नेत्र शक्तिहीन व कनिष्ठिका पर शल्यचिकित्सा की सूचना देते हैं।

ताँबे के समान लाल रंग वाला नाखून जमीदार व उच्च-कुलाभिमानी व्यक्ति को सूचित करता है। ऐसे व्यक्ति सूर्यबली होते हैं; अथवा जन्मलग्न सूर्य ग्रह से प्रभावित होता है।

3. **गुलाबी**– सुन्दर, चिकने, स्वस्थ, गुलाबी नख स्वास्थ्य, धनिकता व सफलता को प्रदर्शित करते हैं। ऐसे जातक सौभाग्यशाली व उच्च पदासीन होते हैं। स्त्री जातक के हल्के गुलाबी नख उनके ऐश्वर्यशाली, पतिप्रिया होने के संकेतक हैं।

अंगूठे पर गुलाबी धब्बे शत्रुओं पर विजय के सूचक हैं, तर्जनी पर धब्बे शास्त्रार्थ विजय, मध्यमा पर पदोन्नति, अनामिका पर राज्यपक्ष कोर्ट-कचहरी में विजय, कनिष्ठिका पर व्यापारिक सफलता, द्रव्य लाभ के सूचक हैं।

ऐसे जातक के जन्मलग्न पर भी सूर्य का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

4. **पीला**– नाखून पर पीला रंग खून की कमी, रक्त-विकृति व पीलिया रोग होने की सूचना देता है।

जिस व्यक्ति के नाखून हल्के पीले होते हैं वे हृदयरोगी, कैन्सर, टी. बी. के मरीज होते हैं। उनमें आत्मबल कम होता है तथा ऐसे लोग आत्मघाती भी होते हैं।

पीले धब्बे यकृत-विकार के सूचक होते हैं। प्रायः ऐसे जातक दुराचारी भी होते हैं।

अंगूठे पर पीले धब्बे फेफड़े में बीमारी के सूचक हैं। तर्जनी पर धब्बे सिर में बीमारी, मध्यमा पर पेटदर्द, आमाशय रोग, अनामिका पर गुप्तेन्द्रिय में रोग व कनिष्ठिका पर पगतल, नसों व घुटनों में बीमारी तथा दर्द को बताते हैं।

ऐसे व्यक्ति गुरूबली होते हैं या जन्मलग्न बृहस्पति से प्रभावित होता है।

5. **काला**– काले रंग के नाखून वाला व्यक्ति दरिद्री, कपटी व काले जादू का जानकार होता है।

नाखून का रंग सफेद हो और उस पर काले धब्बे हों यह जातक के अकाल मृत्यु की सूचना देता है।

काले धब्बे खतरनाक बीमारी को बताते हैं। काले धब्बों का अचानक प्रकट होना महान् विपत्ति की सूचना देता है।

अंगूठे पर काले धब्बे, मूर्ख, लम्पट, नीच, विश्वासघाती क्रूर निर्दयी, चोर व डाकू के हाथ में पाये जाते हैं। तर्जनी पर धब्बे अपमान, कुबुद्धि, धूर्तता, ठगी व धर्मभीरुता के सूचक हैं। मध्यमा पर धब्बे मृत्यु, भय व पराजय के सूचक, अनामिका पर अपयश, धन-हानि, व्यापार-हानि, चोरी व नीच कार्यों में रुचि के सूचक एवं कनिष्ठिका पर अविश्वास, हानि, बकवासी तथा निराशावान व्यक्ति के सूचक हैं। ऐसे व्यक्ति शनिबली होते हैं या जन्मलग्न शनि से प्रभावित होता है।

"राबर्ट बर्टन नामक एक पाश्चात्य रिसर्च स्कॉलर ने ई. स. 1921 में आक्सफोर्ड अकादमी ऑफ मेलांकली, पार्ट फर्स्ट के सेक्सन नं. 4 पर एक अनुभव पूर्ण शोध करते हुए लिखा कि मेरे अंगूठे के नाखून पर सात वर्ष पर्यन्त काले बिन्दु रहे थे। जब तक ये काले बिन्दु मेरे नखों पर रहे तब तक मेरे पर सतत मुकदमे, दावे, खांसी, वारिस सम्बन्धी विवाद, भ्रम, अपकीर्ति, देशत्याग शोक और चिन्ता इनकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही और जिस समय नख पर ये काले दाग बिल्कुल मिट गए उसी समय मुझे सब संकटों से मुक्ति मिल गई"

6. बैंगनी– नख पर बैंगनी रंग रक्त दोष व वीर्य दोष का सूचक है। ऐसे जातक को खाने में विष (Food poisoning) का भय रहता है। अंगूठे पर भी यदि अचानक बैंगनी धब्बे दिखाई देने लगें तो यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की सर्पदंश से मृत्यु निकट भविष्य में ही होने वाली है।

अंगूठे पर बैंगनी धब्बे मृत्यु के सूचक हैं। तर्जनी पर धब्बे तीर्थ स्थान, देशाटन में मृत्यु, मध्यमा पर वाहन दुर्घटना से मृत्यु, अनामिका पर शस्त्र से मृत्यु व कनिष्ठिका पर शल्य चिकित्सा के दौरान मृत्यु को बताते हैं।

पुत्र की मृत्यु

'इंग्लैंड के सर टी ब्राऊन नामक ग्रन्थकर्ता ने अपने ग्रन्थ में वर्णन कर रखा है कि उसके बीमार पुत्र की मृत्यु के पूर्व नख पर एक बेंगनी बिन्दु उत्पन्न हुआ था और

उस लड़के की मृत्यु के दिवस ज्यों-ज्यों समीप आते जा रहे थे त्यों-त्यों वह बिन्दु पूरे नख पर पसर गया। इस काल के दौरान सर ब्राऊन ने यह महसूस किया कि इस अज्ञात बिन्दु में उसके पुत्र की मृत्यु की निश्चित सूचना अन्तर्गर्भित थी।

7. हरा– हरे धब्बे रक्त विकार, अपचन व आमाशय विकृति के सूचक हैं।

अंगूठे पर हरे धब्बे मानसिक विकृति के सूचक हैं। तर्जनी पर धब्बे आन्त्र रोग, मध्यमा पर कफ, पित्त, अनामिका पर हृदय रोग, हार्ट अटैक एवं कनिष्ठिका पर जल मृत्यु, सर्पदंश से मृत्यु तथा अग्नि दाह से मृत्यु की सूचना देते हैं।

ऐसे जातक बुध बली होते हैं तथा उनके जन्म लग्न पर बुध ग्रह का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

8. नीला– नीले बिन्दु दुर्दैव के सूचक होते हैं। नीले धब्बे खून खराबी, ब्लड-केन्सर को बताते हैं।

नखों पर नीली झलक मनोविकार को व्यक्त करती है। नीले रंग के नखों पर यदि सफेद धब्बे दिखाई पड़ें तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है। पुरुष पक्ष में पुरुष दुराचारी होता है।

ऐसे व्यक्ति राहु बली होते हैं या जन्म लग्न राहु से प्रभावित होता है।

9. इन्द्रधनुषी– यदि नाखूनों पर इन्द्रधनुष की तरह रंग-बिरंगी रेखायें हों तो मनुष्य का भयंकर ऑपरेशन द्वारा दूसरा जन्म होता है। इन्द्रधनुषी नख स्वाद-विकार को सूचित करते हैं।

अंगुष्ठ पर इन्द्रधनुषी लहरें स्वप्न में दोष (चमक) बताती हैं। तर्जनी पर देवदोष, मध्यमा पर भूत-प्रेत बाधा, अनामिका पर पितृ बाधा, कनिष्ठिका पर वर्तमान समय में स्वकर्म द्वारा अर्जित पापराशि की बाधा से जातक को त्रिविध दुःखों के भोग को दर्शाती है।

ऐसे व्यक्ति के लग्न पर अनेक ग्रहों की दृष्टि, युति या प्रतियुति होती है।

30

चन्द्रात्मक वर्गीकरण

अंगुष्ठ पर दिखलाई पड़ने वाले चन्द्र का भी बड़ा महत्त्व है। उनको (1) **अर्धचन्द्र** (2) **न्यूनचन्द्र** (3) **धूमिलचन्द्र** (4) **पूर्णचन्द्र** इत्यादि चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।
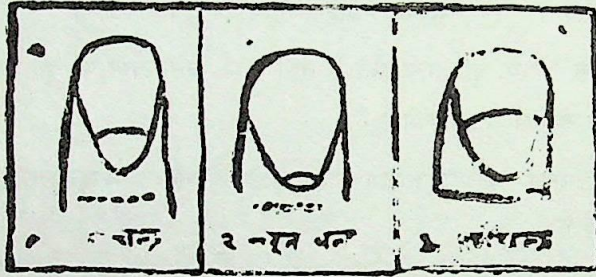
चित्र नं.– 132, 133, 134

1 जब अंगूठे पर अर्धचन्द्र दिखाई दे तो शुक्लपक्ष का जन्म होता है। यह अर्धचन्द्र प्रगति का सूचक है। यह समस्त प्रकार के शुभ कार्य, उन्नति एवं शुभ संकेतों का सूचक चिन्ह है। ऐसे जातक दिल और दिमाग से स्वस्थ होते हैं।

2 परन्तु यदि यह अर्ध-चन्द्रमा बहुत न्यून रूप से दिखलाई पड़े (देखें चित्र 133) तो जातक का जन्म अमावस्या या कृष्णपक्ष की प्रतिपदा के लगभग होता है तथा इनको प्रायः रक्त दोष, चर्मरोग की शिकायत रह सकती है।

3 यदि यह चन्द्र धूमिल या अस्पष्ट हो तो कृष्णपक्ष का जन्म होता है। ऐसे जातक गम्भीर व गुप्त मनोवृत्ति वाले होते हैं।

4 परन्तु यह चन्द्र अगर नाखून के आधे भाग को घेर लेता है (देखें चित्र 134) तो इसके विपरीत फल दिखलाई पड़ता है। ऐसे जातक का जन्म प्रायः पूर्णिमा को होता है तथा अत्यधिक भावुक वृत्ति के साथ आंशिक रूप से मानसिक विकृति भी सम्भव है। तथा मिर्गी, हिस्टीरिया, गुप्तांग-कष्ट की भी संभावना रहती है।

31

गठानात्मक वर्गीकरण

अंगूठे व अंगुलियों में उपस्थित हड्डियों के जोड़ को गठान कहा जाता है। बिना गांठों के अंगुलियां नहीं बनतीं। प्रस्तुत प्रकरण में गठान का तात्पर्य प्रत्येक पर्व (सन्धि) के जोड़ से समझना चाहिए।

अंगुष्ठ के पर्वात्मक तो तीन विभाजन होते हैं परन्तु उनमें गांठे केवल दो ही होती हैं।

चित्र नं. – 135, 136
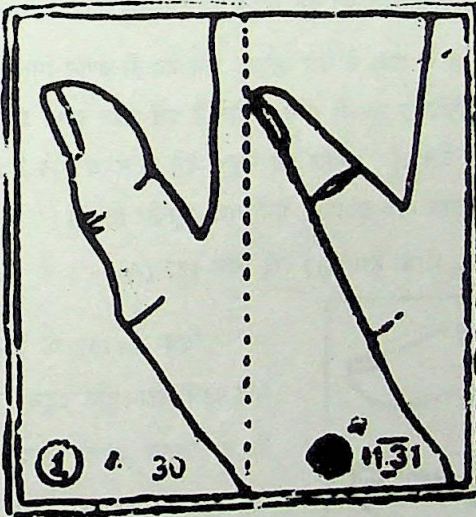
1. गठानयुक्त अंगूठा (Knotted thumb) —

कुछ हाथों में ये गांठें बहुत फूली हुई होने से स्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं। देखें चित्र 135 (1)। ये अंगूठे कुछ कड़े होते हैं। ऐसे लोग अपने कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन रहते हैं। ये फिजूलखर्ची होते हैं तथा छोटी-छोटी वस्तुओं पर ज्यादा चिन्तन करते हैं एवं विपरीत परिस्थितियों में शीघ्र घबरा जाते हैं। इन सब तथ्यों के अलावा ये व्यावहारिक व मेहनती भी होते हैं।

3. गठानरहित अंगूठा (Smooth-joint thumb) —

कुछ हाथों में ये गांठें होते हुए भी बिल्कुल दिखलाई नहीं पड़तीं। देखें चित्र 136(2)। ऐसे अंगूठे कोमल होते हैं। यह अति उत्तम श्रेणी का अंगूठा कहलाता है। ऐसे व्यक्ति दृढ़निश्चयी एवं अपने कार्य के प्रति अटूट आस्था रखने वाले होते हैं। एक बार जो भी निर्णय कर लेते हैं उस कार्य को पूरा करके ही दम लेते हैं।

प्राचीन काल में राजाओं के हाथ में ऐसे अंगुष्ठ होने का ही वर्णन मिलता है। ऐसे जातक आर्थिक दृष्टि से निश्चित रूप से सम्पन्न होते हैं एवं प्रबल इच्छा शक्ति के कारण जीवन में सफल होकर देश और समाज को नेतृत्व देने में समर्थ होते हैं। ऐसे जातक गम्भीर मनोवृत्ति वाले तथा परदुःखकातर, प्रेमी तथा शूरवीर होते हैं।

A. पहली गठान दीर्घ (Long first knot)। देखें चित्र 137 (A)—
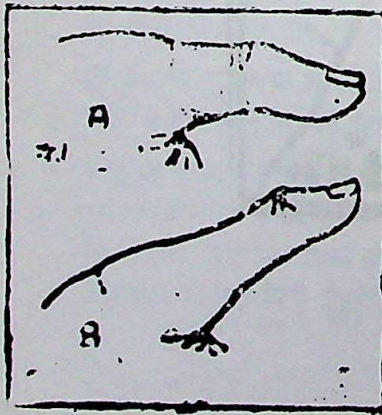
चित्र नं. 137 के अनुसार यदि पहली गठान दीर्घ व दूसरी छोटी हो तो जातक ओछी बुद्धि वाला निम्न खयालों का अविकसित प्रेम-भावना वाला होता है। ऐसे व्यक्ति असामाजिक व अदूरदर्शी होते हैं।

ऐसे जातक के लिखे हुए अक्षर साफ पढ़ने में नहीं आते।

B. दूसरी गठान दीर्घ (Long second knot) देखें चित्र 138 (B)

चित्र नं. 138 में स्पष्ट प्रतिबिम्बित है कि ऐसे अंगूठे की प्रथम गठान छोटी तथा दूसरी गठान दीर्घतर होती है। इनकी तर्क-शक्ति पुष्ट होती है ; परन्तु ये बातूनी होते हैं। ऐसे जातक साफ व बड़े-बड़े अक्षर लिखते हैं। बोलते बहुत ज्यादा हैं, वादे बहुत करते हैं, परन्तु निभाते हैं कम। ऐसे व्यक्तियों की प्रतिज्ञा पर भूल कर भी विश्वास नहीं करना चाहिए।

32

चर्मवर्णमूलक वर्गीकरण

भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में चर्म का भी सूक्ष्म वर्गीकरण किया है।

यदि अरुण (सूर्योदय के समय का ताम्रवर्णीय) वर्ण का हाथ हो तो जातक श्रीमन्त (धनिक) होता है।

पीले वर्ण के चर्म वाला (पित्त प्रकृति) रोगी होता है।

श्वेत वर्ण वाला योगी तथा वैरागी होता है।

लाल वर्ण वाला भोगी किन्तु आशावादी होता है।

काले वर्ण वाला दरिद्री या मद्यप होता है।

नीले वर्ण की चर्म वाला जातक मद्यपान करने वाला होता है।

लाक्षा रंग के समान गहरे रक्तवर्णीय चर्म वाला जातक राजा या उच्च अधिकारी होता है।

भूरे वर्ण वाला साहसी व चतुर होता है।

गौर वर्ण वाला कुलाभिमानी व गर्विष्ठ व्यक्ति होता है।

इस प्रकार से चर्मवर्णमूलक वर्गीकरण के भेद को भी समझना चाहिए।

33

रोमात्मक वर्गीकरण

1 अंगुष्ठ के ऊपर रोम का होना बुद्धिमत्ता का और अंगुलियों की तीसरी पोरी के पृष्ठ भाग पर केशों का रहना कठोर अन्तःकरण का द्योतक है।

2 सब अंगुलियों की पोरियों पर रोएं होने से जातक गड़बड़ करने वाला (कपटी) और तमोगुणी वृत्ति वाला होता है। बिल्कुल रोओं का न होना पुरुषत्वहीन व डरपोक मनुष्य होने का सूचक है।

3 अंगुष्ठ के पृष्ठ भाग पर काले रंग के बाल हों तो अशुभ। लाल व भूरे रंग के हों तो शुभ।

4 अंगुष्ठ व अंगुलियों के पृष्ठ भाग के एक छिद्र में एक-एक रोम का पाया जाना उत्तम राजयोग सूचक है।

5 यदि एक छिद्र में दो-दो रोम हों तो जातक विद्वान्, दार्शनिक व शास्त्राभिमानी होता है।

6 यदि एक छिद्र में दो से अधिक तीन या चार-चार रोम उत्पन्न हुए हों तो ऐसे रोम अशुभ होते हैं तथा ऐसे रोम वाला जातक निर्धन होता है।

34

अचूक भविष्यवाणियों के लिए आजमाइए
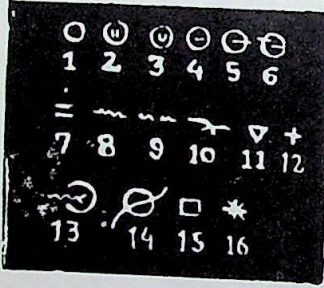
जो सबसे सूक्ष्म निशान होते हैं फलादेश की दुनियां में उनका सबसे अधिक महत्व होता है। इन निशानों को देखने के लिए दस एक्स पॉवर का सूक्ष्मदर्शी फोल्डिंग ग्लास चाहिए जो प्रायः कपड़े के व्यापारियों के पास तागे गिनने के लिए काम में आता है अथवा जौहरी लोग हीरे की परीक्षा के लिए काम में लेते हैं।

1 अंगुष्ठ के अग्रभाग पर बने अमिट शंखचक्रादि चिह्नों के मध्य केन्द्र में यदि छोटा सा छल्ला, बना हुआ हो तो यह बताता है कि जातक की जन्मकुण्डली में लग्नस्थान को कोई न कोई शुभ ग्रह देख रहा है अथवा शुभ ग्रह लग्न में बैठा है।

2 इस प्रकार के छल्ले में यदि दो सूक्ष्म ऊर्ध्व रेखाएं दिखलाई पड़े तो निश्चित जानें कि दो ग्रह जातक के जन्म लग्न में बैठे हैं। यदि यह मध्य भाग में गाय के सींग की तरह जुड़ा हुआ निशान (अंग्रेजी में u के समान) दिखलाई दे तो जातक के लग्न में शुक्र की निश्चित उपस्थिति जानें।

4 यदि कोई सूक्ष्म आड़ी रेखा-सी इस स्थान पर दिखलाई पड़े तो वह जन्म लग्न में राहु या मंगल ग्रह की उपस्थिति बताती है।

5 यदि यह आड़ी रेखा सूक्ष्म घेरे से बाहर कुछ हट कर दक्षिण की तरफ हो तो सूर्य या मंगल की उपस्थिति लग्न से दूसरे स्थान में होगी।

6 चित्र 139 (6) की तरह यदि यह रेखा दो सामानान्तर टुकड़ों में दिखलाई पड़े तो राहु, शनि या मंगल में से किसी एक किन्तु अशुभकारी ग्रह की उपस्थिति लग्न में अवश्य होती है।

7 चित्र नं. 139 (7) के अनुसार यदि दो आड़ी किन्तु पूर्ण सामानान्तर रेखाएं स्पष्ट दृष्टिगोचर हों तो कोई दो क्रूर ग्रहों (सूर्य, मंगल, राहु, केतु) की उपस्थिति जन्म लग्न में होना बताती हैं।

8 यदि इन में उपस्थित रेखा लहरदार हो तो जातक के लग्न में राहु या केतु में से एक छाया ग्रह अवश्य उपस्थित होता है।

9 यदि यह लहरदार रेखा बीच में से टूटी हुई दिखलाई पड़े तो परिवार से बिछोह, जीवन साथी से अलगाव व बच्चों की दुःखान्त मृत्यु को बताती है।

10 यदि एक रेखा नीचे की ओर मुड़ जाय तथा दूसरी रेखा उससे आकर युति कर ले तो शत्रु के द्वारा पीड़ा व नुकसान पहुंचे, कोई शारीरिक दुर्घटना किन्तु उससे बचाव का यह संकेत चिह्न भी है, ऐसा जानना चाहिए।

11 इस जगह त्रिकोण का निशान जीवन में कठोर परिश्रम, अधिक मेहनत से कम लाभ एवं विषम परिस्थितियों से संघर्ष किंतु अन्त में सफलता को बताता है।

12 क्रास या धन का निशान प्रेममय जीवन में प्रेमी अथवा प्रेमिका से बिछोह का संकेतक चिह्न है। ऐसे जातक जीवन में पहले एक दूसरे से विवाह करते हैं तथा साथ निभाने की कसमें खाते हैं ; परन्तु अन्त में परिस्थितियां उनको एक दूसरे से अलग कर देती हैं।

13 इस सर्पाकृति का एक जगह दिखाई देना पारिवारिक जीवन में जहर (कलह) घोलता है। बच्चों की अकाल मृत्यु एवं वैवाहिक जीवन को नारकीय बना देता है। यह जन्मकुण्डली के पंचम या सप्तम स्थान में राहु या अन्य पाप ग्रह की उपस्थिति को भी बताता है।

14 केन्द्र के गोल छल्ले को छेदन करती (काटती) हुई कोई रेखा यदि दिखलाई पड़े तो राहु या केतु में से एक छाया ग्रह की उपस्थिति जन्म लग्न में अवश्य जानें।

15 यहां पर चतुष्कोण जातक के जीवन में यश, प्रसिद्धि, ऐश्वर्य एवं धन की पराकाष्ठा को बताता है।

16 यहाँ पर सितारा जातक को राजनीति में अद्वितीय सफलता दिलाता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा राजनेता या मिनिस्टर होता है।

35

अंगूठे व हथेली पर तिल, मस्से व लहसनियें

हथेली पर तिलों का बड़ा महत्त्व है। पाश्चात्य विद्वानों ने इन तिलों, के महत्त्व को प्रायः नगण्य मानकर हथेली पर तिलों के उद्‌भव व विकास पर ज्यादा ध्यान नहीं

चित्र नं. — 140
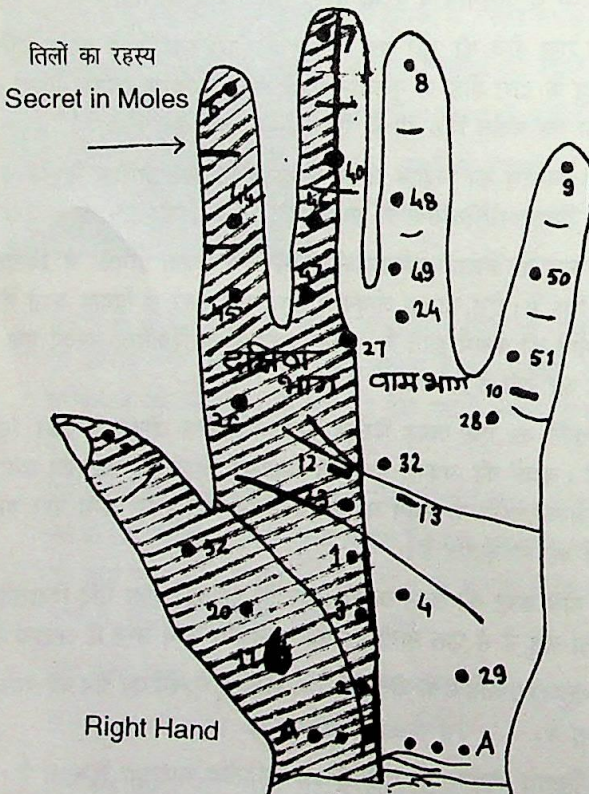
दिया। ऋषि पराशर 'होराशास्त्र' में कहते हैं–

'अंङ्गनानां च वामाङ्गे, दक्षिणाङ्गे नृणां शुभम्।

रक्ताभं तिलकाभं वा लोम्ना चक्रमयापि वा।।'

(तिलादिलाञ्छन फलाध्याय 83/2)

भारतीय महर्षियों ने तिल, मस्सा व लहसिनया की उपस्थिति का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। इतना ही नहीं, इनके रंगों का भी बड़ा भारी महत्त्व है। मस्से में काला की गहनता अत्यधिक अशुभ फलकारी, भूरा मध्यम व लाल शुभ फलकारी माना गया है। परन्तु तिलों में काला, बैंगनी, हरा, पीला, भूरा, लाल व सफेद रंगों को क्रमवार शुभाशुभ के न्यूनाधिक प्रभाव का कारण माना है।

हथेली पर पाये जाने वाले तिल व मस्सों को आसानी से समझने के लिए हमें हथेली के मध्य में एक काल्पनिक रेखा खीच कर हथेली को दो भागों में विभक्त करना पड़ेगा। एक भाग दक्षिणावृत (Right side) व दूसरा भाग वामावृत (Left Side) माना जायेगा। (देखें चित्र 140)। इसमें अंगूठे की तरफ वाला भाग दक्षिणपक्ष एवं कनिष्ठिका की तरफ वाला भाग वामपक्ष का समझना चाहिए जैसा कि चित्र 140 में स्पष्ट है।

1. यदि पुरुष के दायें हाथ की हथेली के मध्य स्थान में, दक्षिण भाग की ओर तिल नं. 1 दिखाई पड़े तो यह अति शुभ तिल माना जाता है। उस पुरुष का वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन बहुत सुखी व सम्पन्न होता है। जातक स्वयं धनवान व सम्पन्न होगा। साथ ही जातक के सभी रिश्तेदार जातक के प्रभाव में रहेंगे।

कई बार इसका जबाबी तिल हथेली के ठीक पीछे पाया जाता है। 'अगस्त्य ऋषि' के वचन के अनुसार ऐसा व्यक्ति अति धनाढ्य होता है तथा सफल व सुखी जीवन व्यतीत करता है।

2. यदि काले रंग का मूंग की आकृति का तिल, मत्स्य रेखा के क्षेत्र में मणिबन्ध के कुछ ऊपर (चित्र 140 में 2) पाया जाय तो ऐसे जातक के जीवन में दाम्पत्य कलह को लेकर मानसिक तनाव रहता है।

3. यदि यह तिल कुछ ऊपर जाकर तिल नं 3 की जगह पर स्थित हो जाय तो यह धन-नाश का सूचक हो जाता है।

4. परन्तु यदि यह हथेली के वामपक्ष में खिसका हुआ (तिल नं. 4) हो, तो जातक को अपनी उन्नति व विकास के लिए जन्म स्थान व शहर को छोड़ना पड़ता है एवं उसके जीवन में कई उतार-चढ़ाव आयेंगे।

यदि दक्षिण हाथ में तिल या मस्से का यह निशान अंगुलियों के ठीक उपरि खण्ड पर हो तो उसके प्रभाव अधोलिखित होते हैं :

5. अंगूठे के उपरि खण्ड पर मेष राशि से प्रभावित क्षेत्र (तिल नं. 5) हो तो परिश्रम के द्वारा खूब द्रव्य दिलवाता है।

6. तर्जनी अंगुलि पर न्यायप्रिय, सफल जीवन का संकेत है।

7. मध्यमा पर संतुलित व सुखी जीवन को बताता है।

8. अनामिका पर काला तिल हो तो हृदय पर कुछ भार एवं हृदय-रोग के आक्रमण का खतरा रहता है। यदि यह तिल लाल रंग का हो तो जातक विद्वान् होता है।

9. कनिष्ठिका पर हो तो यह अति अशुभ होता है। प्रियतर वस्तुओं का नुकसान एवं संतान-हानि का संकेतक होता है। यदि हल्के लाल रंग का हो तो जातक धनवान होता है तथा नुकसान खाकर संभल जाता है। परन्तु यह निशान यदि बायें हाथ की अंगुलियों पर हो तो उसके परिणाम कुछ भिन्न होते हैं।

A. अंगूठे पर तिल धन-नाश का सूचक है।

B. तर्जनी पर कलह व झगड़े का संकेतक है। यह मनुष्य को अचानक अस्थायी हानि पहुंचा कर दुःखी करता है।

C. मध्यमा पर लक्ष्य की प्राप्ति में बाधाओं का सूचक है। ऐसा व्यक्ति बड़ी-बड़ी बीमारियों से मरते-मरते बचता है।

D. अनामिका पर प्रसन्नता, वृद्धि व सफलता का संकेतक है।

E. कनिष्ठिका पर अच्छी संतति का सूचक है।

अगर ये तिल अंगुलियों के वामावर्त (Left side) में हों तो इनका प्रभाव 50% प्रतिशत (आधा) ही पाया जायेगा।

10. यदि गहरा काला दाग (लहसुनियां) बुध क्षेत्र (चित्र 140 में 10) पर हो तो ऐसे व्यक्ति प्रेयसी या पत्नी की मृत्यु अथवा विवाह या प्रेम में गहरी चोट खाये हुए होते हैं।

11. यदि काला या भूरा लहसनियें का दाग मशाल जैसी आकृति में शुक्र-स्थल पर हो तथा हृदय व जीवन रेखा पर द्वीप हो तो उस जातक की मृत्यु बिजली के करंट से होती है।

12. यदि एक काला दाग हृदय रेखा व मस्तक रेखा के मध्य, दायें हाथ के दायें पक्ष (चित्र 140 में 12) पर हो तो जातक को अपने कार्य में प्रचुर प्रतिष्ठा किंवा प्रसिद्धि मिलती है।

13. यदि यह लहसनियां जरा सा हट कर बायें पक्ष (चित्र 140 में 13) पर हो तो धन की अपार हानि को दर्शाता है।

यदि ये दाग इसी जगह पर हथेली के पृष्ठ भाग में हों तो सफलता व शुभता के सूचक हो जाते हैं।

14. यदि दक्षिण हस्त मणिबन्ध वलय के ऊपर तिलों की एक शृंखला चित्र 140 में प्रदर्शित (A-A) के समान हो तो महान सफलता की निशानी है। यदि यह शृंखला मणिबन्ध की अन्य तीनों समानान्तर रेखाओं पर बने तो जातक को उत्तरोत्तर अधिक सफलता मिलती है।

15. यदि तिल नं. 12 का निशान जातक के वामहस्त के वाम पक्ष की मस्तिष्क रेखा पर दिखलाई दे तो यह अशुभ चिह्न जातक को पिछले तीन साल से भंयकर मानसिक विकार से ग्रस्त होने की सूचना देता है।

16. यदि उपर्युक्त प्रकार का चिह्न बायें हाथ के मणिबन्ध के पास हो तो जातक, पत्नी के अतिरिक्त प्रेमिकाओं से भी कई बच्चे पैदा करता है।

17. यदि यही चिह्न बायें हाथ की हथेली के पृष्ठ भाग पर मणिबन्ध के स्थान पर हो तो शीघ्र ही निकट भविष्य में होने वाली दुर्घटना की सूचना देता है।

18. यदि यही दाग बायें हाथ में चतुर्गुणित होकर चने के दाने की आकृति धारण कर हथेली के बीच में मणिबन्ध के ठीक ऊपर स्थित हो तो दुर्भाग्य व नाश का सूचक हो जाता है।

19. यदि चने की आकृति तुल्य यह निशान दायें हाथ की हथेली के बीचों बीच पृष्ठ भाग पर हो तो जातक को हानि उठाकर भी अपने जन्म स्थल को छोड़ना पड़ता है।

20. तुला राशि के क्षेत्र में उपस्थित बृहत (तिल नं 20) बच्चों के जन्म के पश्चात् जातक का भाग्योदय कराता है।

21. A. जीवन रेखा पर काला तिल (नं. 21) ब्रेन हेमरेज व गम्भीर प्राण घातक आक्रमण (Nervous attack) को सूचित करता है।

B. परन्तु जब यह तिल सफेद हो तो एक छोटे वर्तुल (Circle) सा दिखाई देता है। नेत्र ज्योति के लिए यह निश्चित बाधक चिह्न है। हमारी शोध के अनुसार जन्मजात अन्धे लोगों के हाथ में यह चिह्न अधिक स्पष्ट पाया गया। आयु रेखा के जिस अवधि पर यह होगा उस अवधि में जातक को नेत्र-ज्योति के प्रति सावधान रहना चाहिए।

22. यदि एक बैंगनी या हरे रंग का बड़ा तिल हृदय रेखा के वृहद् चतुष्कोण के अन्दर हो तो जातक को रक्त विकार, टाईफाईड (Blood-poisoning, blood-cancer) का पूरा-पूरा खतरा रहता है। दायें हाथ में यह चिह्न भविष्य में ऐसी घटना घटित होने का संकेत करता है ; परन्तु बायें हाथ में भूतकाल में घटना घटित हो चुकने का संकेत देता है।

23. यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के सिर पर गहरी चोट लगने का संकेत करता है।

24. परन्तु यदि सूर्य पर्वत के ठीक नीचे लाल रंग का तिल हो तो कर्ण-दोष तथा वाणी में हकलाहट की सूचना देता है।

25. यदि सूर्य पर्वत पर काला तिल हो तो व्यक्ति को नेत्र विकार होता है तथा उसे सामाजिक व कुटुम्ब के कार्यों में यश की जगह अपयश ही मिलता है।

26. यदि गुरू पर्वत पर काला तिल हो तो उस जातक के विवाह में बाधा आती है तथा उसको धार्मिक कार्यों में सफलता कम मिलती है। यदि गुलाबी रंग का तिल हो तो अति सुन्दर पत्नी मिलती है ; परन्तु उसको घमण्ड होने से आपस में कलह चलता रहेगा।

27. यदि शनि पर्वत पर काला तिल हो तो जातक को प्रेम के क्षेत्र में बदनामी मिलती है। पति-पत्नी में आपसी मन-मुटाव की वजह से दोनों में से एक को आत्महत्या करनी पड़ सकती है।

28. यदि बुध पर्वत पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति ठग, धोखेबाज एवं धूर्त व कपटी होता है। ऐसे व्यक्ति को भागीदारी के व्यापार से सदा दूर रखना चाहिए।

29. यदि चन्द्रमा के पर्वत पर काला तिल हो तो उस जातक का विवाह विलम्ब से होता है। उस जातक का प्रेमी/प्रेमिका उसे धोखा/देता/देती है तथा इन्हीं भावनात्मक सम्बन्धों को लेकर वह जल में डूब कर आत्महत्या भी कर सकता है। सारांशतः ऐसे व्यक्ति को जलभय तो अवश्य रहता है।

30. यदि शुक्र पर्वत पर काला तिल हो तो व्यक्ति का विवाह जल्दी होता है। ऐसा जातक छोटी आयु में ही काम-क्रीड़ा में लग जाता है जिससे वीर्य दूषित रहता है।

31. यदि शुक्र पर्वत पर हरी व आसमानी नसें सी दिखाई दें एवं तिल हो तो प्रायः व्यक्ति की जन्मकुण्डली में शुक्र कन्या राशि (नीच) का होता है। जातक असाध्य गुप्त रोगों का शिकार होता है तथा उसका इलाज नहीं हो पाता।

32. यदि हृदय रेखा पर भूरे रंग का तिल हो तो जातक को विपरीत लिङ्गी को छेड़ने में बड़ा आनन्द आता है तथा वह इश्की मिजाज का व्यक्ति होता है ; परन्तु उसे प्रेम के मामले में स्थायी सफलता नहीं मिल पाती।

33. यदि यह तिल गहरे काले रंग का हो तो जातक को उस अवस्था विशेष में हृदय-रोग होने की सम्भावना रहती है।

34. सूर्य-रेखा पर काला तिल असफलता व धन-हानि का सूचक है।

35. भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में विलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।

36. यदि इसके साथ भाग्यरेखा पर यव का निशान भी हो तो जातक के पिता की निश्चित मृत्यु होती है।

37. स्वास्थ्य-रेखा पर काला तिल, स्वास्थ्य में खराबी व शारीरिक कमजोरी को बताता है।

38. यदि विवाह रेखा पर काला तिल हो तो दाम्पत्य जीवन नारकीय होता है।

39. यदि मंगल रेखा पर काला तिल हो तो व्यक्ति डरपोक, एवं दब्बू स्वभाव का होता है।

40. यदि शनि की अंगुली के मध्यवर्ती खण्ड पर एक सितारा हो तथा मंगल के मैदान में काला तिल हो तो जातक की मृत्यु जल-यात्रा में होती है।

41.यदि यह तिल लाल रंग का हो तो जातक डाकू होता है।

42. यदि चन्द्र-रेखा पर काला तिल हो तो जातक की मृत्यु जल-यात्रा में होती है।

43. यदि यह तिल चन्द्र रेखा से हटकर चन्द्र-क्षेत्र में हो तो व्यक्ति हवाई दुर्घटना में मरता है।

44. यदि तर्जनी अंगुली की दूसरी संधि पर कोई तिल हो तो वह व्यक्ति लफंगा और पर पीड़क होता है।

45. A. यदि तीसरी संधि पर तिल हो तो उसके घर का व्यक्ति ही उसके घर में चोरी करेगा।

B. यदि यह तिल कुछ नीचे हो तो ऐसा देखने में आया है कि नजदीक में आने वाले मेष या वृश्चिक राशिगत गोचर का शनि जीवनसाथी की मृत्यु का कारण बनेगा।

46. मध्यमा के दूसरे पेरुएं पर यदि काला बिंदु हो तो शस्त्र से मृत्यु होती है।

47. मध्यमा अंगुली के अंतिम पेरुएं पर यदि विन्दु का चिह्न हो तो उस व्यक्ति का वारिस उसके ही घर में चोरी करेगा।

48. अनामिका की दूसरी सन्धि पर यदि कोई तिल हो तो वह मनुष्य स्त्रियों के प्रेमपाश में पड़ कर द्रव्य का नाश करने वाला होता है।

49. अनामिका के तीसरे पेरुएं पर काले बिन्दु का होना किसी यवन द्वारा द्रव्य हरण की सूचना देता है।

50. A कनिष्ठिका अंगुली के दूसरे पेरुएं पर तिल का चिह्न व्यापार में भागीदारी से धोखा, विवाह में ससुराल पक्ष से धोखा होना बताता है।

B. यदि यह तिल सफेद हो तो जातक के फेफड़े या हृदय में सूक्ष्म छिद्र होता है। उस जातक को ज्यादा शारीरिक श्रम नहीं करना चाहिए।

51. कनिष्ठिका की तीसरी संधि पर बिन्दु हो तो जायदाद व जर-जेवर की पराये हाथों षड़यत्र द्वारा चोरी होने की सूचना देता है।

52. A. अंगूठे के मूल में यदि काला तिल हो तो उसे जातक के प्रथम संतान की मृत्यु या गर्भ-क्षय का सांकेतिक चिह्न जानें।

B. यदि यह तिल लाल रंग का हो तो व्यक्ति धनी, मानी व दानी होता है।

53. A. प्राचीन मान्यता के अनुसार मोटे तौर पर यह माना जाता है कि हथेली के किसी भाग पर उपस्थित तिल यदि मुट्ठी बंद करने पर न दिखलाई दे तो शुभ, क्योंकि ऐसा जातक धन संग्रह करने वाला तथा मितव्ययी होता है।

B. यदि यह तिल मुट्ठी बंद करने पर भी दिखाई दे तो अशुभ। ऐसा जातक द्रव्य-संग्रह करने में असमर्थ रहता है तथा उसके पास से रुपये खर्च होते रहते हैं।

महर्षि पराशर के अनुसार कुछ चमत्कारिक तिल व मस्से

1. यदि स्त्री के हृदय-देश पर तिल हो तो सौभाग्यवती होती है।

2. जिस स्त्री के दक्षिण स्तन पर रक्तवर्णीय तिल हो उसकी बहुत सन्तति (पुत्र-पुत्री) होती हैं और वह अत्यन्त सुख, सौभाग्य एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होती है।

3. जिस स्त्री के वाम स्तन पर तिल हो उसके एक पुत्र होता है।

4. जिस जातक के भौंहों के मध्य या ललाट पर रक्तवर्ण तिलादि चिह्न हो वह राज्यपद कारक होता है।

5. जिस जातक के गाल पर तिल हो वह पुरुष हो तो पत्नी का अत्यन्त प्यारा, स्त्री के हो तो पति की प्राणवल्लभा होती है।

6. ओष्ठ प्रदेश पर तिल जातक को मिष्ठान्न, श्रेष्ठ भोजन सुख दिलवाता है।

7. स्त्री जातक के गुप्तांग के दक्षिण भाग में तिलादि चिह्न हो तो वह राजपत्नी किंवा राजमाता, अथवा जिलाधीश की पत्नी होती है।

8. जिसके नाक पर तिल हो वह भी उच्च पदस्थ अधिकारी की पत्नी होती है।

9. यदि स्त्री के नाक पर कृष्णवर्ण का दाग या मस्सा हो तो वह कुटिल, व्यभिचारिणी व प्रायः विधवा होती है। यह प्रत्यक्षतः अनुभूत है।

10. नाभि के नीचे वाले तिलादि चिह्न कनिष्ठ व मध्यम फलकारी होते हैं।

11. जिस पुरुष या स्त्री के कान, गाल, व कण्ठ पर तिलादि चिह्न हो तो उसके प्रथम सन्तान पुत्र होता है।

12. जांघ पर तिल लड़ाकू व ईर्ष्यालु जातक के होता है।

13. बायें पाँव पर तिल मनुष्य को सदा यात्रा कराता रहता है।

14. जिस मनुष्य के ठोड़ी पर तिल हो वह अत्यन्त भाग्यशाली व बहुत मित्रों वाला होता है।

15. यदि दोनों भृकुटियों क्रे मध्य में तिल हो तो पुरुष वक्ता और स्त्री अहंकारिणी होती है।

16. जिस मनुष्य के बांयें पांव पर तिल का चिन्ह हो तो वह सदैव यात्रा में रहे और कष्ट पावे।

17. यदि यह तिल मनुष्य के दांयें पांव पर हो तो वह देवालय, समाज व राजदूतत्व सम्बन्धी सेवा व विद्याध्यन करने वाला समाज सेवी होगा। पराशर ऋषि अन्त में कहते हैं-

'वामाङ्गे च शुभं स्त्रीणां प्रायः पुंसांश्च दक्षिणे'

अर्थात् पुरुषों के दक्षिण भाग व स्त्रियों के वाम भाग में पाये जाने वाले तिल, मस्से प्रायः शुभ होते हैं।

18. पुरुष जातक के बायें मस्तिष्क-प्रदेश पर तिल राज्य कष्ट व विपत्ति दिलाता है। परन्तु यदि यह तिल दांयें प्रदेश पर हो तो जातक अपार द्रव्य कमाता है।

19. भौंह पर तिल हो तो जातक जीवन में एक बार विदेश यात्रा जरूर करता है।

20. जिस नारी के बांयें कपोल पर तिल हो तो वह नारी भोग विलास में सदा लिप्त रहती है।

21. स्त्री के बांयें कान पर तिल, मस्सादि चिन्ह हो तो वह नित्य नये आभूषण-अलङ्कार पहनने वाली होती है।

22. जिस नारी के जांघ पर लाल तिल हो तो वह अनङ्गप्रिय एवं भौतिकवादी होती है। सैक्स का उपयोग वह इच्छातृप्ति का साधन मात्र समझती है। ऐसी स्त्रियां

काल-गर्ल, उच्चपदस्थ अधिकारी की सेक्रेटरी, पी. ए. तथा सिने-संसार में ज्यादा पाई जाती हैं।

23. जिस स्त्री की गर्दन के बांयें हिस्से पर यदि बड़ा काला, भूरा तिल व मस्सा हो तो वह परिवार की मुखिया होती है तथा उसके पति पर भी उसका आदेश चलता है। ऐसा अनेकों जगह देखा गया है।

24. यदि पुरुष के दाहिने कान पर लाल तिल या मस्सा हो तो वह सदाचारी, विद्वान, होते हुए भी निर्धन होता है।

25. यदि किसी पुरुष के दाईं आंख पर छोटा-सा लाल तिल या मस्सा हो तो वह जगत मोहित करने वाला एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला जातक होता है।

26. यदि पुरुष की दाहिनी भुजा पर लाल़, तिल हो तो वह व्यक्ति शत्रु का मान-मर्दन करता है तथा युद्ध स्थल में उसे अवश्य विजय मिलती है।

27. पैर पर लाल भूरे रंग का तिल हो तो जातक को स्थायी वाहन (मोटर-स्कूटर) का सुख होता है।

36

त्रिकोण, तारे, क्रास, चतुर्भुज एवं अन्य चिह्न

अंगुष्ठ, अंगुलियों व हथेली पर पाई जाने वाली सूक्ष्म रेखाओं का अपने आप में बड़ा महत्त्व होता है, परन्तु उनसे भी अधिक महत्त्व होता है इन पर पाये जाने वाले सूक्ष्म चिन्हों का; ये चिन्ह स्वतन्त्र व परतन्त्र भेद से दो प्रकार के होते हैं।

नं .–141
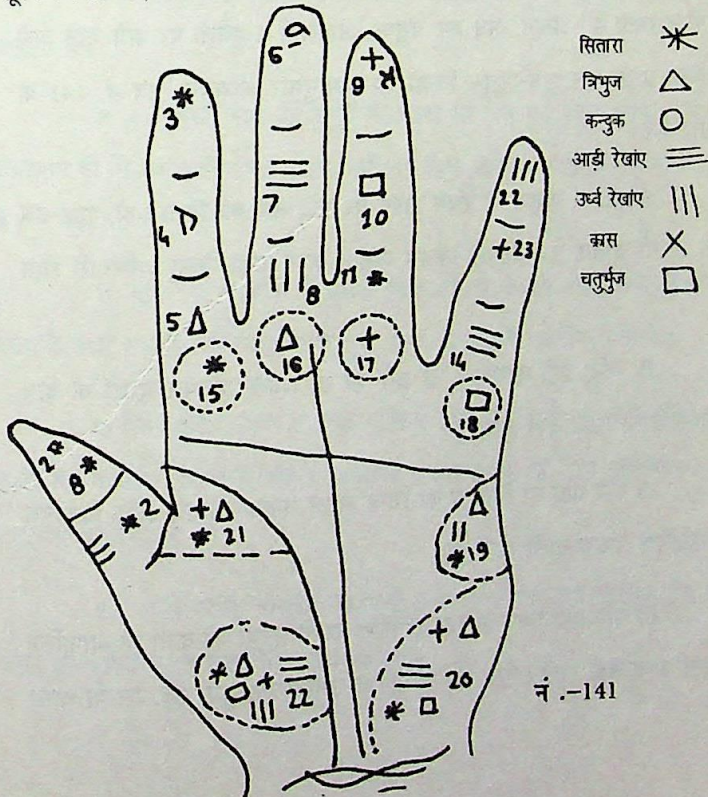
'स्वतन्त्र चिह्न' वे कहलाते हैं जिनका हाथ की किसी भी मुख्य या गौण रेखाओं से इनका सम्पर्क नहीं होता। इनका फलादेश भी स्वतः पूर्ण प्रभाविक व पूरिपूर्ण होता है।

इसके विपरीत **'परतन्त्र चिह्न'** हाथ की मुख्य या गौण रेखाओं की सहायता व सम्पर्क से बनते हैं तथा जिन-जिन रेखाओं की शाखाओं प्रशाखाओं द्वारा ये निर्मित होते हैं उन-उन रेखाओं के तारतम्य के आधार पर इनका फलादेश प्रभावित होने के कारण ये परतन्त्र चिन्ह कहलाते हैं। अतः प्रस्तुत सूत्रों द्वारा फलादेश करते समय पाठकों को इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि चिन्ह स्वतन्त्र है या परतन्त्र। प्रत्येक व्यक्ति अपने हाथ में शुभ चिन्हों को जानने के लिए अत्यधिक लालायित रहता है। आइए, अब हम अंगुष्ठ, अंगुलियों व हथेली पर पाये जाने वाले अत्यधिक प्रमुख इन शुभ-अशुभ चिन्हों का क्रमानुसार अध्ययन चित्र नं. 141 के अनुसार करें।

1. A. * अंगुष्ठ के प्रथम खण्ड पर यदि तारे का निशान हो, शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करने वाला किन्तु व्यभिचारी होता है।

B. यदि इसी खण्ड में दो तारे हों तो व्यक्ति प्रतिपल दूसरों के दोष निकालने वाला छिद्रान्वेषी होती है।

Δ यदि यहां पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो जातक की तर्क शक्ति विकसित एवं वैज्ञानिक प्रारूप वाली होती है।

O यदि यहां स्पष्ट कन्दुक का चिन्ह हो तो मनुष्य को कभी भी व्यापारिक सफलता प्राप्त नहीं होती। ऐसा व्यक्ति अपना सभी रुपया जुए, सट्टे, रेस या चान्स

लगाने में समाप्त कर देता है और अपयश का भागी बनकर सदैव पछताता रहता है।

≡ यहां आडी रेखाएं होने पर जातक की तार्किक शक्ति कमजोर हो जाती है।

अनुभव में ऐसा भी आया है कि जितनी आड़ी रेखाएं अंगुष्ठ के प्रथम खण्ड पर होती हैं उतने ही जातक के भाइयों की संख्या होती है। अथवा जातक की पैतृक सम्पत्ति में उतनी ही बाधाएं (विभाग) होती हैं। उसे जीवन में असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

।।। उर्ध्व रेखाएं तेज व अलौकिक तीव्रग्राही बुद्धि व तर्क शक्ति को बताती हैं।

× + दाहिने हाथ के अंगूठे पर क्रॉस या धन का चिन्ह स्पष्ट रूप से विद्यमान हो तो उस व्यक्ति को अपने निकटतम प्रिय व्यक्ति का वियोग सहना पड़ता है।

B. यदि इस खण्ड में दो क्रॉस चिन्ह हों तो जातक अत्यधिक विलासी होता है तथा उसकी अन्तिम अवस्था गुप्त रोगों के कारण दयनीय होती है।

□ ऐसे व्यक्ति कुशल तार्किक युक्तियों द्वारा जीवन में सफलता की ओर बढ़ते हैं। वकालत, डॉक्टरी, पंडित, ज्योतिषी एवं वक्ताओं के लिए यह विजय व सफलता का निशान है।

2. * ऐसे व्यक्ति मानवीय सद्‌गुणों से सम्पन्न होते हुए भी कुसंगति के असर के कारण गलत रास्तों में भटक जाते हैं।

Δ यहां त्रिभुज होने से जातक उच्च कोटि का दार्शनिक या वैज्ञानिक होता है।

O कन्दुक का निशान होने से जीवन में अद्वितीय तार्किक शक्ति प्राप्त होती हे।

≡ आड़ी रेखाएं सुतर्क एवं तात्कालिक बुद्धि की कमी को बताती हैं।

।।। उर्ध्व रेखाएं स्पष्ट एवं निर्भीक व स्वतन्त्र विचार शक्ति की द्योतक हैं।

× + द्वितीय खण्ड पर क्रॉस होने से जातक वैश्यावृत्ति के चक्कर में उलझा रहता है।

□ ऐसा जातक तर्कप्रिय, न्यायप्रिय एवं कुशल व्यावहारिक व्यक्ति होता है।

3. * यदि तर्जनी अंगुली के प्रथम खण्ड पर सितारे का निशान हो तो जातक के जीवन में एक गम्भीर हादसा होकर भाग्योदय होता है।

Δ ऐसा व्यक्ति योगी या जादूगर होता है, आध्यात्मिक ज्ञान का पिपासु, मन्त्र शक्ति का ज्ञाता एवं ज्योतिष व तन्त्रशास्त्र का जानकार होता है।

O ऐसा व्यक्ति आदर्श-प्रेमी, श्रद्धालु व परम भक्त होता है।

≡ नास्तिक बुद्धि वाले व्यक्ति को बताती हैं।

+ × धार्मिक उन्माद का द्योतक अशुभ चिह्न है।

Δ नम्रता, सज्जनता व सफलता का सूचक है। ऐसा व्यक्ति अपने कुल व खानदान को यश, प्रतिष्ठा व मान दिलाता है।

4. * तर्जनी के द्वितीय खण्ड पर तारा शुभद व सफल प्रेमी का चिन्ह है।

Δ ऐसा व्यक्ति सफल राजनीतिज्ञ होता है।

O बहुत ज्यादा महत्त्वाकांक्षी व बड़े अधिकारी के हाथ में पाया जाता है।

≡ ईर्ष्यालु प्रवृत्तिं का द्योतक चिन्ह है।

।।। आदर्श मनोवृत्ति एवं आदर्श सहायक, मित्र मण्डली वाला व्यक्ति होता है।

\+ × यहां साहित्यिक सफलता के सूचक होते हैं।

□ किसी भी कार्य में तल्लीनता व लगाव का द्योतक चिन्ह है।

5. * तर्जनी अंगुली के मूल में यदि तारा हो तो व्यक्ति विद्वान् किन्तु घमण्डी होता है।

Δ ऐसे जातक को प्रकाशन कार्य द्वारा सफलता मिलती है।

O ऐसे व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति होती देखी गई है।

≡ ऐसे व्यक्ति मुकदमेबाजी में उलझे रहते हैं। इनका स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा होता है तथा इनकी पाचन शक्ति भी कमजोर होती है।

।।। दूसरों पर अनुशासन करने की प्रवृत्ति एवं उसमें सफलता।

\+ × जिद्दी व हठीपन की आदत, कुतर्क करने की प्रवृत्ति।

□ सामाजिक व राजनैतिक पद प्रतिष्ठा का सूचक चिन्ह।

6. * मध्यमा अंगुलि के प्रथम खण्ड पर यदि तारा अन्य अशुभ चिन्ह के साथ हो, तो ऐसा व्यक्ति किसी हिंसक व पालतू पशु, लाठी, बन्दूक या तेज हथियार द्वारा मारा जाता है।

Δ ऐसा व्यक्ति अपने गृहस्थ जीवन से अत्यन्त प्रसन्न रहता है। उसके स्त्री-बच्चे बड़े आज्ञाकारी होते हैं जिनकी सहायता से वह अपनी सभी आर्थिक समस्याओं को सुलझा कर बड़ी ही प्रसिद्धि को प्राप्त होता है। यह भौतिक सफलताओं का सूचक चिन्ह है।

O ऐसा व्यक्ति ऐन्द्र-जालिक विद्या, मन्त्र-तन्त्रवाद, जादू टोने व अन्य रहस्यमय विद्याओं में शीघ्र सफलता प्राप्त करता है।

≡ आत्महत्या व निराशावादी मनोवृत्ति का चिन्ह है।

।।। ऐसे जातक के व्यापारिक क्षेत्र में गुप्त शत्रु होते हैं।

+ × ऐसा व्यक्ति हिंसक प्रवृत्ति वाला होता है।

□ ऐसा मनुष्य अचानक ही किसी दूर के मित्र अथवा सम्बन्धी के मरण उपरान्त अवश्य ही धन पाता है। सट्टे, लाटरी व रेस, चान्स तथा जुआ से भी धन की प्राप्ति ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति को होती है।

7. * इस स्थान पर सितारा जातक के हाथ में अकस्मात् विपत्ति अथवा दुर्घटना सूचक है।

Δ ऐसे व्यक्ति भौतिक दृष्टि से सम्पन्न व सुखी होते हुए भी षड्यन्त्रकारी प्रवृत्ति के जातक होते हैं।

O यह रहस्यमय विद्याओं में अद्वितीय सफलता का सूचक चिन्ह है।

≡ गुप्त शत्रुओं द्वारा शारीरिक चोट से अंग-भंग होना; प्रायः विष भय भी इस चिन्ह के होने से देखा गया है।

।।। मित्रों द्वारा निश्चित लाभ।

+ × खतरनाक मानसिक चेष्टाएं एवं पाशविक हत्या करने की मनोवृत्ति का उद्बोधक चिन्ह; यदि अन्य अशुभ चिन्ह भी हों तो जातक अवश्य हत्यारा होता है।

□ भयंकर दुर्घटना से बचाव किन्तु जेल जाने का चिन्ह है।

8. * मध्यमा अंगुली के तृतीय पेरुएं पर तारा का चिन्ह पेशेवर हत्यारों के हाथ में पाया जाता है। कसाई वर्ग के हाथ में यह चिन्ह बहुतायत तौर पर पाये गये।

Δ शंकालु व भीरु प्रवृत्ति के जातक की सूचना देता है।

O भौतिक शास्त्रों के ज्ञान में सफलता।

≡ पैतृक कार्यों में असफलता।

।।। उदासीन जीवन वृत्ति अथवा वैराग्य प्रवृत्ति।

+ × A संतान हीनता का सूचक चिन्ह।

B. यदि इस स्थान पर दो क्रॉस हों तो व्यक्ति चोर, ठग व डाकू होता है।

□ निर्दय व कठोर मनोवृत्ति।

9. * अनामिका के प्रथम खण्ड पर तारा आध्यात्मिक उन्माद का सूचक है।

Δ सौन्दर्य, प्रसाधन एवं श्रेष्ठ कलाकृतियों में रुचि।

O जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीय सफलता। विदेशों में भी धन यश की प्राप्ति।

≡ जीवन में कलाप्रिय मनोवृत्ति एवं ज्ञान होते हुए भी उसमें असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

।।। कलाप्रिय मनोवृत्ति की अत्यधिकता के कारण उन्माद।

+ × कारीगरी व हुनर के द्वारा पर्याप्त धन कमाते हुए भी अर्थाभाव।

राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्र में बहुत बड़ी सफलता के कारण यह व्यक्ति आयु पर्यन्त उसी सफलता के कारण पूजनीय बन सकता है।

10. * अनामिका के द्वितीय पेरुएं पर यह चिन्ह जातक में कुशल वक्तृत्व शक्ति व प्रतिभा को दर्शाता है।

Δ वैज्ञानिक प्रतिभाओं के साथ आध्यात्मिक समन्वय।

O श्रेष्ठ व पूज्य सफलताओं के कारण सम्मान।

≡ ठीक समय पर प्रतिभा व बुद्धि का उपयोग न कर सकने के कारण असफलता व अपयश। ईर्ष्यालु प्रवृत्ति।

।।। अपनी कुशल वाक्-शक्ति, प्रतिभा के कारण आयु पर्यन्त विमल यश की प्राप्ति।

+ × ऐसा व्यक्ति शिथिल गात्र प्रायः नपंसुक होता है।

□ विशेष प्रतिभाओं के कारण आदरणीय व्यक्तित्व।

11. * अनामिका के तृतीय खण्ड पर सितारे वाले व्यक्ति में यश की अत्यधिक लिप्सा रहती है तथा ऐसा जातक आत्मप्रंशसी होता है।

Δ यहां पर त्रिकोण होने से ऐसे जातक में किसी भी व्यक्ति को प्रभावित करने की विशिष्ट शक्ति रहती है।

O भाग्य व सफलता का सूचक चिन्ह है।

≡ दुर्भाग्य व दरिद्रता का निशान है।

।।। विपरीत लिङ्गी के प्रति अत्यधिक आकर्षण व सफलता।

+ × अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा के कारण बदनामी।

□ सुखी व सम्पन्न गृहस्थ जीवन का शुभ चिन्ह।

12. * कनिष्ठिका के प्रथम खण्ड पर तारा होने पर जातक कुशल वक्ता, अभिनेता, राजनीतिज्ञ व पंडित होता हुआ भी आर्थिक दृष्टिकोण से सम्पन्न नहीं होता।

Δ कनिष्ठिका के प्रथम खण्ड पर त्रिकोण, जीवन में दिव्य रहस्यमय शक्तियों की प्राप्ति का चिन्ह है।

O ऐसे मनुष्य को हृदय से भूले हुए कार्य के, अचानक हो जाने पर भारी प्रसन्नता मिलती है। व्यापारिक सफलता का उद्बोधक चिन्ह है।

≡ धूर्त, चोर व अक्सर झूठ बोलने वाले व्यक्ति के हाथ में ये रेखाएं पाई जाती हैं।

।।। कुशल नेतृत्व शक्ति, सफलता व व्यापारिक मित्रता से लाभकारी संकेतों का चिन्ह है।

+ × अच्छे हाथ में हो तो व्यक्ति शकुन शास्त्र का ज्ञाता होता है। अन्य अशुभ चिन्हों के साथ हो तो व्यक्ति मिथ्याभाषी, चोर व कलहप्रिय होता है।

□ व्यापारिक गुणों के साथ विकसित आर्थिक सफलताएं।

13 * कनिष्ठिका के द्वितीय खण्ड पर सितारा अशुभ मनोवृत्ति का सूचक है।

Δ आध्यात्मिक विद्या से व्यावहारिक पक्ष में सफलता।

O स्थायी पूंजी का द्योतक चिन्ह है।

≡ व्यावहारिक पक्ष में सफलता, समाज में प्रतिष्ठा।

+ × महान् असफलता एवं प्रायः कैदी जीवन।

□ निर्दोष होते हुए भी झूठा कलंक व कैदी जीवन।

14 * कनिष्ठिका के तृतीय पेरुएं पर तारे का चिन्ह विलक्षण तीव्रग्राही बुद्धि का द्योतक चिन्ह है।

Δ यहां त्रिकोण दोहरा व्यक्तित्व व उसमें सफलता को बताता है।

O चोरी व झूठ बोलने की प्रवृत्ति परन्तु पकड़ा नहीं जाना।

≡ धोखेबाजी की मनोवृत्ति व पकड़ा जाना।

।।। व्यापारिक क्षेत्र में धोखाधड़ी से कमाना।

+ × चोरी, डकैती व अपयश के कारण अप्रिय मृत्यु।

□ दुर्बोध व दुस्साहस पूर्ण चेष्टाएं करना।

15. * बृहस्पति के पर्वत पर सितारा जातक के जीवन में अचानक भाग्योदय व सफलता को बताता है। ऐसे जातक का बड़े-बड़े राजनेता, प्रतिष्ठित पदाधिकारी एवं पूज्य लोगों से विशेष सम्पर्क बना रहता है।

Δ यहां पर त्रिकोण हो तो भाग्य व समृद्धि का सूचक है। ये चालाक व चतुर होते हैं। ऐसे जातक में उच्च श्रेणी की नेतृत्व शक्ति होती है। तथा राजनैतिक सफलता इनके कदम चूमती है।

O शकुन शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से जातक को जीवन में सफलता मिलती है।

≡ यहां पर ऐसी रेखाएं असफलता की सूचक हैं। ऐसे जातक के जीवन में राजनेता से शत्रुता होती है। यहां पर गिनती में जितनी रेखाएं होंगीं, उतनी ही बार राजनैतिक पतन अवश्यम्भावी है।

।।। यदि उर्ध्व रेखा एक हो तो प्रत्येक कार्य में सफलता का सूचक, दो हों तो महत्त्वाकांक्षी, उससे अधिक रेखाएं जातक के चहुँमुखी विकास की सूचक हैं।

+ × सम्पूर्ण हथेली में केवल बृहस्पति क्षेत्र का क्रॉस शुभ माना गया है। ऐसे जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है तथा ससुराल से धन लाभ भी होता देखा गया हैं।

□ असफलताओं के प्रति बचाव का यह चिन्ह जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं अनुशासनप्रियता को दर्शाता है।

16 * शनि पर्वत पर सितारा दुर्भाग्य का सूचक है। ऐसे व्यक्ति को प्रायः लकवा, टी. बी. एवं अन्य कोई दीर्घकालिक बीमारी होती है।

Δ ऐसा व्यक्ति वैज्ञानिक, तार्किक होता हुआ रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है। जीवन में कुछ दुर्दम्य, दुस्साहसपूर्ण एवं जटिल कार्य करने का उत्साह इनमें प्रतिपल विद्यमान रहता है। यदि इस चिन्ह के साथ मध्यमा अंगुली पर सितारे का भी निशान हो तो व्यक्ति काले जादू का जानकार होता है।

O यह कन्दुक तांत्रिक सफलताओं का शुभ चिन्ह है।

≡ शारीरिक कष्ट व तांत्रिक शक्ति प्राप्त लोगों की शत्रुता जीवन में बाधक होती है।

।।। कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता।

+ × संतानहीनता व रहस्यमय मृत्यु का संकेतक चिन्ह है।

□ आर्थिक एवं व्यावहारिक सफलता।

17. * सूर्य पर्वत पर यह महान सफलता, प्रतिष्ठा का सूचक है। यद्यपि ऐसा जातक अपने प्रभावित क्षेत्र में मित्र मण्डली की मदद से आगे बढ़ता है तथापि अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा व परिश्रम के कारण खूब द्रव्य व यश कमाता है।

Δ ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान राजनेता, अधिवक्ता व वक्ता होता है। कला व विज्ञान क्षेत्र में बराबर रुचि लेने वाले ऐसे जातक का जीवन सफल व सुखी होता है।

O सूर्य क्षेत्र पर यह निशान सूर्य की उपस्थिति का बोधक चिन्ह माना जाता है जो कि धन, ऐश्वर्य, प्रसन्नता, यश व प्रतिष्ठा का सूचक है।

≡ असफलता व अपयश की सूचक रेखाएं हैं।

।।। एक रेखा धन व प्रसिद्धि की सूचक, दो हों तो प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, परन्तु कम सफलता, अधिक रेखा चहुंमुखी प्रतिभा व धनागम की सूचक हैं।

+ × धनहानि व अपयश का सूचक चिन्ह है, यदि सूर्य रेखा अच्छी हो तो धन हानि व अपयश दूर हो जायेगा।

□ व्यापारिक प्रतिभा के साथ आर्थिक सफलता का सूचक चिन्ह।

18. * बुध पर्वत पर यह चिन्ह उत्तम विद्या का द्योतक है। सफल व्यापारी, डॉक्टर, वैज्ञानिक, लेखक, अन्वेषक व प्रकाशक का सूचक चिन्ह है।

Δ राजनैतिक व व्यापारिक दृढ़ता।

O आकस्मिक मृत्यु या विष मृत्यु।

≡ व्यापारिक असफलता, चोरी व द्रव्य हानि का सूचक है।

।।। एक रेखा अद्वितीय आर्थिक सफलता की सूचक है। दो हों तो आर्थिक स्रोत दो प्रकार के रहेंगे। अधिक रेखा, अधिक परिश्रम के साथ अत्यधिक सफलता का सूचक चिन्ह है।

+ × धूर्तता, धोखाधड़ी व चापलूसी प्रवृत्ति।

□ मानसिक आर्थिक नुकसान से सुरक्षा का चिन्ह है।

19. * उर्ध्व मंगल क्षेत्र पर सितारा हो तो भावावेश व क्रोध में आकर मनुष्य अमंगल के काम यहां तक कि हत्या तक भी कर सकता है।

Δ साहसिक व सैनिक कार्यों में अत्यधिक सफलता।

O नेत्र पीड़ा, दुर्घटना का सूचक चिन्ह है।

≡ शत्रु रेखा; प्रत्येक रेखा एक शत्रु को बताती है। जितनी गहरी व लम्बी रेखा हो शत्रु उतना ही गहरा व कट्टर शत्रु होता है।

।।। एक रेखा साहस व सफलता, दो बहादुरी का झूठा दिखावा, अधिक रेखा अत्यधिक प्रभुता प्रदर्शन में रुचि व असफलता।

+ × झगड़ालू प्रवृत्ति द्वारा आकस्मिक संकट।

□ क्रोधी स्वभाव, किन्तु तर्क शक्ति व बुद्धिमत्ता द्वारा उस पर नियन्त्रण का सूचक चिन्ह है।

20. * चन्द्रक्षेत्र पर सितारा जल मृत्यु, यात्रा एवं हवाई दुर्घटना में मृत्यु का संकेतक चिन्ह है।

Δ बुद्धि की श्रेष्ठता, लेखन, प्रकाशन, कला कार्य में यश व सफलता का सूचक चिन्ह है।

O जल में डूबने से मृत्यु।

≡ मानसिक आघात, गुप्त चिन्ता व दुःखद यात्रा की सूचक रेखाएं।

।।। साहसिक यात्रा, यात्रा में सफलता, मुखर कल्पना शक्ति।

+ × पागलपन या जलमृत्यु।

□ सभी अशुभ खतरों से बचाव। दुःखद यात्राओं से सुरक्षा पागलपन व जलभय यदि हों तो उनके खतरों से मुक्ति दिलाता है।

21. * निम्न मंगल क्षेत्र पर सितारा शुभ कार्यों हेतु क्रोध, हिंसा व हत्या का सूचक चिन्ह है।

Δ साहसिक यात्रा व बहादुरी हेतु सम्मान व धन की प्राप्ति।

O नेत्र पीड़ा परन्तु पुनः ठीक हो जाना।

≡ गुप्त शत्रु होते हैं ; परन्तु शत्रु कोई गम्भीर हानि नहीं पहुँचा सकते। पराक्रम तेज रहता है।

।।। सही कार्य व सही वक्त पर ताकत व बल का सदुपयोग, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सफलता।

+ × क्रोधावेश, परन्तु झगड़ों, दंगों व कोर्ट-कचहरी में विजय का सूचक चिह्न है।

□ सत्य, असत्य पर निर्णय व न्याय करने की अनुशासनात्मक प्रवृत्ति में सफलता। हमारी शोधों में ऐसा चिन्ह डी. आई. जी., आई. जी. व बड़े न्यायधीश एवं अति उच्च पदस्थ अधिकारियों के हाथों में देखा गया है।

22 * शुक्र क्षेत्र में सितारा अत्यधिक प्रेमी व निकटतम रिश्तेदार की मृत्यु से शोक करवाता है।

Δ सुनिश्चित विवाह सफलता, प्रेमी व प्रेमिका द्वारा धन व ऐश्वर्य का लाभ।

O नेत्र पीड़ा, गुप्त बीमारी व वीर्य दोष, वैश्या से सम्पर्क या प्रेम में धोखा मिलेगा।

≡ सैक्स की अत्यधिक मनोवृत्ति, विपरीत लिंगी से सम्पर्क शीघ्र शारीरिक संबंधों में जुड़ जायेगा, परन्तु दुःखान्त वियोग।

।।। स्वस्थ व सच्चा प्रेम संबंध।

+ × किडनी, गुर्दे व गुदा में बीमारी।

□ गुप्त रोगों से बचाव, परन्तु जेल योग सम्भव।

प्रस्तुत चित्र नं. 141 में प्रदर्शित स्थलों के अलावा भी हथेली में अन्यत्र स्थानों में ऐसे ही अनेक चिन्ह देखने को मिल सकते हैं। परन्तु वे सभी चिन्ह परतन्त्र माने जायेंगे तथा उनका प्रभाव तत्-तत् रेखाओं के सम्पर्क से ग्रहों के प्रभाविक क्षेत्र की सीमाओं से न्यूनाधिक समझें।

37

अंगूठे व हथेली पर जालियों के निशान

अंगूठे व सम्पूर्ण हथेली में पाये जाने वाले जालियों (Grills) के चिन्ह अपने आप में बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं विचित्र रहस्यों को उद्‌बोधित करने वाले होते हैं। इन पर शोध अब तक अपूर्ण-सी रही है। हमारे कार्यालय में उपलब्ध हजारों हैण्ड-प्रिंटस् के आधार पर हम निम्नांकित निष्कर्षों पर पहुंच पा रहे हैं।

जालियों के चिन्ह प्रायः अशुभ ही होते हैं।

हथेली में पाया जाने वाला प्रत्येक जाली का चिन्ह जन्मकालिक एक विशिष्ट ग्रह स्थिति को उद्‌बोधित करता है।

हमारी शोध के अनुसार यह जाली का चिन्ह जिस-जिस ग्रह-क्षेत्र, राशि-क्षेत्र पर होता है उन-उन ग्रहों व राशियों का प्रभाव जन्मकालिक कुण्डली में क्षीण करता है।

यह जाली-चिन्ह एक प्रकार से छाया ग्रहों की छाया सी दिखलाई पड़ने के कारण थोड़े से अभ्यास के पश्चात् इसके आधार पर राहु, केतु की जन्मकालिक ग्रह स्थिति का पता शीघ्र लगाया जा सकता है।

दो ग्रह क्षेत्रों पर पाया जाने वाला यह चिन्ह जन्मकुण्डली में उन दो ग्रहों की युति व दृष्टि सम्बन्ध को बताता है।

भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर पाई जाने वाली जालियों का शुभाशुभ प्रभाव

1. A अंगूठे के प्रथम खण्ड पर पाये जाने वाला यह चिन्ह मंगलीक कुण्डली को उद्‌बोधित करता है। ऐसे व्यक्ति का अष्टकवर्ग प्रभावहीन होता है। ऐसे जातक जीवन में जितना कठिन परिश्रम करते हैं उसके अनुपात में उनको उतनी सफलता नहीं मिल पाती।

B यदि यह चिन्ह नाखून के एकदम पास हो तो जातक को अपने जीवन साथी के द्वारा धोखा मिलता है।
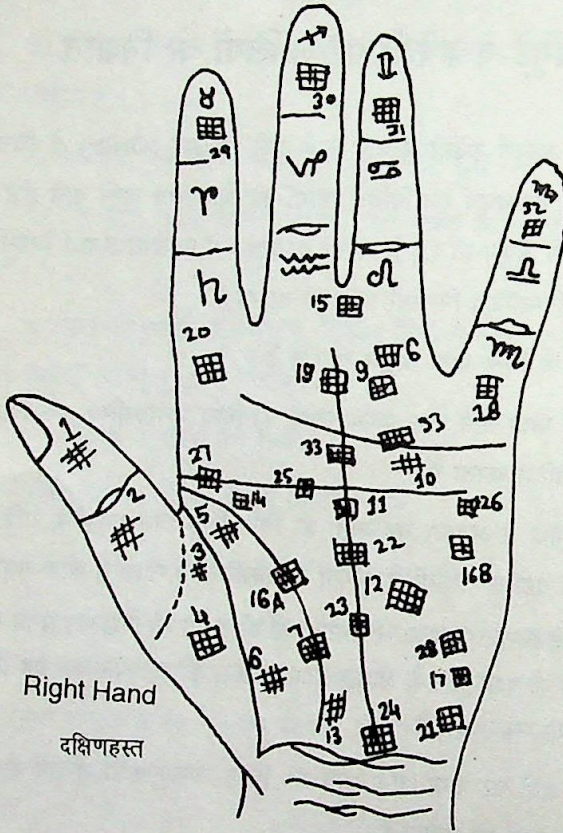
चित्र नं. — 142

अंगूठे के द्वितीय पेरुएं (Logic-phalanx) पर पाए जाने वाला यह चिन्ह जातक की कमजोर तर्क-शक्ति को प्रतिबिम्बित करता है। ऐसे जातक को हमेशा अपने जीवन

के महत्वपूर्ण कार्यों में अन्य बुजुर्गों व विद्वानों की सलाह लेनी चाहिए; क्योंकि ये जातक स्वयं बुद्धि के आधार पर सही व शीघ्र निर्णय ले पाने में असमर्थ रहते हैं। दर्शनशास्त्र वकालत, ज्योतिषी का कार्य इनके लिए सदा सर्वदा वर्जित समझना चाहिए।

3. शुक्र + मंगल क्षेत्र में पाए जाने वाला यह चिन्ह विवाह व प्रेम-क्षेत्र में असफलता का सूचक है।

4. केवल शुक्र स्थल पर पाया जाने वाला यह चिह्न शुभ माना जाता है, क्योंकि ऐसे जातकों की जन्म-कुण्डलियों में शुक्र केन्द्र (1, 4, 7, 10) स्थानों में पाया गया है। ऐसे व्यक्ति सामुद्रिक यात्राओं से, स्मगलिंग, मछली उद्योग, ह्वेल मछली का तेल, हीरे-जवाहारात एवं अन्य नेगेटिव शुक्र सम्बन्धित कार्यों से धन प्राप्त करते हुए देखे गए हैं।

5. यह अचानक हवाई दुर्घटना, ट्रेन दुर्घटना, बम इत्यादि तेज गतिशील व विस्फोटक पदार्थों के संयोग से हुई दुर्घटना का संकेतक चिह्न है।

6. निम्न शुक्र-क्षेत्र में पाया जाने वाला ऐसा चिह्न व्यक्ति के जेल जाने का संदेश देता है। ऐसा जातक नेगेटिव शुक्र की दशा लगते ही जेल जाता है।

7. आयुरेखा पर यह चिन्ह खराब शुक्र+ मंगल की युति के साथ कैंसर (cancer) की बीमारी का संकेत देता है।

8. सूर्य-पर्वत (Apex) पर पाया जाने वाला यह चिन्ह जातक में पाई जाने वाली अत्यधिक आत्मविश्वास (over confidence) शक्ति के कारण भयंकर दुर्घटना का कारण बनता है। ड्राइविंग कार्य ऐसे जातकों के लिए सर्वथा प्रतिकूल माना जाना चाहिए।

9. सूर्य + शनि + बुध के सामूहिक क्षेत्र में पाया जाने वाला यह चिह्न व्यक्ति को राजनीति क्षेत्र में उच्च शिखर पर ले जाकर फिर गिराता है।

10. सूर्य + मंगल क्षेत्र पर यह निशान खतरनाक अति महत्त्वाकांक्षी व्यक्तित्व की निशानी है।

11. ऐसे चिह्न वाला जातक कुछ कामुक प्रवृत्ति वाला एवं फिजूलखर्ची होता है।

12. चन्द्र व केतु पर बना यह जाल चिह्न निराशाजनक जीवन का अन्त आत्महत्या द्वारा होना बताता है।

13. इस चिह्न का उदय माता-पिता से बिछोह, पिता की अकाल मृत्यु व पैतृक सम्पत्ति के नुकसान की सूचना देता है तथा इस चिन्ह का कुप्रभाव जन्म कुण्डली के नवम भवन पर से स्पष्ट देखा जा सकता है।

14. बृहस्पति + मंगल क्षेत्र पर यह निशान व्यक्ति के गुप्तांग में गम्भीर बीमारी, गुप्त रोग तथा कभी-कभी केंसर (Cancer) रोग को भी बताता है।

15. सूर्य + शनि के सन्धि क्षेत्र पर यह चिन्ह लकवे के रोग की सूचना देता है। यदि जन्मपत्री में शुभ ग्रहों की दृष्टि से बचाव हो तो लकवा ठीक हो जायेगा।

16. आयु (पितृ) रेखा पर चिह्न 16 A अशुभ माना गया है। यह चिन्ह जन्म कुण्डली के दशम स्थान को प्रभावित करता है। परन्तु यदि इसका जबाबी चिन्ह 16 B प्लूटो क्षेत्र में हो तो जातक को पैट्रोल, तेल, गैस, सोना, चांदी आदि भूगर्भीय पदार्थों से आशातीत लाभ होता है।

17. यह चिन्ह जन्म कुण्डली में अशुभ चन्द्र + गुरू की युति व दृष्टि सम्बन्ध को बताता है। ऐसे जातक निराशावादी होते हैं तथा भावना में आकर आत्महत्या तक कर सकते हैं।

18. बुध पर्वत पर यह चिन्ह राहु + बुध की युति को दर्शाता है। ऐसे व्यक्ति के व्यापार क्षेत्र में भागीदारी द्वारा बाधा उत्पन्न होती है। ऐसा जातक झूठे-सच्चे मुकदमों में उलझाया जा सकता है।

19. ऐसे चिन्ह वाले जातक की कुण्डली में सूर्य + शनि आमने-सामने होते हैं। ऐसे व्यक्ति जुआ, ताश, भाग्य आजमाने वाले खेल व लॉटरी में अत्यधिक रुचि लेते हुए असफलता को प्राप्त करते हैं।

20. बृहस्पति + शुक्र क्षेत्र को प्रभावित करता हुआ यह चिन्ह अस्थायी वैवाहिक सुख एवं कलहपूर्ण दाम्पत्य जीवन को प्रदर्शित करता है।

21. मणिबन्ध के कुछ ऊपर चन्द्र-स्थल पर यह जाली जन्मकालिक चन्द्र को जलराशि (कर्क, वृश्चिक, मीन) में होना सिद्ध करती है। यह अशुभ चिन्ह है। ऐसे जातक काल्पनिक दुनियां में विचरण करते हुए यथार्थता से दूर होते हैं। इनका रुपया भी अव्यवस्थित व बेकार के कार्यों में नष्ट होता है। इनको जल-भय सदैव रहता है।

22. शनि + शुक्र क्षेत्र को प्रभावित करने वाला यह जाल चिन्ह जातक की चित्तवृत्ति गलत कार्यों में लगाता है। ऐसा जातक वैश्यावृत्ति के द्वारा या अश्लील साहित्य के सम्पादन, प्रकाशन या विक्रय से रुपया कमाता है।

23. ऐसे चिन्ह वाले जातक के पिता की मृत्यु छोटी उम्र में हो जाती है तथा ऐसा जातक भी अपनी जीवन वृत्ति के लिए गलत कार्यों में पड़ जाता है। वैश्यालय व दलाली का घिनौना कार्य भी कर सकता है।

24. शनि + मंगल की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह, हृदय-सम्बन्धी रोग को बताता है।

25. बृहस्पति + मंगल की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह मस्तिष्क की नाड़ियों में सूजन, या दिमाग में पानी भर जाने की सम्भावना को बताता है।

26. चन्द्र + केतु की युति, प्रतियुति बताने वाला यह चिन्ह, मस्तिष्क विकृति व पागलपन तथा दिमागी कमजोरी को बताता है।

27. बृहस्पति + मंगल की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह दिमागी चोट (Brain injury) व भयंकर मानसिक तनाव को बताता है।

28. चन्द्र + बुध की युति, प्रतियुति को बताने वाला वह चिन्ह दिमागी कमजोरी, स्मरण शक्ति की कमजोरी, गले का ऑपरेशन एवं चिड़चिड़े स्वभाव को बताता है।

29. A तर्जनी अंगुली पर शनि+मंगल की युति प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह गलत व्यवहार एवं हिंसात्मक कार्यों द्वारा जातक की प्रतिष्ठा को नष्ट करता है।

B. यदि खराब हाथ हो तो व्यक्ति कैदी जीवन बिताता है।

C. तर्जनी के दूसरे खण्ड पर यह जाली असफलता की सूचक है।

D. तर्जनी के अंतिम खण्ड पर यह जाली कपटी व धूर्त अक्सर अपराधी व्यक्ति को सूचित करती है।

30. A मध्यमा अंगुली पर शनि + बृहस्पति की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह जातक को आर्थिक क्षेत्र में परेशानी एवं दिक्कतों का दिग्दर्शन कराता है।

B. यदि यह दूसरे खण्ड पर हो तो दुर्भाग्य की सूचना देता है। उस जातक के प्रायः पैर या कान में बीमारी होती है।

C. तीसरे खण्ड पर कंजूस व्यक्ति को बताता है।

31. A अनामिका पर बुध + मंगल की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह जातक के जीवन में सफलता, प्रफुल्लता एवं महत्त्वकांक्षी वृत्ति की बढ़ोतरी को बताता है।

B. दूसरे खण्ड पर द्वेषी व ईर्ष्यालु व्यक्तित्व को दर्शाता है।

C. तीसरे खण्ड पर जाली दरिद्रता की सूचक है।

32. A. कनिष्ठिका पर बुध + मंगल की युति, प्रतियुति को बताने वाला यह चिन्ह जातक के क्रिया कलापों के द्वारा स्वतः ही शत्रुओं की उत्पत्ति को बताता है। सहज में बने ये गुप्त शत्रु जातक के जीवन में विघ्न उपस्थित करते रहते हैं।

B. दुराग्रही व्यक्तित्व का प्रतीक चिन्ह।

C. तीसरे खण्ड पर यह चोर व हठी व्यक्ति को बताता है।

33. सूर्य + शुक्र की युति, प्रतियुति को बताने वाला हृदयरेखा पर यह चिन्ह जन्मकुण्डली में शुक्र की नीच, खराब व अस्तगत स्थिति को बताता है। ऐसे जातक को फेफड़े की तकलीफ, अस्थमा की बीमारी, अलसर इत्यादि हो सकते हैं।

34. शनि + मंगल की युति प्रतियुति को बताने वाली यह जाली जातक के जीवन में आर्थिक विषमता तथा व्यवस्थित जीवन यापन में बाधक चिन्ह है।

शाः उत्तमचन्द जैन (मद्रास) 'व्यापार योग'

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अंगुष्ठ पर चक्र।
2. यव-रेखा सरल, देखें पृष्ठ 117 में 4।
3. अंगुष्ठ मूल में यव।
4. स्वस्तिक चिन्ह।

प्रस्तुत जातक के हैंड-प्रिंट की पूरी रीडिंग 'अज्ञात दर्शन' के वर्ष 1. अंक 4 में दी गई थी। उस पर इनकी प्रतिक्रिया इन शव्दों में प्राप्त हुई—

'मैं भारत भर के सभी महान् ज्योतिषयों से मिला हूँ, बहुत से ज्योतिषी-ज्योतिष के नाम को बदनाम कर पैसे लूटने में लगे हुए हैं, मैं खुद ज्योतिष में रुचि रखता हूं, मैंने हजारों रुपये बर्बाद किए हैं, परन्तु जो संतुष्टि मुझे आप से प्राप्त हुई, वैसी अन्यत्र कहीं नहीं।'

- उत्तमचन्द

चित्र नं.– 143
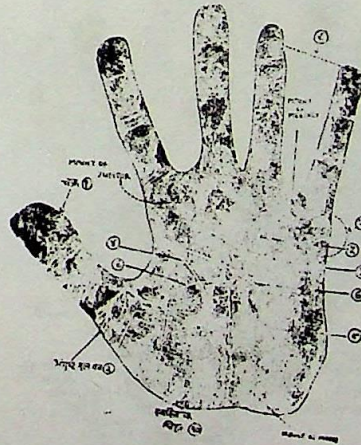
श्री कमलेश जैसलमेरिया (लक्षाधिपति योग)

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अंगुष्ठ मूल में तीन यव एवं बुध-पर्वत पर भी तीन पुत्र रेखाएं द्रष्टव्य। देखें पृ. 116 (B)।
2. शनि का पर्वत सूर्य की तरफ है, कुण्डली में सूर्य + शनि की युति है।

प्रतिक्रिया– 'अज्ञात दर्शन वर्ष 1, अंक 6 के अन्दर पांच पृष्ठों में मेरे हाथ की जो रीडिंग दी गई उसका एक-एक शब्द सही व सत्य है तथा आज भी वह रीडिंग मेरा मार्गदर्शन कर रही है। मेरे 11 प्रश्नों का तारीख वाईज जो जबाब दिया गया वह चमत्कारिक है। यहीं से मेरा विश्वास 'ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री' में गहरा बैठ गया।'

- कमलेश
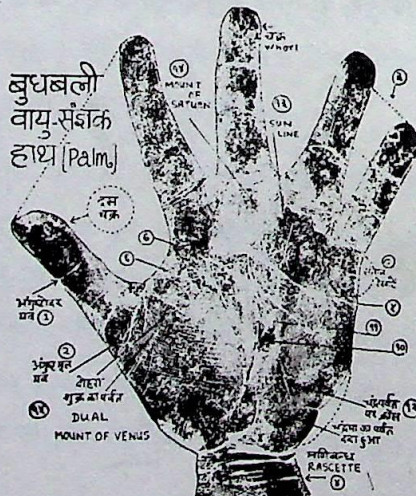
चित्र नं. – 144

निवर्तमान शंकराचार्य स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि (सन्यास-योग)

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. बृहस्पति के पर्वत पर स्वस्तिक।

2. अंगुष्ठोदर में तीन यव। देखें पृष्ठ 117 में 2।

नोट– 'हाथ में सन्यास योग' की विस्तृत जानकारी के लिए देखें 'अज्ञात दर्शन' वर्ष 2 अंक 1

चित्र नं. – 145

सफल लेखक एवं बुधबली ज्योतिषी

पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य, लेखक व डॉ. श्रीमाली

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अंगुष्ठ पर द्विस्वभाव वायुसंज्ञक चिन्ह।
2. कनिष्ठिका विशेष दीर्घ।
3. विखण्डित सूर्य-रेखा जातक के स्थायी यश व सामाजिक प्रतिष्ठा में बाधक है।

चित्र नं. – 146

सफल श्रमिक किन्तु असफल धर्मगुरू

लेखक व जय गुरूदेव

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. सूर्य रेखा धूमिल।

2. कम रेखाओं वाला हाथ।

3. रेखाएं सभी गहरी परन्तु विद्या रेखा गायब है

चित्र नं.– 147

श्री रामकुमार गुप्ता (बल्लभगढ़)

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अंगुष्ठ पर जलवलय व कर्कलग्न एवं आड़ी रेखाएं द्रष्टव्य।
2. गुरू का पर्वत शनि क्षेत्र में चला गया है। जातक के जन्म समय में गुरू नीच का मकर राशिगत है।

जातक एक बैंक मैनेजर है। अज्ञातदर्शन वर्ष 2, अंक 5 में हैण्ड प्रिंट के आधार पर भविष्यवाणी की गई। 'जून-जुलाई' 78 में निर्बल राजयोग व मानहानि के योग बनते हैं। साथ ही स्थान व धंधे में परिवर्तन होगा। ... परन्तु 1980-81 में वापस राजयोग बनेंगे।" जातक के साथ ऐसी ही एक विचित्र घटना घटित हुई जिससे उपरोक्त भविष्यवाणी शब्द-प्रतिशब्द सही साबित हुई।

चित्र नं. – 148

सूर्य-बली बालक का हाथ

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अनामिका अंगुली पर चक्र, अनामिका की लम्बाई व पुष्टता दृष्टव्य।
2. त्रिवर्षीय बालक के हाथ में भाग्यरेखा, सूर्य रेखा व अन्य रेखाओं की उपस्थिति विशेष द्रष्टव्य है।

प्रतिक्रिया– 'अज्ञातदर्शन वर्ष 2 अंक 5 पर मेरे बच्चे के बारे में बताई गई भूत, भविष्य व वर्तमान की सभी बातें सही निकली'। पृ. 28 पर आपने लिखा–'इसके पीछे एक भाई और होगा' आपकी यह विचित्र भविष्यवाणी भी एकदम सत्य निकली।''

–महेश्वरी

चित्र नं. – 149

प्रसिद्ध उद्योगपति का हाथ

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. पूर्णयव, शुक्लपक्ष का जन्म
2. सूर्य रेखा बुधक्षेत्री जन्म कन्या के सूर्य में। देखें पृष्ठ 74 में 6
3. कनिष्ठिका के मूल में बुधपर्वत पर दो पुत्र रेखा द्रष्टव्य। वास्तव में प्रस्तुत जातक के दो ही पुत्र हैं।
4. प्रस्तुत जातक के प्रिंट के आधार पर 'अज्ञात दर्शन' वर्ष - 2, अंक-6, पृष्ठ-22 पर की गई भविष्यवाणियां शत प्रतिशत सही रहीं।

चित्र नं. – 150
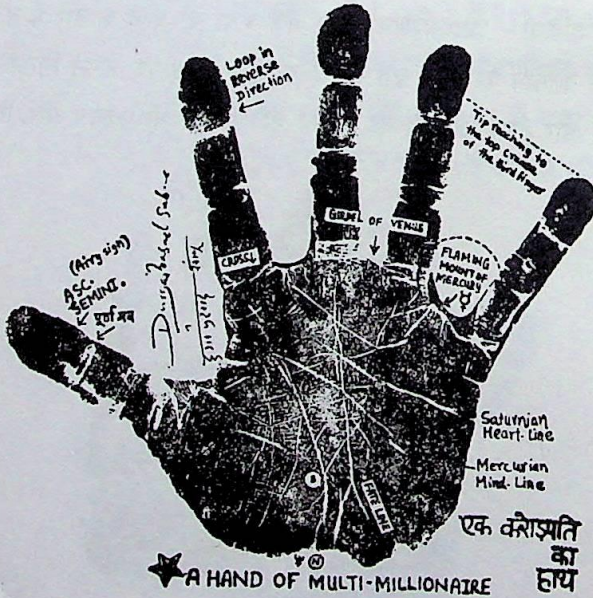
एक राजनैतिक महिला का हाथ

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. गुरू वलय व सूर्य रेखा द्रष्टव्य।
2. अनामिका के मूल में त्रिकोण
3. गुरू पर्वत शनि क्षेत्र में चला गया है अतः जातक के जन्म समय का गुरू नीच राशि गत मकर राशि का है।
4. अंगुष्ठ पर आड़ी रेखाएं द्रष्टव्य

श्रीमती सूर्यकान्ता व्यास भू. पू. अ. जनता पार्टी

चित्र नं. – 151

करोड़पति का हाथ (सुप्र) सोलन

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. सिंह राशि वाली सूर्य रेखा पृ. 74 में 5।
2. गुरू पर्वत पर क्रॉस।
3. मच्छ रेखा एवं अनेक भाग्यरेखाएं A, B, C, F द्रष्टव्य
4. शुक्र-क्षेत्र पर उदित होता हुआ स्वस्तिक।
5.

अंगुष्ठ पर जल चक्र एवं पूर्ण यव जातक का जन्म शुक्ल पक्ष व मीन लग्न में होना बताता है।
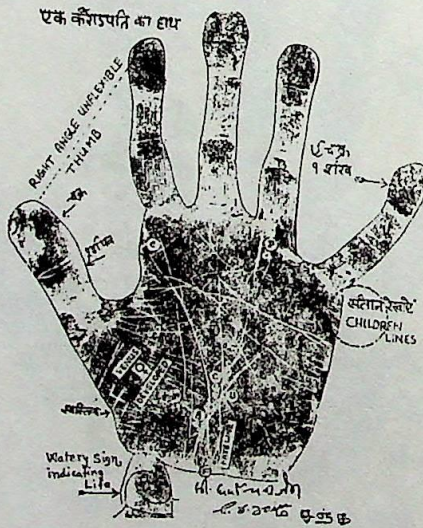
चित्र नं. – 152

भूतपूर्व विधायक श्री माधोसिंह कछवाह

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. अपूर्ण चतुष्कोण गुरू पर्वत पर।
2. अगुंष्ठ पर शंखाकृति में वायु है। वायु में जीवाणु भी स्पष्ट दिखाई देते है। फलतः जातक का जन्म 'मिथुन लग्न' में है।
3. ऐसा ही बवन्डर अनामिका अंगुलि पर भी स्पष्ट है। फलतः मिथुन लग्न में ही मिथुन का सूर्य भी है।
4. जातक के वामहस्त अंगूठे पर मोरदर्शन तथा अनामिका पर मोरपंख के निशान भी स्पष्ट अलग से देखे जा सकते है।

चित्र नं — 153

राज. विधानसभा अध्यक्ष श्री पुनमचन्द विश्नोई

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. सूर्य रेखा बहुशाखी होकर शनिक्षेत्री। देखें पृष्ठ 74 में 11
2. पुष्ट व प्रबल भाग्य रेखा।
3. गुरूपर्वत पर आड़ी रेखा।

अज्ञात दर्शन वर्ष 3 अंक 3 में भविष्यवाणी की गई थी कि कन्या राशि में शनि प्रवेश करते ही इनके भाग्य का सितारा चमकेगा तथा ये विशेष प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में उभरेंगे। फलतः 15 मई 80 को शनि कन्या राशि में मार्गी होकर आया तथा 28 मई 80 को श्री विश्नोई फलौदी क्षेत्र से चुनाव जीते तथा जुलाई 80 में निर्विरोध राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष चुन लिए गये।

चित्र नं.– 154

हास्य सम्राट काका हाथरसी का हाथ

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. बृहस्पति पर्वत पर त्रिकोण व वलय।
2. बहुत रेखाओं का जाल।
3. भाग्यरेखा संघर्षपूर्ण व शनि प्रभावित।
4. बुधांगुली विशेष द्रष्टव्य।

काका हाथरसी व लेखक
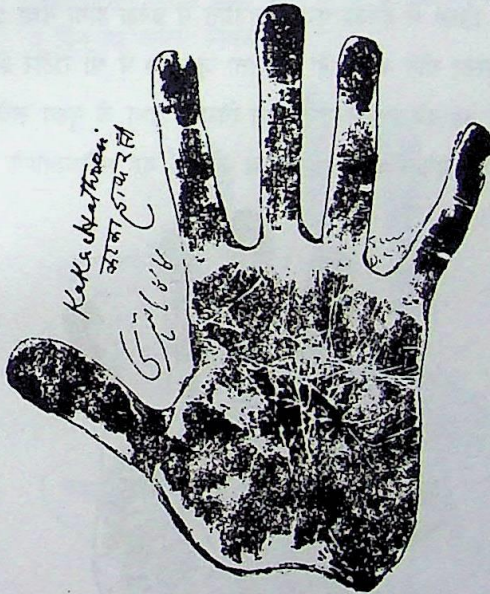
चित्र नं. – 155

भूतपूर्व कानून व शिक्षा मन्त्री श्री खेतसिंह राठौड़

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. स्थूल व गद्देदार हाथ।

2. गोल व विस्तृत अंगूठा, देखें पृ. 108 में 6 व 7।

3. भाग्यरेखा मध्यम।

अज्ञातदर्शन वर्ष 3 अंक 6 में श्री राठौड़ के हैण्डप्रिंट के आधार पर भविष्यवाणी की गई थी। 'सन् 1980 में इनका पुनः राजनीति में प्रवेश होगा तथा 2 से 22 जुलाई के मध्य पुनः मिनिस्टर योग बनता है'। फलतः जून 80 में श्री राठौर शेरगढ़ से चुनाव जीते एवं 4 जुलाई 80 को इन्होंने राजस्थान विधान सभा के मुख्य सचेतक के रूप में शपथ ग्रहण की। इस प्रकार बहुत समय पूर्व की गई यह भविष्यवाणी भी मय तारीख के सत्य सिद्ध हुई।

चित्र नं. – 156

पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री भुट्टो का हैण्डप्रिंट

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. आयु रेखा पर द्वीपाकृति।
2. धनुराशि वाली सूर्य रेखा। देखें पृ. 74 में 9।
3. बृहस्पति का पर्वत स्वस्थान पर उठा हुआ है। श्री भुट्टो के जन्म का बृहस्पति स्वगृही मीन राशि में था।
4. श्री भुट्टो की अस्वाभाविक मृत्यु की भविष्यवाणी मय तारीख के अज्ञातदर्शन वर्ष 2 अंक 4 के पृ. 5 पर कर दी गई थी जिसमें केवल 7 दिन का अन्तर निकला।

चित्र नं. – 157

चमत्कारिक नैष्ठिक ब्रह्मचारी श्री रामऋषि महाराज

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. मेष राशि वाली पुष्ट सूर्य रेखा (देखे पृष्ठ 74 में 1)

2. बृहस्पति पर्वत पर क्रॉस गृहस्थी के हाथ में सुखी विवाह व सुसराल से धनप्राप्ति का संकेतक माना गया है। इसके विपरीत महात्माओं के हाथ में यह चिन्ह तपोबल व ईश्वर अनुकम्पा रूपी धन प्राप्ति का संकेतक चिन्ह माना जाता है।

चित्र नं. – 158

बाल सरस्वती कु. प्रज्ञा भारती

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. सिंह राशि वाली सूर्य रेखा (देखें पृष्ठ 74 में 5)
2. चन्द्र स्थल पर 'वेदी' का चिन्ह।
3. शुक्र पर्वत पर दो आड़ी रेखाएं।
4. आयु रेखा में से उर्ध्वगमन की चेष्टा करती हुई अन्य सूक्ष्म रेखाएं।
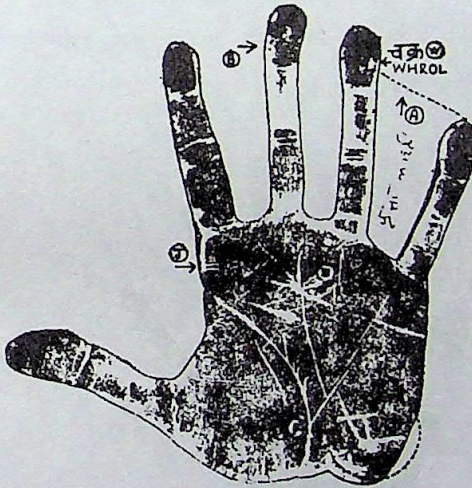
चित्र नं. – 159

श्री रामेश्वर कंसारा (निर्माता का हाथ)

महत्वपूर्ण रेखाएं और चिन्ह

1. तर्जनी छोटी
2. अंगुष्ठ समकोण
3. पुष्ट भाग्यरेखा।
4. बुधांगुली द्रष्टव्य।

प्रतिक्रिया– "अज्ञातदर्शन वर्ष 4, अंक 4 में प्रकाशित हैण्ड प्रिंट के आधार पर मेरी रीडिंग शत प्रतिशत सही निकली तथा मेरी आस्था अज्ञातदर्शन के माध्यम से ज्योतिष के प्रति और अधिक दृढ़तर हो गई।"

- रामेश्वर

चित्र नं. – 160